अथसम्यक्त्तानदीपकाप्रारंभः

सम्यक्ज्ञानदीपका दृष्टांत जैसै दीपक ज्योतीके प्रकासमे कोई इच्छा प्रमाण पाप अपरा
ध काम कुशील वा दान पूजा व्रत शीलादिक करो अर्थात् जेता संसार
और संसारहीसें तन्मयि येह संसारका शुभाशुभ काम क्रिया कर्म और
इनसर्वका फल है सो दीपकज्योतिकूं बी लागने नाही अर दीपक ज्यो
तिसें दीपज्योतीका प्रकास तन्मयि है ताकूंबी जन्म मरणादिक पा
प पुन्य संसार लागते नाही· तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम
ब्रह्म परमातमा सदाकाल जागती ज्योति है सो न मरती न जनमती न छोटी न मोटी·
न नास्ति न अस्ति न इहां न उहां न उसकूं पाप लागे न उसकूं पुन्य लागे· न वा ज्योती बोल
ती न चलती न हलती संसार उस ज्योतिके भीतर बाहिर और मध्य नही· बहुरि तैसेही
सो ज्योति है· सोवी संसारके भीतर बाहिर मध्य नाही· जैसें लवण खंड जल नीरमे मि
ल जाते है तैसें किसीकूं जन्म मरणादिक संसारसें दुःखसे अलग होणेकी इच्छा हो
य वा सदाकाल जागती जोति सैं मिलणेकी इच्छा होय सो प्रथम सतगुरु आज्ञाप्र
माण इस सम्यक्ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तग है ताकूं आदिसे अंतपर्यंत पढो मन
न करो·

प्रस्तावना

इस पुस्तगमै प्रथम येह प्रस्तावना तदनंतर इस पुस्तगकी भूमिका पश्चात् पुस्तग प्रारंभ तदनंतर चित्रहार पुनः चित्र हस्तांगुलीचक्र निर्विकल्प शुक्ल ध्यानका सूचक पश्चात् ज्ञानावर्णिकर्मचित्र तदनंतर दर्शणावर्णिचित्र पश्चात् वेदनी बहुरि मोहनी तदनंतर आयु बहुरि नाम अर गोत्र पश्चात् अंतरायकर्म तदनंतर दृष्टांत समाधान ताहीमै येकप्रश्न आत्मा केसाहै कैसै पाइये इसीके ऊपर दृष्टांत संग्रह तदनंतर दृष्टांन चित्र पश्चात् आकिंचन भावना बहुरि भेदज्ञान करिके ग्रंथयेह समाप्त कीयाहै इसग्रंथमे केवल स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानुभव सूचक शब्द विवर्णहै कोह दृष्टांतमे तर्क करेगा के सूर्यमे प्रकाश कहां सै आय ताकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभव इस ग्रंथ को सार ताको लाभ नहीं हो

यगो जैसे जैन वैस्नु शिवादिक मतवाले परस्पर लडते है वैर विरोध क
रते है मतपक्षमै मग्न हुये मोह ममता माया मानकूं नो छोड ने नाहीं
तैसे इस पुस्तगमै वैर विरोधको बचन नाहीं परंतु जिस अवस्थामै स्व
सम्यक्‌ज्ञान सूतो है ता अवस्थामे तन मन धन बचनादिकसे तन्मयी ये
ह जगत संसार जागतो है बहुरि जिस अवस्थामै येह जगत संसार सू
तो है ता अवस्थामै स्वसम्यक्‌ज्ञान जागतो है येह बिरोध तो अनादि अ
चल है सो तो हमसे तुमसे इससे उससे न मिटे न मिटेगा न मिटाया येह पु
स्तग जैन वैस्नु आदिक सर्वहीके पढणे जोग्य है किसी वैस्नूकों इस पुस्तगके
पढणेसैं भ्रांति होवेके येह पुस्तग जैनोक्त है ताकूं कहता हूं के इस पुस्त-
गकी भूमिकाके प्रथमारंभमै जो मंत्र नमस्कार है ताकूं पढिकरिके भ्रांतिसै
भिन्न होणा स्वभाव सूचक जैन वैस्नु आदिक आचार्यके रचे हुये संस्कृत का
व्यबंध गाथाबंध ग्रंथ बहुत है परंतु येह बी येक छोटीसी अपूर्व वस्तु है जैसे

गुडखायेसै मिष्टानुभव होनाहै तैसै इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्णपढणेसैं पूर्णानुभव होवैगा बिनदेखे बिनसमजे वस्तुकूं औरसै और समजनाहैसो मूर्खहै जिसकूं परमातमाकोनाम प्रियहै उसकूं येहग्रंथ जरूर प्रियहोवैगो इसग्रंथकोसार ऐसा लेणा केसम्यक् ज्ञानमयी गुणीका गुणसैं सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही औगुणताकूं त्यजकरिकै स्वभावज्ञान गुण ग्रहण करणा पश्चात् गुणकूं बी छोडकरिकै गुणीकूं ग्रहण करणा तदनंतर गुणागुणीका भेद कल्पनासै सर्वथा प्रकार भिन्न होयकरि आपका आपमै आपमयी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुसैं सूर्यप्रकाशवत् मिलकरिकै रहणा येही औगुण त्यजणेका स्वभावगुणसै तन्मयी रहणेका इसग्रंथमै कह्याहै १ जैसै दीपकज्योतिका प्रकाशमै कोइ पापकरो और कोइ पुन्यकरो तिस पापपुन्यका फल स्वर्गनरकादिकबी तिस दीपकज्योतिकूं लगते नाही अर पाप पुन्यबी लागते नाही तैसैही

इस सम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तक के पढणे वाचणे वा उपदेस देणेके-
द्वारा किसीकूं आपका आपमें आपमयि स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानु-
भवकी अचल परमावगादता होवेगी तिसकूं पाप पुन्य जन्म मरण सं
सारका स्पर्श न पहूचें उस्कूं कुछबी शुभाशुभ नलागे येह निश्चय
है॥२॥ इतिप्रस्तावना·
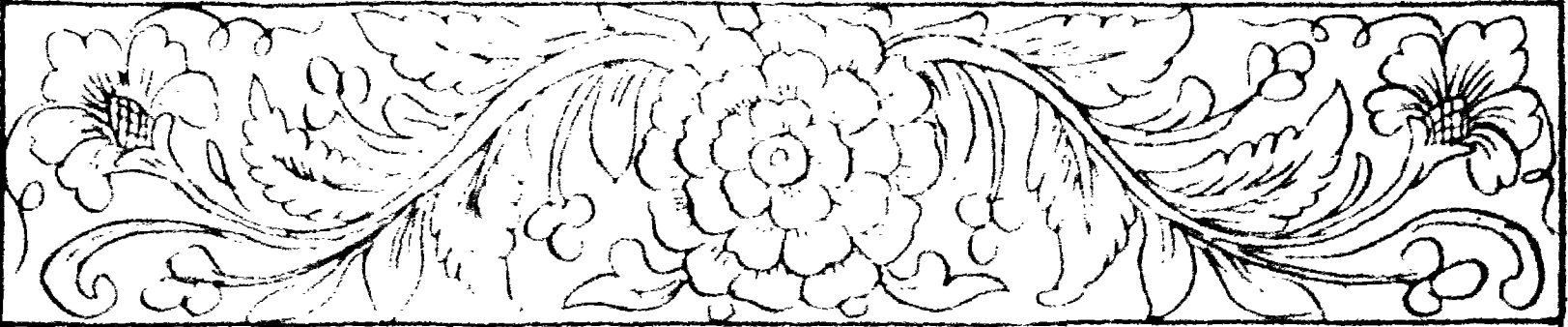
ॐतत्सत्परमब्रह्मपरमात्मनेनमः॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपकाकी भूमिकाप्रारंभः॥ ॥भूमिका हम तुम येह वह येह ४ चारशब्दहै ताके प्रथम निश्चय कोईहै सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्व स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिकाहे जैसे लक्षयोजन प्रमाण येह वलियाकार जंबूद्वीपकी भूमिकाहे तिस भूमि कामे कोईयेक अणुरेणु वा राई डालदे तब अल्पदृष्टिवानकूं येह भाष होवेके इस जंबुद्वीप भूमिमे नहीजाणणामे आवेके वाहा येक अणु रेणु राई किदर कहांपडीहे तैसेंही येह ३४३ तीनसें तेतालीस राजू प्र माण तीनलोक पुरुषाकारहै सो बहुरि अलोकाकाशहे सो कैसोहे अलो काकाशजाकेभीतर येह तीनलोक ब्रह्मांडहे परंतु ऐसा अनंत ब्रह्मांड औरभी होयतो जिस अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् होयके समायजा वे ऐसा येह लोकालोक वा अनंत ब्रह्मांड तिस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य

सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिकामै येक अणरेणु वत् नही जाणै
किदर कहां पडे है वास्ते निश्चय समजो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहे सो निश्चय भूमिकाहे जैसे सूर्यका प्रकास पृ
थ्वीकेऊपर तन्मयीवत् सर्वत्र प्रसरण होरह्याहे तामै येक अणरेणु न
हीजाणै किदर कहां पडे है तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि सूर्यका प्रकासमै येह लोकालोक अणुरेणवत् नहीं जाणै किद
र कहां पडेहै सोही त्रैलोकसार ग्रंथमे श्रीमत् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ति
कहीहे छीयालीस ४६ चालीस ४० अोर ३४ चोतीस २८ अठाईस २२
बाईस १६ सोला १० दश १९ उन्नीस सादेबनलाई ३७॥ सादेसैतीस
१६॥ सादेसोले १६॥ सादेसोलेभणी आगैदोदोहीन १४॥ ।१२॥ अंत
११ ग्यारे राजूगणी ड्रम ७ साननर्क ८ जुगल ऊपर १६ सो लेथानमै राजू
३४३ तेतालीसतीनसै धनाकारकीत्योज्ञानमे १ अवहे मुमुक्षजनम

ज्ञानमिंनीहो श्रवणकरो जैसैयेह लोकालोकहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य-
सम्यग्ज्ञानमयि भूमिका मेहै परंतु सम्यक् ज्ञानमयि भूमिकासै तन्मयीना
हो तैसैही मै तूं यह वह येह ४ चारवो तन्मयी नाही वास्ते श्रवणहोणोसो-
मैक्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास बणिकरिके येह पुस्तग सम्यक् ज्ञानदीपका
इस नामकी बणाईहै इसपुस्तगमै भूमिकासहित द्वादशास्थलभेदहै तामै
प्रथमतो मिथ्याभ्रमजाल संसारसै सर्वथाप्रकार भिन्न होणेके अर्थ येह
भूमिका येकाग्रह मनलगाय करिके पढो १ बहुरिपश्चात् चित्रद्वार देखो-
अर ताका विवर्ण पढो द्वारहीकूं आपना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तु मति समजो मतिमान् मतिकहो २ बहुरि तीजा स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यवस्तु स्वभावमे जैसाहै तै
साहै स्वभावमै तर्ककोवा संकल्प विकल्पको अभावहै ताहीके प्रकाशमे ति
सहीकूं परस्पर विरुद्ध चित्र हस्तांगुली सूचकहै मानैहै कहतेहै सो सम्यक्

ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमें तन्मयि कदापि कोई प्रकारवी नसंभवे ३ बहु
रिचतुर्थ ज्ञानावर्णिकर्मचित्रहै ताको अनुभव ऐसो समजणा जैसैसूर्य
के आडा बादल समयपाय स्वयमेवही आतेहैजातेहै तैसेही स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके मतिश्रुति अवधि मनपर्ययआ
दि अजीव वस्तु आवैजावै अर्थात् ज्ञानकूं आवर्ण करै सोही ज्ञानावर्णि
कर्म ४ पंचमभेद दर्शणावर्णिकर्म जैसे देखणेकी साक्तिताहै परंतु दर्श
णावर्णि जाणिको कर्म देखणे नहीदेताहै ५ षष्ठमस्थल कर्म बेदनीहै ता
का दोय भागहै साता बहुरि असाता जैसे तरवारकी लगी मिश्रीकी चासणी
ताकूं कोई पुरुष जिव्हासे चाटतेहै तन्समय किंचित् मिष्टस्वाद् भाष हो॰
नाहै विशेष जिव्हा खंडन दुःखभाष होनाहै इसदुःख सुखसे भिन्नस्वभा
वहोणा गुरुपदेशात् ६ सप्तमस्थल मोहनीकर्म जैसे मदिरावसात् स्व॰
सोधनकी खबर नाही तैसेही मोहनीकर्मवसात् आपकूं स्वस्वरूप स्वानुभ

वगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप न समजता है न मानता है और सें-
और आपकूं समजत है मानत है ७ अष्टमस्थल आयुकर्म है जैसे बेडी
सें बंध्यो पुरुष आपकूं दुःखी समजत है मानत है तैसे ही आयूकर्म ब-
सात् स्वभावद्रष्टिरहित जीव है सो आपकूं दुःखी मानत है समजत है अर्था
त् स्वभावद्रष्टिरहित जीवकूं येह निश्चय नहीं के आकासवत् अमूर्त्ति निरा
कार घट आयु मठायूवत् में आयुकर्म में रुकरत्यो हूं व्यवहार नयात् ८
नवमस्थल नामकर्म स्वभावद्रष्टि रहित है सो नाम ही कूं अपणा स्वस्वरू
प स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाववस्तु समजत है मानत है मिथ्या
द्रष्टीकूं येह निश्चय नहीं के जन्म मरण नामादिक शरीरका धर्म है ज्ञानवस्तु
का येह निजधर्म नाही ९ दशमस्थल गोत्रकर्म ताका द्रष्टांत जैसे कुंभका
र छोटा मोटा माटीका बर्तन कर्ता है तैसे ही स्वभावद्दष्टीमे न संभवे येह नी
च गोत्र उच्च गोत्र सो ही विभाव द्दष्टीमे जीव नीच गोत्र उच्च गोत्र कर्मको कर्ता-

है तोबी नीचगोत्र ऊंचगोत्रसै तन्मायि होय नही कर्ताहै १० एकादशम-
स्थल अंतरायकर्म ताकादृष्टांन जैसै राजाभंडारीकूं कहीके इसकूंसह
स्वरुपियादे परंतु भंडारी नहींदेताहै तैसैही स्वभावदृष्टीरहितजीवइ-
च्छातो कर्ताहैके मै दान देऊ लाभलेऊ भोगभोगू उपभोगभोगू पराक्रमक
र्म बलवीर्य प्रगट करूं इत्यादिक इच्छातो कर्ताहै परंतु अंतरायकर्म इ-
च्छानुसार पूर्णता नही होणे देताहै ऐसा अंतरायविघ्न श्रीसत्‌गुरूके चर
णकी सरण होणेसे मिटैगा ११ द्वादशस्थल मै येह हैके किसीकूं गुरूप
देशात् स्वस्वरूपको स्वानुभव हुये पश्चात् बी येह भ्रांति होतीहैके मै अजर
अमर अविनासी अचलज्ञानज्योति नहीं अथवा हूं तो कैसेहूं मेरा अर स-
दाकाल जागतीजोति ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टीकायेक पणाकैसेहै तथा कोण
सा पुन्यस्कंभकार्य करणेसे मेरा अर परमातमाका अचलमेल होवैगा मतस्सा
मै मरताहूं जन्मताहूं दुःखी रोगी सोगी लोभी क्रोधी कामीहूं अर ज्ञानम-

यि परमात्मा तो नमरता नजनमता नरोगी नसोगी नलोभी नमोही नक्रोधी न कामी फेर उनका मेरा मेल कैसा कैसे है कैसे होवैगा इत्यादिक भ्रांति द्वारा कोईजीव आपकूं निस सिद्ध परमेशी ज्ञानमयिसें भिन्न समजता है मानता है कहता है ताकी येकता तन्मयिताकी सिद्धिके अवगाढताके दृढना के अर्थ अनेक दृष्टांत द्वारा समाधान देउंगा सोही कोई मुमुक्ष इससम्यक्ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसें अंतपर्यंत भलेभावसे पढकरिके आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं प्रथमतो अशुभजो पाप अपराध हिंसाचोरी काम क्रोध लोभ मोह कषायादिकसे सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके पश्चात् दान पूजा व्रत शील जप तप ध्यानादिक शुभकर्म क्रिया है ताकूंबी सुवर्णश्रृंकलावत् बंधदुःखको कारण समज करिके आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान स्वभाव वस्तू कूं दान पूजादिक शुभकर्म क्रियासे सर्वथा प्रकार भिन्नस-

मजकरिके पश्चात् शब्दसैंबी आपकूं भिन्नसमज करिके आगे अनिर्व॰
चनय आपका आपमे आपमयि जैसाका तैसा निरंतरजैसाहै तैसासो
का सोही आदि अंत पूरण स्वभावसंयुक्त रहणा बहुरि ऊपर हमलि॰
खीहैके शुभ अशुभ शुद्ध येह तीनहै इसतीनूंकी विस्तीर्णता पूर्णता॰
प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानसैं लेकरिके अंतका चतुर्दशगुणस्थानजो अ
जोग केवली ताहां पर्यंत समजणा आगे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क्ज्ञानमयि स्वभावमें येह शुभअशुभ बहुरि शुद्धादिक संकल्प विकल्प
तर्क वितर्क विधि निषेध कदापि नसंभवै अर्थात् स्वभावमे तर्कको अभा
वहै॰ हे मुमुक्षजीवमंडलीहो चेतकरो तुम कहांसे आयेहो कहांजावो॰
गे कहांतुमहो क्याहो कैसाहो कोणतुमाराहै किसका तुमहो बहुरिये
ह शुभाशुभ शुद्ध येहतीनसे तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि मतिसमजो मतिमानू मतिकहो येह

अशुभादिक तीनू सम्यक् ज्ञान स्वभावमैं त्याजहीहै जिस भूमिमै येह लो
कालोक अणुरेणुवत् नही जाणै किदर कहां पडे है चलाचल रहित ऐसी
भूमिकासे सर्वथा प्रकार भिन्न तुमारा तुमसैं सदाकाल तन्मयिस्वस्वरूप
स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वरूप समजो मनके द्वारा-
मानू जैसैं दीपककूं देखणेसैं दीपक की निश्चयता अवगाढता अचल-
ता होतीहै तैसेही इस सम्यक् ज्ञान दीपकाके पढणे वाचणेसे जरूर
निश्चय ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तकी प्राप्ति होवैगी तथा सम्यक्तकी प्राप्तकी प्रा
प्ति निश्चयता अवगाढता अचलता होवैगी देखो श्रवणकरो जैनाचार्य
जैन ग्रंथमें कही हैके सम्यक्त बिना जपतप नेम व्रत शील दान पूजादि
क शुभकर्म शुभभावादिक वृथा तुषखंडनतहै बहुरि वेदभूमें बी कही
हैके ब्रह्मजानाति ब्राह्मणा अर्थात् ब्रह्मकूंतो जाणते नाही अर संध्या
तर्पण गायत्री मंत्रादिक का पढणा आदि साधु सन्यासी भेषधारणाप

र्यंन वृथाहै सर्वसारकोसार सदा काल ज्ञानमयि जागती ज्योतिका लाभ
की जिस्कूं इच्छा होय तथाजन्म मरणादिक बज्र दुःखसै सर्वथाप्रकार
भिन्नहोणेकी जिसकूं इच्छाहोय सो प्रथमगुरु आज्ञा लेकरिकै इसपु
स्तगकूं आदिसै अंतपर्यंत पढो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
यि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिके अर्थ हमइस पुस्तगमै अशुभ शु
भ शुद्ध येहतीनका निषेध लिखाहै सोतो पुद्गल द्रव्य धर्मद्रव्य॰अधर्म॰
द्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य येह पांच द्रव्यसैं तन्मयि अस्ति समजणा
बहुरि कोई अशुभसैं येकता आपका स्वरूपज्ञानकी मानताहै समज॰
ताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी बहुरि अशुभकूं खोटा बुरासमजकरि
कै जपतपव्रत शील दानपूजादिक शुभसैं आपकास्वस्वरूप सम्यक्ज्ञा
न स्वभावकी येकता समजताहै माननाहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी है॰
बहुरि शुभअशुभदोहु कूं अर अपणा स्वभाव सम्यक् ज्ञानकूं येकतन्म

थिसमजताहै सोबीमिथ्यादृष्टिहै बहुरि किसीकूं येह विचारभावहैके शुभाशुभसैभिन्नमैशुद्ध हूं ऐसी विकल्पसै आपकास्वस्वरूप स्वानुभवग म्यसम्यक्ज्ञानमयिस्वभावकूं येक तन्मयि समजताहै माननाहै कहनाहै सोबीस्वभाव पूर्णदृष्टिरहित समजणा स्वभाव सम्यक्ज्ञान दृष्टि वान्को ई पंडित होगो सोतोइस पुस्तगकी अशुद्धता पुनरुक्तिदोष कदाचित् कोई प्रकारबी ग्रहण नहि करैगा बहुरि न्याय व्याकर्ण तर्क छंद कोसअ लंकारादि शब्दशास्त्रसै आपणा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभावकूं अग्नि उष्ण तावत् एकतन्मयि समजताहै माननाहै कहताहै ऐसा पंडि तजरूर इसग्रंथकी अशुद्धता पुनरुक्ति दोष ग्रहण करैगा बहुरि ज्यो स्वयंसिद्ध परमातमा अष्ट करम तथाद्रव्यकर्म भावकर्मनो कर्मरहित अखंड अविनाशि अचलसै सूर्य प्रकाशवत् एकतन्मयि बस्तुहै उसीब स्तुका लाभ वा प्राप्तकी प्राप्ति होणे जोग थी सोहमकूं हुई ॥ ॥दूहा

होणीथीसो होगई अबहोणैकीनाहि॥ धर्मदासक्षुल्लककहै दु-
सीजगनके मांहि॥१॥ अर्थात् जैसैदीपकसै दीपकचेतना आयाहै
तैसैही गुरुउपदेशद्वारा ज्ञानहोना आयाहै एबातो अनादिहै सद्भू
त व्यवहारमे ज्योकोऊ गुरुके वचन द्वारा स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक
ज्ञानमयि स्वभाव बस्तुकी माप्तकी प्राप्तिहुये पश्चात् ऐसा अपूर्व उपगार
को लोपकरिके गुरुको नाम प्रसिद्ध नही कर्ताहै गुरुकी कीर्ति बडाई
जस गुणानुवाद नही कर्ताहै सो म्हापातगी पापी अपराधि मिथ्यादृ
ष्टि हत्यारोहै अर्थात् गुरुपदको कदाचित कोई प्रकारवी गुप्तररव-
णा श्रेष्ठनही सोही मैकेद्वारामे सत्य कहताहूं मेका सरीरको नाम क्षुल्ल
क ब्रह्मचारी धर्मदासहै वर्तमान कालमें सोहीमे कहताहूं श्रवण क-
रो मालवादेश मुकाम झालरापाटणमे नग्नदिगंबर श्रीमत् सिद्धश्रेण-
मुनितोमेंकूं दीक्षा सीक्षा ब्रत नेम व्यवहार भेषका दाता गुरुहै बहुरि ब-

राडदेश मुकाम कारंजा पट्टाधीश श्रीमत् देवेंद्र कीर्तिजी भट्टारकजी का
उपदेश द्वारा मेरे कूं स्वस्वरूप स्वानुभव गम्यसम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव ब-
स्तु की प्राप्तकी प्राप्ति देणेवाले श्रीसत्गुरु देवेंद्रकीर्तिजी है वास्ते मै मु
क्त हूं बंधमोक्षसैसर्वथाप्रकार वर्जित सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव बस्तु हूं
सोही स्वभाव वस्तु शब्द बचन द्वारा श्री मत् देवेंद्र कीर्ति तत्पट्टेरत नकीर्ति
जीके मैं भेट अर्पण करचुक्या हूं बहुरि खानदेश मुकाम पारोला मै सेठ
नानासहा तत्पुत्रपीतांबर दासजी आदि बहुतसे स्त्रीपुरुष कूं अर आ-
रा पटणा छपरा बाढ फलटण झालरापाटण बऱ्हानपुर आदि बहुतसे
सहर ग्रामोंमे बहुतसे २ स्त्रीपुरुषांकूं स्वभावसम्यक् ज्ञानको उपदेश दे
चुक्योहूं ऊपर लिखेहुये सर्व व्यवहार गर्भित समजणा बहुरि सर्वजीवरा
सि जिसस्वभावसै तन्मयिहै उसही स्वभावताकी स्वभावना सर्वहीजी-
वराशिकूं होहू ऐसी मेरा अंतः करणमे इच्छा हुई है तिस इच्छाकासमा

धानके अर्थ येह पुस्तग बणाई है बणाय करिकै पांचसै पुस्तग येह छपा
ई है ५०० पांचसै पुस्तग प्रसूत होणेकी सहायताके अर्थ रूपीया येकसौ
१०० तो जिल्हा स्याहाबाद मुकाम आरामे मखनलालजीकी कोठीमैबा
बू बिमलदासजीकी बिधवा सोकीसोही अर हमारी चेली द्रोपतीदेवी
नै दीया है बिशेष खर्चाके अर्थ ज्योज्यो मेरा वचनोपदेश द्वारास्वस्वरूप
स्वानुभव गम्य सम्यक्‌ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु होणेजोग होचुके ते सदा
काल अखंड अविनासी चिरंजीव रहो इति सम्यक्‌ज्ञानदीपकाकी
प्रथम भूमिका समाप्तः ॥१॥ ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ जिनेंद्र कोण है
॥ उत्तर ॥ ॥ ज्ञानभानु जिनेंद्र है प्रश्न जिनेंद्रकी पूजा करणा के नाही
करणा उत्तर पूजा करणा परंतु सम्यक्‌ज्ञान वस्तु है सोही जिनेंद्र है अ
ज्ञान वस्तुकूं कोई जिनेंद्र मानता है समजता है कहता है सो मिथ्यादृष्टी
है प्रश्न ज्ञान कोण है उत्तर तनमनधन वचनकूं बहुरि तनमनधन

वचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मकूं अनादहीसें सहज स्वभा-
वहीसें जाणनाहै सोही ज्ञानहै प्रश्न मंदिरमैं पद्मासण षड्गासणधा
तु पाषाणकी मूर्तिहै सारुम वहुरि जलचंदनादिक अष्टद्रव्य मंदिर आदि
येह सर्व ज्ञानहै के अज्ञानहै उत्तर मंदिर प्रतिमादिक अज्ञानहै इनस-
र्वकूं केवल जाणनाहै सोही ज्ञानहै प्रश्न केवलज्ञान है सो शुभाशुभ-
दान पूजा क्रिया कर्म कर्ताहै के नाही कर्ताहै उत्तर केवल ज्ञानहै सो किंचि
तमात्रवी शुभाशुभ दान पूजा क्रिया कर्म नही कर्ताहै केवल जाणनाही
है प्रश्न तो येह शुभाशुभ कोण कर्ताहै निश्चय नयात् जिसका जोही
कर्ताहै व्यवहार नयात् शुभाशुभ कर्मसें अनत् स्वरूप अनन्मायि होय-
करिके ज्ञान कर्ताहै १ क्या करूं कहतां लाजसरम उपजतीहै तथापिक
हताहूं जैसे सूर्यसें कदापि प्रकास नभिन्न हुवो नहोवेगो नभिन्नहै तैसें
जिससें देखणा जाणना कदापि भिन्ननाही नभिन्न होवेगा नभिन्नहै ऐ

सो केवल ज्ञानमयि परमातमासे येक नेत्र काटि मकारामात्रवा समय कालमात्रवी कोई जीवभिन्न रहताहे सोजीव संसारी मिथ्याद्रष्टी पात गीहे जैसे सूर्यसे अंधकार अलगहे तदवत् ज्ञानस्वरूपि जिनेंद्रसे आ पकूं अलग समज करिके फेर धातु पाषाणकी देवमूर्तिका दर्शण पूजादि क कर्ताहे सोमूर्ख मिथ्याद्रष्टीहे बहुरि जैसे सूर्यसें प्रकास तन्मयिहे तैसे ज्ञानस्वरूपी जिनेंद्रसें गुरूपदेशात् तन्मयि होय करिके फेर धातुपा षाण की मूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ताहे सोसम्यक्द्रष्टी धन्यवादयोग हे १ हेमेरामंत्रीहो दानपूजा व्रत शील जप तपनेमादिक शुभकर्म क्रिया भावकरो बहुरिअशुभजो पाप अपराध झूठ चोरी काम कुशील वी करो अ र्थात् शुभाशुभ काम कर्म क्रिया इच्छा प्रमाण भलाई करो परंतु समज॰ करिके करो लौकीक वचन प्रसिद्धहे क्याके देखोजी तुम समजकरिके काम कार्य कर्नातो नुकसाण विगाड किसवास्ते होता बिना समजसे ये

हु काम कार्य तुम कीया इस वास्तै नुकसाण हुवा बिना समज तुम पूर्वे अ
नंतबेर प्रतक्ष समोसरणमै केवली भगवानकी मोतीके अक्षत रत्नदीप
कल्पवृक्ष पुष्पादिकसै पूजा करी बहुरि प्रतक्ष दिव्यध्वनी श्रवण करी
बहुरि मुनीव्रतशील अनंतबेर धारण कीये अर काम क्रोध लोभादिक
वी अनंतकालसै करते चले आये सो सर्व शुभाशुभ बिनसमजसे करते
चले आये हो देखो बिनसमजसैं कंठमै मोतीकी मालाहै अर भंडारमे खो
जताहे बिनसमजसैही कस्तूरयो मृग कस्तूरीकूं खोजताहै बिनसमज
सैही आपहीकी छायाकूं भूत मानताहै बिन समजसैही नदीका जल
कूं शीघ्रवेगसैं वहता देख करिके आपहीकूं बहता मानताहै बिनसमज
सैही काक्षमे छोकरो पुत्र अर गांव देसमे खोजताहै बिनसमजसे हीसं
सारी मिथ्याती विषयभोग काम कुशील तो छोडते नाही अर दान-
पूजा व्रतशीलादिक छोड करिके आपकूं ज्ञानी मानतेहै कहतेहै समज

तेहै बहुरि बिन समझसैं ही सदाकाल जागती ज्योति स्वस्वरूप स्वानु
भव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुका कबि कदाचित् तन्मयि तातो
आपसें हुये नाहीं और मूर्ख व्रत जप तप शील दान पूजादिक कर्त्ते है सो
घृत के अर्थ जलकूं मथन वृथाही कर्त्ते है वास्ते सर्व शुभाशुभ व्यवहार
क्रियाकर्नेके बहुरि जन्म मरण नाम जाति कुल घात न मन धन वचनादि
क के प्रथम समझ होणा श्रेष्ठ है १

॥ इति भूमिका समाप्त ॥

अथ सम्यक्ज्ञानदीपिकाप्रारंभः

ॐनमः ॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपकाप्रारंभः॥ ॥तहाप्रथमस्व
स्वरूपस्वानुभवसूचक श्लोक॥ ॥महावीरंनमस्कृत्य केवलज्ञान-
भास्करं॥ सम्यक्ज्ञानदीपस्य मयाकिंचित् प्रकाश्यते ॥१॥ ॥स्कं
दरिछंद॥ ॥अथअनादिअनंतजिनेश्वरम् सरससुंदरबोधमयि
स्वरं॥परम मंगलदायकहैसही नमतहूंइसकारणसुभमही॥१॥ ॥
अथवचनिका॥ ॥मूलवस्तुदोयहै ज्ञान अज्ञान तामेजैसे सूर्यमे
प्रकाशगुणहै तैसे जिसवस्तुमे देखणेजाणनेका गुण स्वभावहीसे है
सोवस्तुतो केवल ज्ञानहै बहुरि जिसवस्तुमे स्वभावहीसे देखणेजा
णनेका गुण नाहीं सोही अज्ञान वस्तुहै येह तन मनधन वचन शब्दा
दिक अज्ञानसे ऐसा मिलेहै जैसे काजलसे कलंक मिलरह्योहै बहुरि
जैसे केवलि ज्ञानमे देखणे जाणनेका गुणहै तैसे शब्दमे कहणेका-
गुणहै बहुरि ज्ञानवस्तु आपापरकू देखतहै जाणतहै सो आपहीआ

पकूंनो आपसे आप तन्मयि हो करिके जाणतहै बहुरि ज्ञानसे सर्वथा
प्रकार भिन्नवस्तुहै ताकूं ज्ञानजाणताहै परंतु जड अज्ञान मयि वस्तु
से तनमयि होकरिके नही जाणतहै बहुरि कहणेका गुण अज्ञान-
मयि शब्दहै तामेहै सो शब्द स्वपरकी वार्ता कहताहै परंतु स्वपरकूंजा
णतानाही स्वसेंतो तन्मयि होकरिके कहताहै बहुरि परसै अतन्मयि
हो करिके कहताहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव
वस्तुहै ताका अर शब्दादिक अज्ञानवस्तुहै ताका परस्पर सूर्य अंधका
रकासा अंतरभेद मूलहीसेहै तोबी शब्दहै सो परमात्मा ज्ञानमयि-
की वार्ता कहताहै॥ ॥ अथप्रश्न ॥ ॥ शब्द अज्ञान वस्तुहै सो स-
म्यक् ज्ञानमयि परमात्माकूं जाणत नाहीं फेर सम्यक् ज्ञान मयि परमा
त्माकी वार्ता कैसे कहताहै अथउत्तर जैसे कोई चंद्र दर्शणकोलो
भी किसीगुरू संगनसै नम्रता पूर्वक पूछी के चंद्र कहाहे तब गुरुकही

के बोचंद्रमा मेरी अंगुलीकेऊपर इहांबिचार करो शब्दांगुलीके अर चंद्र
के जेता अंतर भेदहै तेताही भेद सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माके अर शब्द
के समजणा इसप्रकार कहणेकागुणतो शब्दमैंहै बहुरि जाणवाका
गुण केवल ज्ञानमैंहै इति जैसैंजिस नगरमैं अज्ञानीराजाहै ताकेऊ
पर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जिस नगरमैं केवल ज्ञानी रा
जाहै ताकेऊपर कोईबी अधिष्टानाराजाहोणा नसंभवै अब हे केव
ल ज्ञान स्वरूपी सूर्य तूं मूलस्वभावहीसै जैसा को तैसो जैसोहै तैसो
सोको सोहीहै तूं केवल ज्ञान मायि सूर्यहीहै तुं नस्फ णताही अवण
करि तेरे करम भरम पुद्गलका बिकार काला पीला लाल धौला हर्या
अनेक पाप पुन्यरूपी बादल बीजली आदि आडा आवै जावै तोबी·
तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमायि सूर्यही समजमान तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमयिसू
र्य नसमजैगो नमानैगो तो तेरेकूं तेराही घात करणेका पाप लागैगो आ

पधाती महापापी॥ ॥इतिप्रसिद्धवचन॥ ॥अथमंत्र॥ ॥ह्रांह्रींह्रें
मैकेवलज्ञानमयिसूर्यतो निश्चयहूं परंतु मैतनमनधन बचनादिकसेंऐ
साभिन्नहूं जैसा अंधारासै सूर्यभिन्नहे तैसा फेरमै मेरेकूं केवल ज्ञानम
यिसूर्यकोंण द्वाराहोकरिकेसमजूं मानूं सोकहो अथउत्तर नरूपण
नाहीं श्रवणकारि आत्मख्याती ग्रंथमै कुंदकुंदाचार्य ग्रंथके प्रथमारंभ
मैहीकहीहै जीवद्वार अजीवद्वार आश्रवद्वार संबर द्वार निर्जराद्वार
बंधद्वार मोक्षद्वार पापद्वार पुन्यद्वार सर्वविशुद्धीद्वार कर्त्ताद्वार कर्मद्वा
र येहद्वादशद्वारा तूंतेरेकूं निश्चयसमज तथा हम तुमयेह वह येह ४
च्यारद्वारा द्वार० होयकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज या तन मन बचन
धनादिकके द्वारातूं तेरेकूं निश्चय समज तथा पुद्गलतो आकार अरध
र्मोधर्म आकाशकालहैसोनीराकार वास्ते आकार नीराकारके द्वारा हो·
करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज है अर नही येह दोय द्वारा होकरिकै तूंते

रेकूं निश्चय समज निश्चय व्यवहारके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय
समज वा नाम स्थापना द्रव्य भाव येह ४ च्यारके द्वारा होकरिकै तूं ते
रेकूं निश्चय समज तथा जन्म मरण सुख दुःख शुभाशुभ विचारके
द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा संकल्प विकल्प भावाभा
वके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज १ वेद पुराण शास्त्र सूत्र
सिद्धांतके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा द्रव्य कर्म भाव
कर्म नो कर्मना द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज पूर्वोक्त समजसे
विशेष समज गुरुके वचन द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज और श्रवण करि
जैसे सूर्य प्रकाश येक मयिहै तैसे पूर्वोक्त द्वारकूं और तूं तेरेकूं येक मयि
समजेगो मानैगो तो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होवैगो औरबी
ज्योकोई द्वारहीकूं आपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्व
भाव समजेगो मानेगो वो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होरहैगो

जैसें येक बडे भारी नगरके अनेक द्वार सुंदर हैं इच्छा आवै कोई द्वारमें हो करिके सहरमें प्रवेश करो प्रवेश करणे वालो नगरमें पूंगजायेंगो विचार करणा सहरके भीतर महल मंदिर मकानहैं ताके द्वार सहस्त्र लक्षादि हैं अर सहरमें प्रवेश करणे वाला का शरीरमें दश द्वारतो प्रसिद्धहीहै विशेष रोमरोम प्रति छिद्र हैं वास्तै सहरमें प्रवेश करणे वालेके शरीरही मैलक्ष कोटादि द्वार हैं वास्तै पूर्वोक्त विचार द्वारा आदि अनंत संसार अपार संसारके द्वारा होकरिकें अपणा आपमें आपमायि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु कूं अर पूर्वोक्त द्वारकूं अमिउष्णतावत् सूर्य प्रकाशवत् येक मति समझो मतिमानूं जैसैं राज द्वार ऐसा कहणेसैं येह भाव भाषहोताहैके जिस द्वारके भीतर होकरिकै राजा आतेहैं जातेहैं परंतु ऐसैं न समजणा के राजाहै सोही द्वारहै अर द्वारहै सोहीराजाहै केवल कहणे मात्र राज द्वारहै अर्थात् द्वारहैसो द्वारहीहै अर राजा

हैसो राजाहीहै ऐसैही सर्वद्वार द्वारप्रति समझ लेएगा जिसकाजोही द्वार-
है क्यूंके सूर्यके देखणेसे सूर्यकी खबर होतीहै तैसैही जिसकूं देखणेसे
जिसहीकी खबर होतीहै येसर्व आगे होएगीसो युगती स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्रातकी प्राप्ति के अर्थ हम क-
रिहै औरबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु सूचक
युक्ति आगे कहैगे तुम इस द्वारमे होकरिके आवो जावो अथवा अमुका द्वार-
मे होकरिके आवो जावो मोक्ष द्वार जीवद्वार अजीवद्वार ध्यानद्वार इत्यादि-
क द्वारमे होकरिके आवो जावो यदि नहि आवो नही जावो तो तुम तुमारा स्व-
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावमे जैसाका तैसा जैसाहोतै
सासोका सोहीहो सोही रहो हे सूर्य तूं तेरा प्रकाशगुण स्वभावकूं त्यागकरि
के अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधारावन मति होएगा नहोएगा तैसैही हे केव
लज्ञानमयि सूर्य तूं तेरा गुण स्वभावसे निरंतर सदोदयहै सोको सोही रहएगा

कदाचित् कोईप्रकारवी तूं तन मन धन वचन शब्दादिक या पुद्गल धर्मा
धर्माकाश कालादिक घन मतिहोएगा नहोएगा १ इतिचित्रद्वार विवरण
युक्तिसंपूर्ण दोहू हस्तांगुली चित्रद्वारा परस्पर उपदेस रूप स्वचहै ता
को अनुभव ऐसैं लेएगा यहयेक द्वाराहै तामें येक कहताहै इस द्वारमे होक
रिकै तुम इदरकी तरफ जावोगा तबतो तुमकूं जीव चेतन ज्ञानका लाभहो
गा दूसरा कहताहै इस द्वारमे होकरिकै तुम इदरकी तरफ जावोगातो तुम कूं
अजीव अचेतन अज्ञान जडका लाभहोवैगा यदितुमहमारे कहणेसै जीवाजी
वज्ञानाज्ञानका लक्षलक्षणजात्यादिक परस्पराभिन्नाभिन्नसमज करिकै दुवि
धाहै तताकी विकल्पत्याग करिकै दोहूतरफ नहीजावोगेतो तुम तुमारास्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वभावमे स्वभावहीसै जैसाका तैसा जै
साहै सोकासोही जहांके तहां चलाचलरहित रहोगे १

अथचित्रद्वारचित्र.
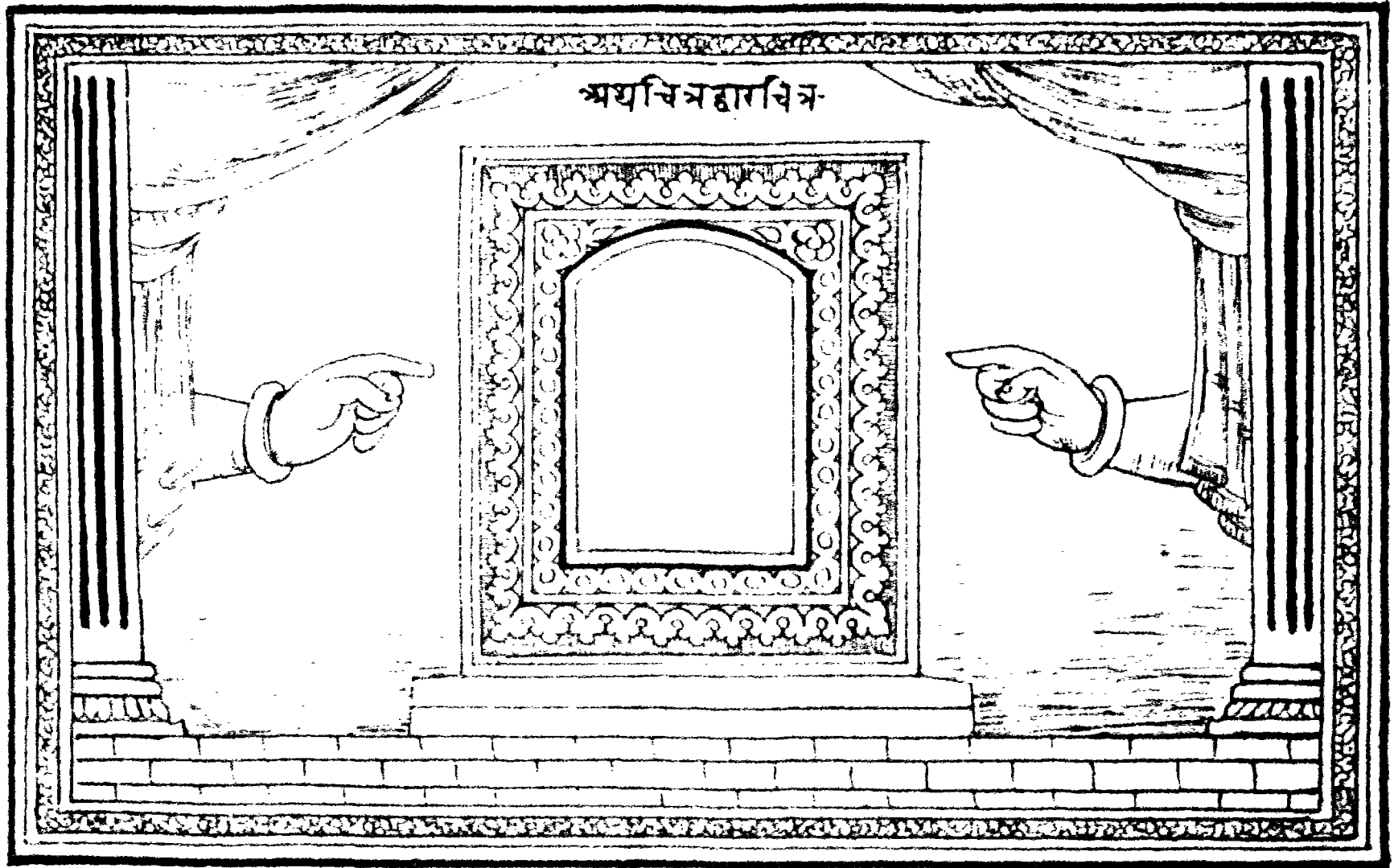
ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्णावचनसहितलिख्यते॥ ॥दोहा ॥ ॥सम्यक्ज्ञानस्वभावमै लीनभयेजिनराज धर्मदासक्षुल्लककरै नत्वानिसिदिनसाज॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ मूलवस्तु२ दोयहै एकज्ञान दूसरो अज्ञान बहुरि अज्ञान वस्तु पांचहै ५ पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल येहपांच द्रव्यहै तामै पुद्गलतो मूर्ति आकारहै बाकी ४ च्यार द्रव्य अमूर्ति निराकारहै इनमे ज्ञानगुण नाही जीवबी अमूर्ति निराकारहै परंतु जैसे सूर्यमे प्रकाशगुणहै तैसे जीवमे ज्ञानगुणहै वास्तै जीव वस्तु उत्तमहै परंतु जोजीव गुरुपदेशात् अपणा आपमे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु जाणगये सोतो उत्तमहै पूज्यहै मान्यहै धन्यवादयोगहै बहुरि जैसे बकरी मंडलीमे जन्मसमयसैही परवसात् सिंह रहताहै आपकूं सिंहस्वरूप नसमजताहै नमाननताहै तैसैही जोजीव अनादिकर्म वसात् संसार कारागारमै

है सो अपणा आपमें आपमयि सम्यक्‌ ज्ञानमयि स्वभाव गुणकूं तो जाणने नाही मानते नाही अर अनादि कर्म बसात् आपकूं ऐसा मानतहै के येह जन्म मरण नाम अनाम आकार निराकार तन मन धन बचन बिचार बुद्धि संकल्प विकल्प राग द्वेष मोह काम कर्म क्रोध मान माया लोभ पाप पुन्यादिक है सोही मैहूं अर्थात् स्वरूप ज्ञान रहितहै सो जीव तो है परंतु अशुद्ध संसारी जीवहै अब येक दोय संख्या असंख्या एकांत अनेकांत एक अनेक हैताहैन आदिकसे सर्वथा प्रकार भिन्न एक स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्‌ ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु चलाचल रहितहै बिसेष स्वानुभव आगे चित्र द्वारा लेणा साधारण अबीलेणा सर्व वस्तु अपने आपने स्वभावमै मग्नहै कोई वस्तुबी अपणा स्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभावगुण ग्रहण करते नाही॰ वस्तु अपणा गुणस्वभाव छोडदे तो वस्तुका अभाव होय वस्तुका अभा

वहोतेसंते आत्मा परमात्मा अर संसार मोक्षादिक का अभाव होवैगा सं
सार मोक्षादिकका अभाव होने संते सून्यदोष आवैगा वास्ते वस्तु कोइहै
सर्वही वस्तु अपणे अपणे स्वभावमै जैसीहै तैसीहै तैसेंही स्वस्वरूपीस्वा
नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि वस्तुभी स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै
स्वभावमै तर्कको अभावहै तथापी अनादिकालसै स्वस्वरूप स्वानुभव-
गम्य सम्यक्ज्ञान मयी वस्तुसे सर्वथाप्रकार भिन्नयेक अज्ञान मयि वस्तु
है तामै कहणेका बिचार चिंतवन संकल्प बिकल्प आदि बहुतगुणहै सोही
वा जडमयि अज्ञान वस्तु अनेक प्रकारसे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तू कूं मानैहै कहैहै सो सम्यक्ज्ञान स्वभावमै संभवे नाहीं
तातै मिथ्याहै जैसी मानैहै कहैहै तैसी वस्तू वाहै नही क्यूंके वस्तु अपणा
स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै वाजड अज्ञान मयि वस्तु हैसो सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू कूं इसप्रकार मानैहै कहैहै सोही कहियेहै वास्त-

स्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो अपणी आ
प आपहीके स्वभावमें है सोतो जहांकी तहां जैसाकी तैसी जैसीहै तै
सी सोकी सोहीहै सोहै जिसकूं कोइतो निराकार मानैहै कहैहै अर उ
सी वस्तुकूं कोई आकार मानैहै कहैहै अर्थात् उसी वस्तुकूं कोई कैसे॰
मानैहै कोई कैसे मानैहै अब देखो चिन्हस्तपरस्पर सम्यक्ज्ञान स्वभा
व वस्तुकूं आंगुलीसे सूचैहै पूर्ववासी कहताहै मानताहै के या सम्यक्
ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिम कूंहै पश्चिमवासी कहताहै मानताहै के॰
या सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिमकूं नही किंतु या वस्तु पूर्वकूंहै द॰
क्षिणवासी कहताहै मानताहै के या सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पूर्वकूं
नही अर पश्चिमकूं नही। या सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो उत्तर कूंहै उ॰
त्तर वासी कहताहै के या सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु तो पूर्व पश्चिम उ॰
त्तर कूंबी नही किंतु या सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु दक्षिणकूं है ऐसेही

अग्नीकोणवासी उस वस्तूकों वायूकोणमें माननाहै वायूकोंणवासी उस वस्तूकूं अग्नीकोणमें माननाहै नैऋत कोण वासी उस वस्तूकूं ईशान कोणमें माननाहै ईशान कोंणवासी उस वस्तूकूं नैऋत कोणमें माननाहै ऐसेंही निश्चया लंबी व्यवहारकूं निषेधैहै व्यवहारा लंबीनीश्चय कूं निषेधैहै ॥ ॥सवैया॥ ॥एककहूंतो अनेकहिदीषत एकअनेक नहीकछु ऐसो ॥ आदिकहूंतो अंनही आवत आदिस अंतस मध्यसु कैसो ॥ गुप्त कहूंतो अगुप्तहे कहां गुप्तअगुप्तउभयोनाहि ऐसो जोहि कहूं सो हैनहिसुंदर हैनोसही पण जैसोकोतैसो ॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ उस सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुकूं कोई कैसे मानतहै कोई कैसे मानत है परंतु मानूं भलाई वस्तुयेह मानतेहै जैसीहै नही भावार्थ वस्तु अपणास्वभावमें जैसीहै तैसीहै सोहै वस्तु का स्वभावमें तर्कको अभाव है॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञेयाकारब्रह्ममलमानै नासकरणकोउद्यमठानै॥

वस्तुस्वभाव मिटैनहिंक्यूंही तातैंखेदकरैसठयूंही ॥दोहा॥वस्तुविचा-
रतध्यावतैं मनपावैंविश्राम॥ रसस्वादनसुखऊपजे अनुभवताकोनाम
॥२॥ अनुभवचिंतामणिरतन अनुभवहैरसकूप अनुभवमारगमोक्ष
को अनुभवमोक्षस्वरूप ॥३॥ ॥अथवचनिका॥ ॥अर्थात् येह
जेतीनयन्याय एकांत अनेकांत निश्चय व्यवहार स्याद्वाद प्रमाणन-
यनिक्षेपादिकयेहजेताहै तेताही वादाविवादहै वह्वारिजेता वादावि
वादहै तेताही मिथ्यात्वहै जेता मिथ्यात्वहै तेताही संसारहै वास्ते॥
चौपाई॥ ॥सतगुरुकहैसहजकाधंधा येहवादविवादकरैसोअंधा
॥१॥ ॥औरस्फुणोनाटिकसमयसारग्रंथोक्तं॥ सवैया ३१सा॥ ॥
असंख्यात लोकपर माणजोमिथ्यातभावतेही व्यवहारभावकेवलीउक
तहै॥ जिनकेमिथ्यातगयोसम्यकदरशभयो तेनियतलीन व्यवहारसैमु
कतहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥ निश्चयव्यवहारमैजगतभरमायोहै॥ ॥

भावार्थ॥ ॥ वास्वस्वरूप सम्यक् स्वानुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तोस्वभावहीसै जैसीहै तैसीहै देखो चित्र हस्तांगुली सूचहै पूर्वपक्षी-जिस वस्तुकूं पश्चिम तरफ मानैहै तैसैही पश्चिमपक्षी उसी वस्तुकूं पूर्वकी तरफ मानैहै वस्तु तो नपूर्वकूं नपश्चिमकूं वृथाही पूर्वपक्षी पश्चिम पक्षी परस्पर विरोधसूच है- क्यूंके वस्तु स्वस्वभावमें स्वभावहीसे जैसीकी तैसी जहांकी तहां चलाचलरहित है इस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य क् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी जिसकूं पूर्ण अनुभव लेणो होय सो प्रथ-म आपकूं मैकेद्वारा वा गुरुपदेसात् ऐसो कल्प लेणो ऐसो आपकूं मा-नलेणो के स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्य स्वभाव वस्तु अपणी आपमें आप स्वभावहीसे जैसीहै तैसीहै जिस स्वभावमयि व स्तुमें तर्कको अभाव मूलहीसेहै सोही मैहूं ऐसे अपणे आपकूं मैकेद्वा रा वा गुरुके वचनद्वारा कल्पलेणो वादपीछे चित्र हस्तांगुलीमोनसहित

येकांतस्थानमै बैठकरिकै देखवोही करो देखने देखने देखणारहैगा ना
चणेमै मजा नाहीं नृत्यनाचदेखणेमै वडा मजाहै ॥ ॥दोहा॥ ॥सम्य
क्ज्ञानस्वभावसे सदाभिन्नअज्ञान ॥ धर्मदासक्षुल्लककहै प्रेमचंद्रतु
मान॥१॥ चित्रांगुलिकूं देखकै मनमै करोविचार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै
पावोगाभवपार॥२॥ जैसासूर्यका प्रकास पृथ्वीजलाग्निआदि कर्ता
कर्म क्रियाके तथा शुभाशुभ वस्तूके ऊपर है तैसेही चित्रहस्तांगुलीके
ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका ज्ञानगु
ण प्रकाशहै परंतु चित्रहस्तांगुलिसे अर चित्र हस्तांगुलीकाभाव क्रि
याकर्म आदिजेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासे ज्ञानगुण नतन्मयि
है नहोयेगा नहुयेथे बहुरिज्ञानगुण अर जिसगुणीका ज्ञानगुणहै सो
भी चित्रहस्तांगुलीसे बहुरि चित्रहस्तांगुलीकाभाव क्रिया कर्म आदि
जेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासे नतन्मयि हुये नहोयेगा नहै वि-

शेष और समजणा करणो जैसे येक मोटो चोडो लंबो स्वच्छस्वभावम
यि दर्पण ताके सन्मुख अनेक प्रकारका काला पीला लाल हरित् रूपे
दादिक रंगका वांका टेडा लंबा चोडा गोल तिरच्छा आदि आकारहै ता
की प्रतिछाया प्रतिबिंब उस स्वच्छ दर्पणमै तन्मयिवत दीखतहै तैसैही
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छस्वभाव दर्पणमै येह
मनुष्य देव तिर्यंच नारकीका वा स्त्रीपुरुष नपूंसकका वा तनमन धन ब
चन तथा लोकालोक आदिकका शुभाशुभ जेता व्यवहारहै ताकी प्र
तिच्छाया प्रतिबिंब उस स्वस्वरूप स्वानु भव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्व
च्छ स्वभाव दर्पणमै तन्मयिवत दीखतहै मानुकील राखेहै मानु चित्रका
र लिख राखेहै मानु काहु शिल्पकार टांचीसे कोर राखेहै भावार्थ स्व-
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वच्छस्वभावमयि दर्पण हैसो
बी स्वभावहीसे स्वभावमे जैसाहै तैसाहै बहुरि तनमन धन बचनादिक

अर इस तन मन धन वचनादिक का शुभाशुभ व्यवहार बहुरि ताकी॰
प्रतिच्छाया प्रतिबिंब स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वच्छ
स्वभाव दर्पणमे तन्मयिवत् दीखतहै सोबी अज्ञानमयि स्वभावहीसे॰
स्वभावमे जैसाहै तैसाहै पूर्वोक्त स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
मयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणको साक्षात् स्वानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति सत्गु
रु का उपदेश बिना तथा काल लब्धि पाचक हुये बिना स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञा
नको लाभ नही होय सुणो जैसे सूर्यमे प्रकाश तन्मयिहै तैसे जिस वस्तु
मे ज्ञानगुण तन्मयिहै उसी वस्तुकूं मुनी ऋषी आचार्य गणधरादिकहैसो
जीव कहतेहै सो निश्चय दृष्टीमे जीवराशी जीव मयिहै शुणो निश्चयदृ
ष्टिमे जीवराशीके परस्पर जातिभेद नही स्वभावभेद नही लक्ष लक्षण॰
को भेद नहीं नामभेद नहीं स्वरूपभेद नही अर्थात् गुणगुणी अभेद
वास्तैजीवराशीके परस्पर गुणगुणी भेदनाहीं यदिस्यात् परअपेक्षाभे

दहैसो परमयोईहाहै येह अमादिसिद्धांत वार्ता वचनहैसो शब्दसे तन्मयी
है अबहे मतवालेहोतथाहेजैनमतवालेहो हेवैष्णुमतवालेहो शिवमतवा
ले बौद्धमतवाले श्यादि षट्मतवालेहो जन्मांध षट् हस्तीको जथावत् स्वरू
प नजानकरिके परस्पर विवाद विरोधकरते करते मरगये तैसेहे षट्मतवाले
हो षट्जन्मांधवत् परस्पर बिनसमजे बिवाद वैर विरोध मति करो शास्त्रहस्य
गुरुर्वाक्यं तृतीयंश्चात्मनिश्चयं अर्थात् शास्त्रमें लिखीहोयसोकी सोही गुरुमु
खसे वाणीखरती होय वहुरि सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि
स्वभावमें अवलप्रमाणमें आवेउसीकू हेमतवालेमित्रोहो समजो दोहा समजोसम
जोसभजमे समजो निश्चयसार॥ धर्मदासक्षुल्लककहे तबपावोभवपार॥१॥ इति०

स्वस्वरूपस्वानुभ
वगम्य सम्यक्ज्ञानमपि·
स्वभाव सूर्पवस्तु स्वभाव में जो
साहै तैसा है स्वभाव मैं न कैको
अभावमूल होसौं है· इसस्वर्पका
प्रकास सर्वविभहस्तांगुली
केऊपन्ह ॥
अजीव
पूर्वदिशा
अभोक्ता
अनेक
अकर्ता
व्यवहार
निराकार
आदि
भाव
पश्चिमदिशा

२३
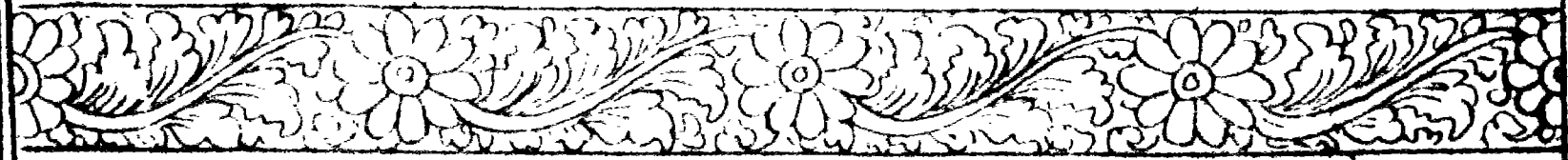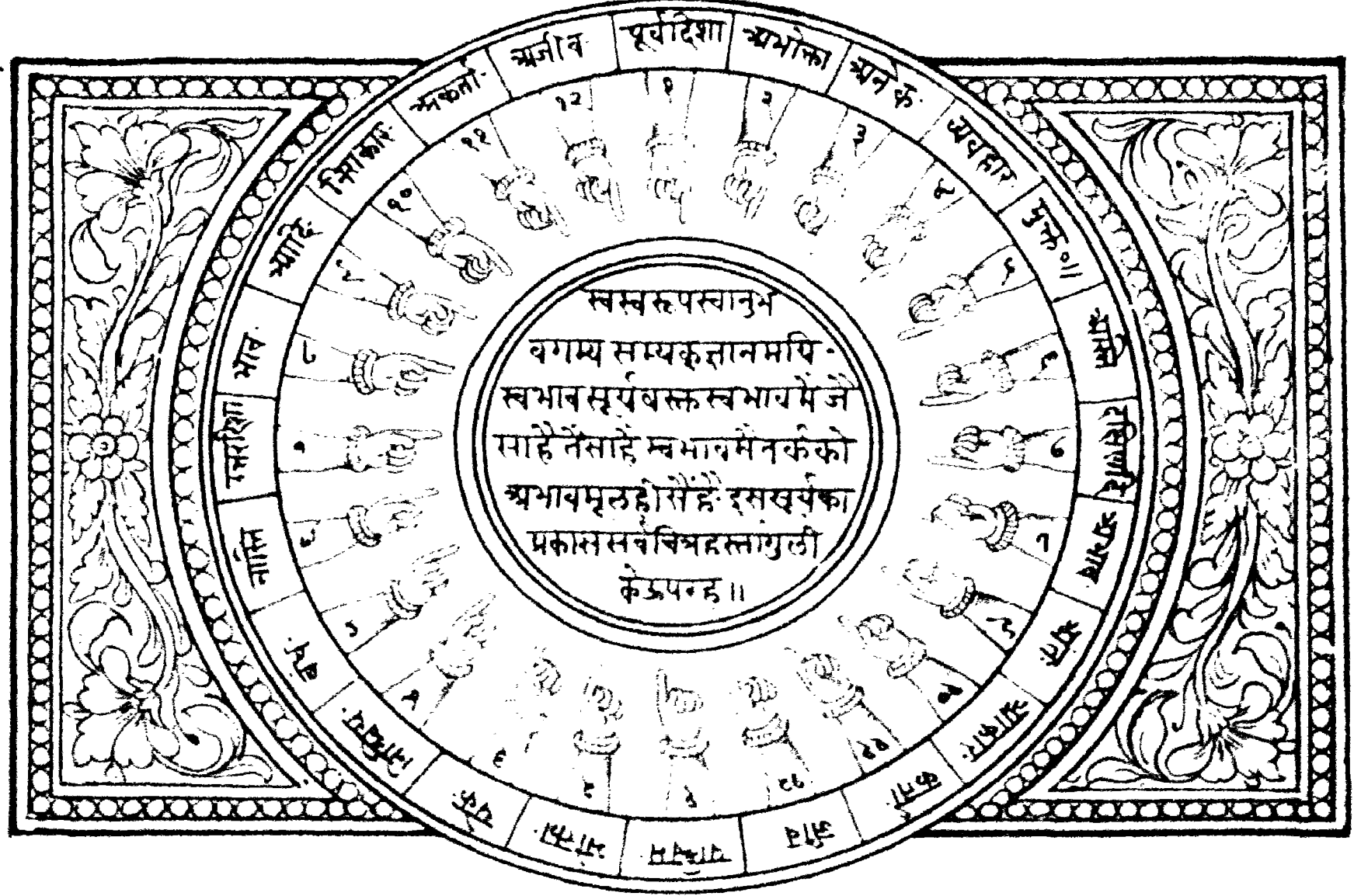
अथ स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसूर्य वस्तु है तासै
तन्मयि होय करिकै ताका स्वानुभव ऐसे लेणा एक नयकै नो दुष्ट कहिये
दूषीहै बहुरि दूसरी नयके दुष्ट नाहीहै ऐसे येह चैतन्यविषै दोहू नयके
दोय पक्षपातहै १ एक नयके कर्ताहै दूसरी नयके कर्ता नाहीहै ऐसै ये
ह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके भोक्ताहै दूसरी
नयके भोक्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १
एक नयके जीवहै दूसरी नयके जीव नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहून
यके दोय पक्षपातहै १ एक नयके सूक्ष्महै दूसरी नयके सूक्ष्म नाहीहै ऐ
सै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके हेतुहै दूसरी
नयके हेतु नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोयपक्षपातहै १ एक
नयके कार्यहै दूसरी नयके कार्य नाही १ एक नयके भावहै दूसरी नय
के अभावहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोहु पक्षपातहै १ एक नय

केयेकहै दूसरी नयके अनेकहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्ष
पातहै १ एकनयके सांतकहिये अंतसहितहै दूसरी नयके अंत नाहीहै
ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके नित्यहै दू
सरी नयके अनित्यहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १
एकनयके बाच्य कहिये वचनकरि कहनेमै आवैहै दूसरी नयके वचन॰
गोचर नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक॰
नयके नानारूपहै दूसरी नयके नानारूप नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दो
हूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके चेत कहिये जानने जोग्यहै दूसरी
नयके चिंतवने योग्य नहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपा
तहै १ एकनयके दृश्यकहिये देखनेयोग्यहै दूसरी नयके देखनमै नाहीं
आवैहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्षपातहै १ एकनयके वे॰
द्यक कहिये वेदने योग्यहै दूसरी नयके वेदनेमै नही आवैहै ऐसै येहचै॰

तन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपातहै १ एक नयके भाव कहिये वर्तमानम
त्यक्षहै दूसरी नयके नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपात
है १ ऐसै चैतन्यविषै येह सर्व पक्षपातहै बहुरि तत्ववेदी हीहै सो स्वस्वरू
प स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य वस्तुकूं यथार्थ स्वानुभव क
रनेवालाहै ताके चिन्मात्रभावहै सो चिन्मात्रहीहै पक्षपातसै सूर्यप्रकाश
वत् येक तन्मयि नहै नहोवैगा नहुयेथे अर्थात् जैसै सूर्यसैं अंधकार भिन्न
है तैसै स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहै सो विधिनि
षेध अस्ति नास्ति राग द्वेष वैर विरोध पक्षपात हैनाहैनसै वा संकल्प विक-
ल्पसै भिन्नहै १ जैसै सूर्यका प्रकासमै येक लघुहै तो दूसरो स्थूलहै येक मू
र्वहै तो दूसरो पंडितहै येक भोगीहैतो दूसरो जोगीहै येक लेताहै तो दूसरो
देताहै येक मरताहै तो दूसरो जनमताहै येक भलोहै तो दूसरो बुरोहै येक मो
नीहै तो दूसरो वक्ताहै येक अंधोहै तो दूसरो देखतोहै येक पापीहै तो दूसरो

पुन्यवानहै येकउत्तमहै तो दूसरोनीचहै येक कर्त्ताहै तो दूसरो अकर्त्ताहै येकचलनाहै तो दूसरो अचलहै येक क्रोधीहै तो दूसरो क्षमावानवीहै येक धर्मीहै तो दूसरो अधर्मीहै कोई किसीसे नगीचहै तो कोई किसीसेभिन्नहै कोई बंध्योहै दूसरो मुक्तहै खूलोहै कोई उलटोहै तो दूसरो कोईसुलटोहै इत्यादिकजैसे येह सूर्यका प्रकासमै सर्वहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमै पूर्वोक्त पक्षपातकाविवाद परस्परहै अर्थात् पूर्वोक्त पक्षपातहैसो पक्षपातसे अग्नि उष्णतावत् येकतन्मयिहै बहुरिजैसै सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तैसै पूर्वोक्त पक्षपातहै सोस्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्यसे भिन्नहै प्रथमगुरूपदेसात् सर्वचित्र हस्तांगुलीके बिचमैहै सो अचल वर्णिकारिके बाद पश्चात् परस्पर चित्र हस्तांगुलीसूचहै कहहै मानैहै सो समजणा समजणेके द्वारा अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमे संभवो सोतो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसे तन्मयि शेष न

संभवे सो अनन्मयि स्वस्वभावमे संभवे सो अपणीहे स्वस्वभावमे नसंभवे
सो अपणी कदाचित कोई प्रकारवीनहे नहोवेगी नहुईथी अब अवगाढता
के अर्थ चेतकरो पीतांबर दासजी आदिजेना मुमुक्ष मेरा प्यारा मेरा वचनो
पदेस द्वारा स्वस्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभव प्रातकी प्राप्ती लेणेजोगले
चुकेहोतो इससम्यक्ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसे अंत पर्यंत् दोय म-
हिनामे येकवेर पढलीया करो यावत् देहादिक भाष तावत्काल पर्यंत येह
मेरा लिषणा सद्भूत व्यवहार गर्भित समजणा १ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

अथज्ञानावर्णीकर्मचित्र· ३

१	मति	१	ज्ञान·
२	श्रुति·	२	ज्ञान·
३	अवधि	३	ज्ञान
४	मनपर्य·	४	ज्ञान·
५	केवल·	५	ज्ञान·
६	कुमति·	६	ज्ञान·
७	कुश्रुति·	७	ज्ञान·
८	कुअवधि	८	ज्ञान·

॥ अथज्ञानावर्णीकर्मविवर्णमाह॥ ॥दोहा॥
ज्ञानावर्णीघातके हुवोज्ञानकोज्ञान॥ धर्मदास
क्षुल्लककहै जिनआगमपरमान॥१॥ अथव
चनिका॥ ॥जैसैदेवमूर्तिके आडो मुलमलको
वस्त्रको पटलहोय तबदूसराकूं देवमूर्तिस्पष्टदी
खैनाहीं तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानके येक पटवत् कर्महै सो आडोआजावे तब
निरंतर दृष्टीरहितकूं अंतरज्ञान दीखे नाहीं अथवा जैसे सूर्यके आडो बा
दल आज्यावै तब दूजाकूं सूर्य स्पष्टदीखै नाहीं तद्वतही केवलज्ञानम
यि सूर्यकेपटलवत कर्म आज्यावै तबज्ञानरहितकूं दीखतानाही जैसै
सूर्यके आडा पटवत् अनेक बादल आज्यावै तोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै
यदि बादलरहित सूर्य होयतोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै सूर्यके आडाबाद

ल आज्यावै नव सूर्यकूं सूर्यही नमाननाहै नसमजताहै न कहताहै
सोबी मिथ्याती बहुरि सूर्यके आडा बादल आज्यावै नव कोई बादल-
हीकूं सूर्य समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्याती देवमूर्तिके-
आडोपट अर सूर्यके आडा बादल येह दोय दृष्टांतके द्वारा होकरि समज
णा बहुरि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुके प-
टवत् येक कर्म है ज्ञानरहितहै सो आडो आज्यावै तोबी सम्यक् ज्ञानस्व-
भावमयि वस्तुहै सोकी सोहीहै सोहै बहुरि जड अज्ञानमयि पटवत् क
र्महै जिससै रहितहोय सोबी वो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान
मयि स्वभाव वस्तू जैसाकी तैसी स्वभावमेंहै अर्थात् जैसै सूर्यके अरअ
मावास्याकी मध्यरात्रीके परस्पर अत्यंत भेदहै तैसैंही स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावके अरज्ञानावर्णि कर्मके परस्पर अत्यं
तभेदहै क्यूंकं कर्म अज्ञानहै वो ज्ञानहै कर्म अचेतन वो चेतन कर्म अ-

जीवहै वोजीवहै ज्ञानहैसो कर्मकूं जाणताहै कर्महैसो ज्ञानकूं नहींजा
णताहै ज्ञान अरु कर्म येह वस्तू दोयहै अर दोहूका लक्षलक्षण येकन
हीं जैसे सूर्य प्रकास येकहै तैसे ज्ञान अज्ञान नएकहै नहोवैगा नयेकहु
येथे ज्ञान अज्ञानका मेलहै तो ऐसाहै के जैसा फूल सुगंधका तिलतेल
का दुग्ध घृतकासा मेलहै बहुरि ज्ञान अज्ञानका अंतर भेदहै तो ऐसा
है के जैसा सूर्यका अर अंधकारका अंतरभेदहै तैसा येह अनादीवा
र्ताहै गुरुविना इसका सारको लाभ नही होवै जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण
सूर्य स्वभावहीसैहै तैसे जिस बस्तुमे केवल ज्ञानादि ज्ञानसे तन्मयिगु
णहै सो केवलज्ञानहै अर्थात् जिसमे केवलज्ञानादि गुणनाही सो अ
ज्ञान वस्तुहै अब जिसमे ज्ञानगुणहै असो केवल ज्ञानहैसो पर अपे-
क्षा अष्टप्रकारहे जैसे सूर्य प्रकास एकतन्मयिहै तैसे केवलज्ञान वस्तु
अपणा गुणस्वभाव लक्षणकूं त्याग करिके जड अज्ञानमयि वस्तुसैन

येक कबि कदाचित् तन्मयिहुये नैहोवैगा नहोताहै अब हेसज्जन अष्ट प्रकार ज्ञानाबर्णिकर्मको बिचारकरै ज्ञानके अर कर्मके तन्मयिताहै केनाही उसका बिचारकरि ॥ ॥ अथदोहा ॥ ॥ प्रकाससूरजएकहै जड़ चेतन नहिएक ॥ धर्मदासक्षुल्लककहै मनमैधारबिबेक ॥ १ ॥ ॥ इति श्रीज्ञानावर्णिकर्मचित्रयंत्रसाहितसमाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥
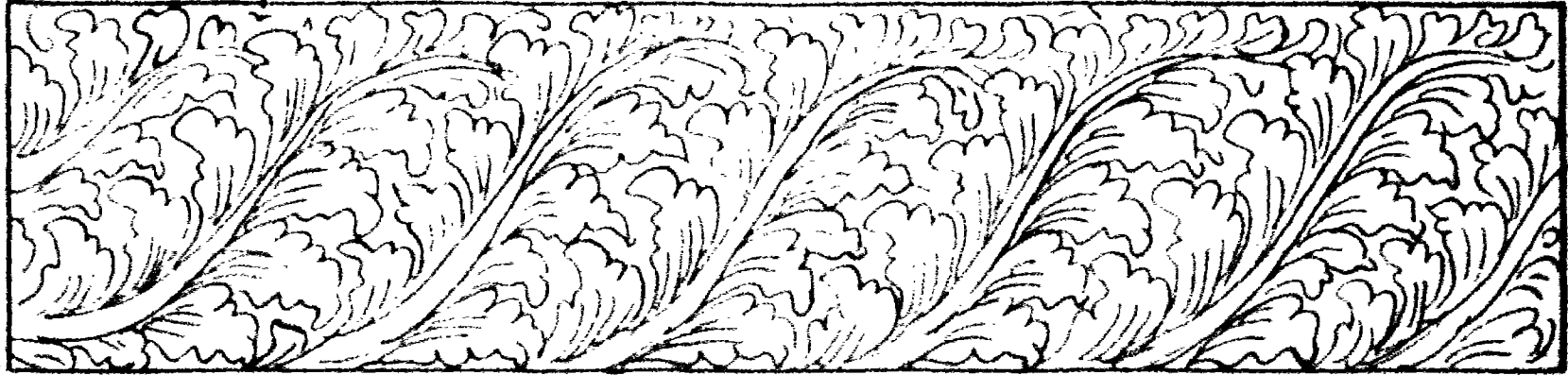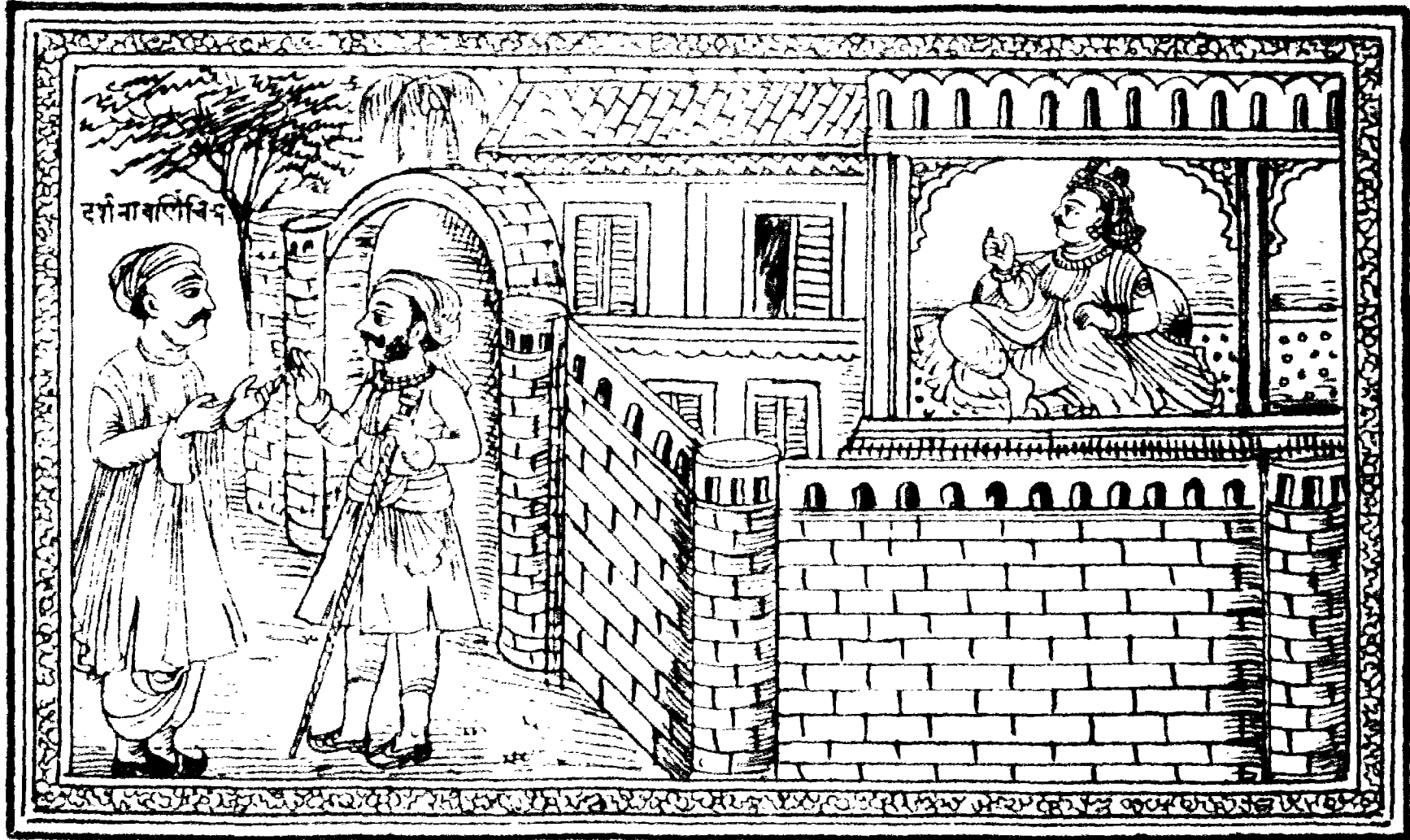
चक्षु	दर्शन
अचक्षु	दर्शन
अवधि	दर्शन
केवल	दर्शन
अथ दर्शनयंत्रं	

॥ अथदर्शनावर्णिकर्मप्रारंभः ॥ ॥सोरठा॥ ॥ज्ञानभानुंजिनराज सर्वजगनकेऊपरै॥ धर्मदासकहैसार सोहीसुखकोकाजहै॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ जैसेगढमेजा करिके देखणेकी सक्तितो एक पुरुषमें है परंतु द्वारपाल-भीतर नहींजाणे देताहे तैसेही जैसे सूर्यमे प्रकासहै तैसै जीवमे देखणेजाणणेका गुणस्वभावसेहीहै परंतु दर्शणावर्णि जानिको द्वारपा-लवत् येक कर्महै सो देखणे नही देताहै इहां असा अनुभव लेणा के द्वारपाल उनकूं देखणेके अर्थ नहींजाणे देताहै अर कहताहैके गढ के भीतर क्या देखणेकूं जानाहै उत्तर जिसमे देखणे जाणवे का-गुणहै उसीकूं देखणेकूं भीतर जानाहै द्वारपाल रोकताहै कहताहैके मतिजावो जैसा तेरेमे देखणे जाणनेका गुणहै तैसाही उसमैहै सूर्यसूर्यकूं देखणेका उद्योग इच्छा कर्नाहै सो वृथाहै जैसे एक अग्नि भीतर रा

खमे दबीहै अर दूसरी अग्नि व्यक्तहै तैसैही तेरे अर तूं जिसकूं भीतर देखणेकूं जाताहै उसके अंतर समजणा राखकी अपेक्षावत् भेदसम- जणा स्वस्वरूपमे अभेद जैसो भीतरगढमेंहै तैसोही तूंहै ॥ ॥प्रश्न॥ जैसैं जैसो भीतरगढमेंहै तैसोही मै कैसोहूं ॥ ॥अब द्वारपाल दृष्टांतद्वा राउत्तरदेताहै॥ ॥ स्फणि तूं इस द्वार भवनमे तूं तेरा स्वमुखसे ऊंचा स्वर- सैं अलापकरिकै तूंही तब द्वारपालके कहे प्रमाण ऐसैही ऊंचा स्वरसे आ वाज करिके तूंही तब प्रतिआवाज वसीही आई तब वो निश्चय समज ल ही के जिसमे देखणेका गुण भीतरमैंहै तैसाही देखणेका गुण मेरेमें है अ बमे किसकूं देखणेके अर्थ भीतर गढमे जाऊं अर्थात् मेरेमे देखणेजा णनेका गुण स्वभावहीसैं है अबमै किसकूं देखूं अर किसकूं नदेखूं॥ दोहा॥ ॥ दर्शणावर्णीकर्मको प्रगटदिखायोभेद॥ तोबीगुरुबिनना- मिले बहुतकरो तुमखेद॥२॥ ॥अथ वचनिका॥ ॥जैसैं सूर्यमे प्रका

सगुणहै तैसै जिस बस्तुमै देखणेका गुणहै सोही बस्तु दर्शणहै उसदर्शो
णका परम्अपेक्षा ४ भेदहै सोबी सम्यक् दर्शणतो स्वभावकूं उल्लंघक
रिके चक्षो चक्ष होना नाहीं जैसै जन्मांध स्वपरशरीरकूं नही देखतहै
नहींजाणतहै तैसैही अज्ञान बस्तुहै सोस्वपरकूं नहीजाणतहै नहीदेख-
तहै बहुरिजैसै सडकके रस्ताके येकतरफ येकद्वारको मकानस्थानहै ता
केभीतर येकस्थान अर्थात् मकानके भीतर मकान तहां अंधारामे येकपु
रुष बैठेहु वो उस मकानके द्वारा होकारिकै बाहिर रस्तामे आतेहै जातेहै ता-
कूंबी जाणतहै अर स्वआपकूं बीजाणतहै तैसैही दर्शणहैसो स्वपरकूं
देखतहै जैसै सूर्जसै प्रकास भिन्न नही तैसे दर्शणसे देखणा जाणना क-
दापी भिन्ननहीं १ सर्वकूं देखताहैसो दर्शनहै १ इतिदर्शनावर्णि
कर्मसमाप्तः ॥ ॥श्री॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

बेद्नीकर्मचित्र

॥ अथबेदनीकर्मप्रारंभः ॥ ॥दोहा॥ ॥ विषयसुखसोदुःखहै निश्वयनयप्रमाण॥ धर्मदाससुक्षुककहै समजदेखमतिमान॥१॥ ॥अथवचनिका॥ सहत लपेटी षड्गधाराकूं पुरुष जिव्हासैंचाटतहै सो कुछतो स्वादमिष्टभाष होतहै विशेष जिव्हा खंडन दुःख भाष होताहै तैसेही बेदनीकर्म दोप्रकार साता असाताहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुको अनुभव ऐसै लेणा जैसै सूर्य प्रकाशमै वा आकाशमैं कोहू सुखी कोहू दुःखीहै ताका सुख वा दुःख आकाशसे वा सूर्य अर सूर्यका प्रकाशसैं येक नन्मायि होकरिके लागने नाहीं तैसेही संसारका सुख दुःख साता असाता कर्म उरस्वस्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान सूर्य कूं पोंहोंचनानाहीं ज्ञानमयि सूर्यकूं लागन नाहीं अर्थात् सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता बेदनी कर्मके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद परस्परहीके स्वभावहीसै भेदहै दोहूहीके सूर्यप्र

काशवत् येकत तन्मयि ताहै नहीं होवैगी तहुईर्था स्यात् जैसे दर्पणमें ज-
लाग्निकी प्रतिच्छाया भाष होतीहै तैसेही स्यात् केवल ज्ञानमयी दर्पण-
मै येह साता असाता वेदनी कर्मकी भाववासना भाष होताहै तोवी सा-
ता असाता वेदनी कर्मसे वो केवल ज्ञानमयि दर्पण तन्मयि नहुवो नहोवै
गो नहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको अभावनस
मजणा नमानणा नकहणा ॥ ॥सवैय्या ३१सा ॥ ॥जैसे कोहू चंडा
लीजुगल पुत्र जणेयेक दीयो ब्राह्मणकूं येक राखलियोहै ब्राह्मणके गयो
सोतो मदिरामांसत्यागकीया ॥ ॥वचनिका॥ ॥ ताकोंतोउत्तम ब्रा
ह्मणपणाको अभिमानआयो बहुरि दूसरो चांडालनीके घरहीमेरह्यो
ताकूं मदिरा मांसादिकके ग्रहण निमित्तसे हीणतापणासे वो आपकूंनीच-
माननो हुवो इहां विचार करिके देखियेतो यह दोहूही उत्तम अरहीण येक
चांडालनीके पेटमैसे उत्पन्नहुये तैसैही येक कर्म खेतमैसे साता असाताबे

दनी कर्मका दोयपुत्र समजणा निश्चय द्रष्टीमें दं ग्यो सुनार सुवर्णका-
आभूषण करै तोबी सुनारहै सो सुनारहीहै बहुरि स्यात् वोहीसुनार ता-
म्रलोहका आभूषणबनावें तोबी जैसाको तैसो सुनार है सो सुनार हीहै
बहुरिजैसे सुनार शुभाशुभआभूषणादिककर्म कर्ताहै सोशुभाशुभआ
भूषणादिक कर्मसे तन्मयिहो करिकै नही कर्ता है तैसेही सम्यक् द्रष्टी शु
भाशुभकर्म कर्ताहै परन्तु शुभाशुभकर्मसे तन्मयिहोय करिकै नही कर्ता
है वास्ते गुरुपदेशात् सम्यक्द्रष्टी होणा जोग्यहै। दोहा ॥एकवेदनीक
र्मका भेददोयपरकार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै सातासातबिचार॥२॥ ॥
बचनिका॥ ॥हेजीव येह साता असाता वेदनीकर्म तेराहै तबतो तूंही-
अधिष्टाताहै तथा येह साता असाता वेदनी कर्म तेरानाहीं तो फेर क्यांफि
करहै तूंनकिसीका कोईन तुमारा तेरा तूंहीहै निराधारा॥ ॥इतिश्रीवेद
नीकर्मचित्रसहित समाप्ताः॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मोहनीकर्म

॥ अथमोहनीकर्मप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परस्वभावपररूपकूं मानै अपनोआप ॥ येविकल्पसबछोडके नयेसिद्धगुणथाप ॥ २ ॥ ॥ अथवचनिका ॥ ॥ जैसैंमदिराकेपीएवालो आपपरकूं जाणनो नाहीं· मदिरावसात यहा तहा वचन बोलनाहै तैसेंही मोहनीकर्मबसात् जीव आपणाआपमे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि· स्वभावकूं नजाणनहै अरपरकूं ऐसा मानैहै येह तन मन धन वचनादि कहै सोही मैंहूं अर्थात यही मोहहै करणां निश्चय मोहका वचन कूंकहै ताहूं येह तनमन धन वचनादिकहै सोही मैंहूं येकतो येहविकल्प बहु· रि दूसरो येह विकल्पहैके येह तन मन धन वचनादिक हैसो मैनाहीं अ र्थात् येहैसोही मैंहूं येहसो मैनाहीं येह दोहूं ही विकल्पहै सोही निश्च य मोहहै इस दोहू विकल्पकूं अर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यकज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि अग्नीउष्णतावत् सूर्यप्रकाशवत् मा·

ननाहै जाणनाहै कहनाहै सो मोहै। मिथ्यादृष्टीहै इससै भिन्नसो सम्यक्
दृष्टी मै तूं येह वह येह ४ च्यार अर इन च्यारका जेना खेल बिलासहै सोस
र्व द्रव्यकर्म भाव कर्मनो कर्मसै तन्मयि येकमयि समजणा होय होय मो
हनी कर्म बसात् जिसकूं भला मानताहै उसीहीकूं बुरा मानताहै जिस-
कूं इष्ट मानताहै उसीकूं अनिष्ट माननाहै मोहीजीवकूं येह निश्चय नाही।
के जिसमें ज्ञानगुणहै सोही मैहूं यदि निश्चयहै तो फफन फहणेकाहै
स्वस्वरूप स्वानुभव नाही क्यूंके तनमनधन बचन आदिक अजीव वस्तु
के अर ज्ञानगुणमई जीवके सूर्य अंधकार कासा अंतर भेद परस्पर स्वभा
वहीसेहै येह भेदविज्ञान जिसके अंतःकरणमे गुरुपदेशात् आकाशवत्
अचल निष्टैहै सो अद्विलकहै विचक्षण पुरुष सदामे एकहूं अपरोरस.
मै भर्यो आपणीटकहूं मोह करम ममनाही नाही भ्रमकूपहै शुद्ध चेतना
सिंधु हमारो रूपहै वचनिका जैसै सूर्यमै प्रकाशगुणहै तैसे हे सज्जन

हे प्रेमी तेरेमें ज्ञानगुणहै तूं निश्चय समज तूं ज्ञानहै और येह मोहादिक अज्ञानहै भावार्थ ज्ञान अज्ञानकूं सूर्य प्रकाशवत् एकही मानताहै समजताहै कहताहै उस मिथ्या दृष्टीकूं ब्रह्मज्ञानको उपदेस देणा वृथाहै॥ प्रश्न॥ ॥ मोह किसकूं कहतेहे ॥ ॥उत्तर॥ ॥ नदीके तट येक पुरुष बहताहुवा पाणीकूं येकाग्रह मन करिकै देखत देखत येह समजीके हम भी वहे जातहै इसीको नाम मोहहै तथा दश पुरुष परस्पर गणिना करिकै नदीके पार उतरणेकी इच्छा करी येक पुरुष गणिना करिके अपणा घरसे दश आयेथे नवही रहगये आपकूं दशमूं नसमजताहै नमानताहै नकहताहै इसीको नाम मोहहै अर्थात् पुद्गलादिककूं अर आप सम्यक् ज्ञान मयिहै ताकूं येकही समजताहै सोही मोहहै॥

इतिश्री मोहनीकर्म चित्रसहित समाप्तः॥ ॥७॥ ॥७
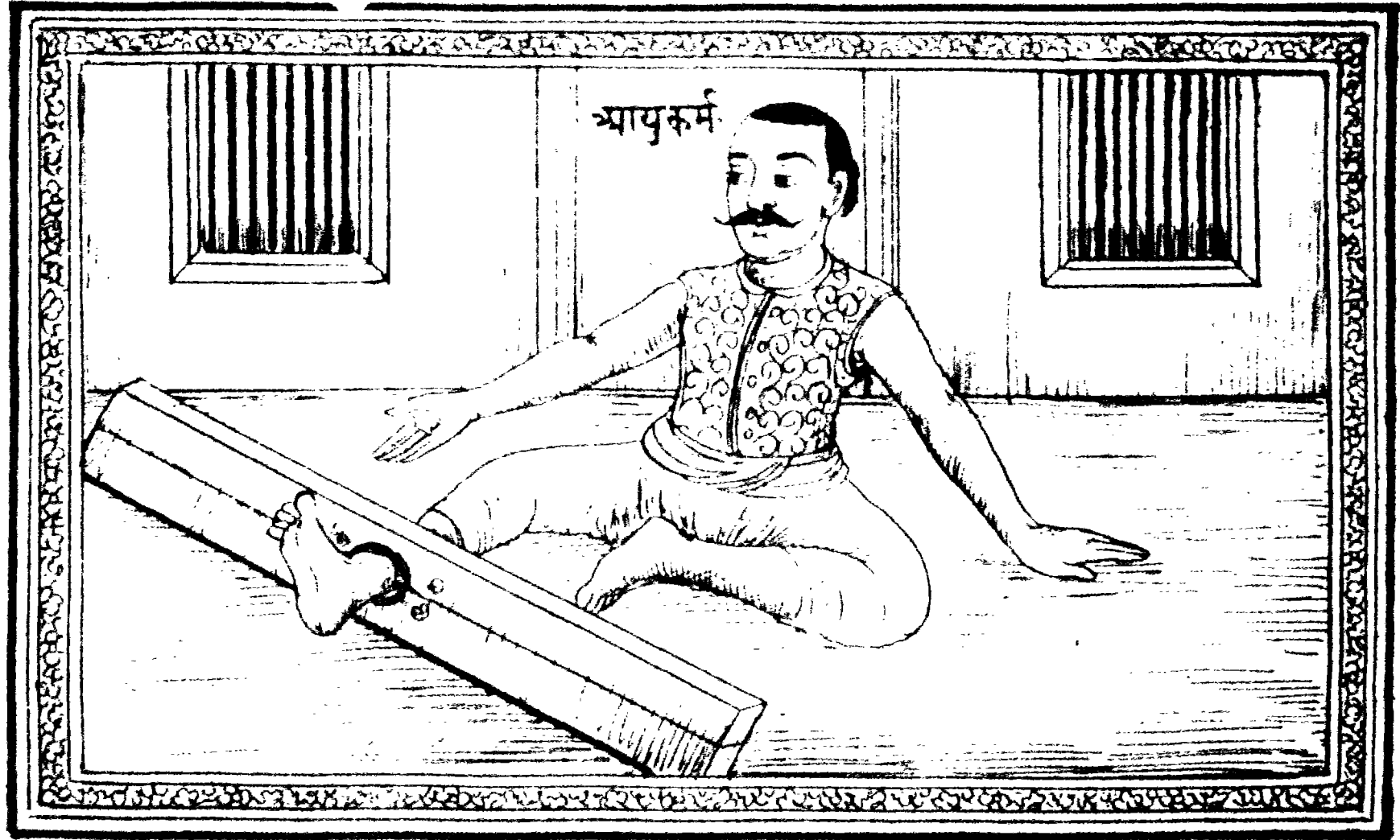
आयुकर्म

आयुकर्मयंत्रम·	
मनुष्य·	आयु·
देवा	आयु
तिर्यंच	आयु
नारकी	आयु·

॥ अथआयुकर्मप्रारंभः॥ ॥ चौपाई॥ ॥खंडनमंडन-आयुनाश भयेसिद्धपरमानमपाश॥ अचलायूसमअ-चलअभेद लीनभयेनिजरूपअखेद॥१॥ ॥ वचनिका जैसे कोई तस्कर बेडीखोडासे बंध्योहै तैसेही जीवआयुकर्मवसात् मनुष्यायू देवायु नर्कायु तिर्यंचायूमे जहांतहा बंधजातो है आयू पूर्ण हुयेबिना एकायूकूं छोडकरिकै दूसरी आयूमे नहीं जाय अब अचलायूके अर्थ स्वस्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे घटके भीतर घटाकाश बंध्योहै मठकेभीतर मठाकाश बंध्याहै इत्यादि तैसेही देहरूपी घटमे आकाशवत् एक ज्ञान गुणमयि जीव बंध्योहै विचारकरो जैसे घटकेभीतर आकाशहै सोमहाकाशसै अलग नाहीं तैसेही देहीरूपी घटके भीतर ज्ञानहै सो केवल ज्ञानसे भिन्न नाही है ज्ञान तूतरेकूं केवलज्ञानसे भिन्नमनिस

मजो मतिमानें क्यूंके केवल ज्ञानसै भिन्न वस्तुहै सोतो अज्ञान वस्तुहै हे
सज्जन तूं ज्ञान वस्तु मूलहीसें स्वभावहीसे है फेर तेरेकूं तूं अज्ञान कैसें
माननाहै हेज्ञान व्यवहार नयात् तु मनुष्यायु देवायु नरकायु तिर्यंचा
युमें बंध्योहै निश्चय नयात् हे केवल ज्ञान स्वरूपी स्काणि पुद्गल मूर्तिआ
कार वस्तुहै तूं केवल ज्ञानमयि निराकार अमूर्ति वस्तु स्वभावहीसे है
बडे आश्चर्यकी वार्ताहै मूर्ति आकार वस्तुहै सो अमूर्ति निराकार वस्तु
ज्ञानमयि कूं कैसें बंधमें डालतहै असंभवति वार्ता कैसे संभवे हेज्ञान-
भरममें मतिदृवे देखणे जाणवेकागुण तेरेसै तन्मयिहै तूं बंधकूं अर
बध्याकूं अरबंधणेकाद्रव्य क्षेत्र कालभाव आदिककूं सहजही जाणत
देखतहै जैसें सूर्यका प्रकाश सर्व पृथ्वीके ऊपर सहजहीसे है तैसे हेज्ञा
न तूं बंध्या बंधकुं सहजही जाणतहै व्यवहार नय वसात् तूं बंध्योहै सो
व्यवहार ऐसाहै वो घृतकुंभ वाऊरवलीसडक चलतीहै रस्ता लूटनेहै अ

नी बलतीहै येह पांच दृष्टांत द्वारा सर्व व्यवहार कूं समजो निश्चय व्यवहा
रसे सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही परमात्मा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानघनहै जैसे
देखो सूर्य के भीतर अंधकार नाहीं तैसेही सम्यक् ज्ञान स्वभावमें शुभा
शुभ आयु नाही मनुष्यायू देवायू तिर्यंचायू नर्कायू येह ४ च्यार आयू
है ताकूं केवल ज्ञान जाणताहै अचल अखंडायू पंचमायूहै कुछ और
समजो जैसें किसीके पांवमें लोहाकी बेडी सें बंध्योहै सोबी दुःखीहै
बहुरि किसीके पांवमे सुवर्णकी वेडीसें बंध्योहै सोबी दुःखी तैसेही दा
न पूजा व्रतशील जप तपादिक शुभभाव शुभक्रिया शुभकर्मादि शुभबं
धहै सोबी सुवर्णकी बेडीवत् दुःखको कारणहै बहुरि पाप अपराध काम कु
शीलादिक अशुभभाव अशुभक्रिया अशुभकर्मादि अशुभबंधहै सोबीलो
हाकी बेडीवत् दुःखको कारणहै इस शुभाशुभसें सर्वथा प्रकार भिन्न हो
णो निश्चयहीहै सो सतगुरुका उपदेशविना प्रभुकी प्राप्ति होतीनाहीहै

॥ ॥प्रश्न॥ ॥मात्तकीअप्राप्तिसंभवहै ॥ ॥उत्तर॥ ॥दधि-
मैसै घृतनिकमे पश्चात् दधिमैनही मिलताहै ऐंसाहीसमजणा ॥१॥
॥ ॥इतिश्रीआयुकर्मविवर्णचित्रसहितसमाप्तः॥ श्रीजिनाय०॥
॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥
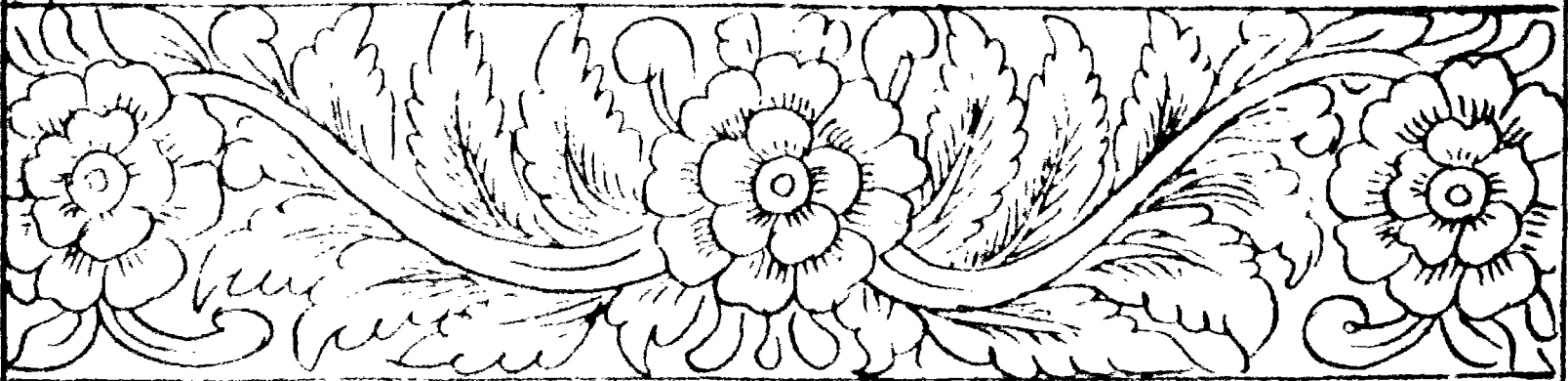
नामकर्म

॥ अथनामकर्म विवर्णप्रारंभः ॥ ॥चौपाई॥ ॥ तुमरोनामनहीहैस्वामी ॥ नामकरमतुमसैंअलगामी ॥ शब्दव्यवहारमैनामअनंना ॥ व्यक्तरूपश्रीजिनअरिहंना ॥१॥ ॥दोहा॥ ॥ जिनपदनहींसरीरको जिनपदचेतनमांहि ॥ जिनवर्णनकुछश्रोरहै येहुजिनबर्णननाहि ॥२॥ ॥अथ वचनिका प्रारंभ ॥ ॥जैसैं चित्रकार नानाप्रकारका आकारका नाम लिखताहै करताहै सो जेता काला पीला लाल हरया धोला रंगका चित्र आकारदीखनाहै सो पुद्गलकाहै सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू को नामक्या इसीवस्तूकोनाम व्यवहार नयात् जीवनामहै सो भी परसंगात् अनेकनामहै जेसैं माटीकाघटकूं घृतसंगात् व्यवहारी जन कहतेहैं सो घृतकुंभल्यावो अथवासमुदायवस्तुको नाम फोजहै तथा जेता कुछ वचनसैं कहणेमें आवैहै सो सर्व नामहै नाम देसमैं एकही नामहै बहुरि इहां स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव ऐसैं लेणा जैसैं सूर्यमैं प्रकाशादिक

गुण सूर्य स्वभावहीसेहै तैसै कोई वस्तु ऐसीहै जिसमे स्वपरकूं देखणा जाणना येहगुण स्वभावहीसेहै विचार करो सर्वनाम अनामकूं देखता जाणताहै ताकोनाम क्याहै अथवा सर्व नाम अनामकूं कहताहै ताकोनाम क्याहै वचन और मौन येहवी दोयनामहै अथवा एकही वस्तु अपणा स्वभाव गुणमयि स्वस्वभावमेजे सैहै तैसा अचल निष्ठहै उसीसे तन्मयि गुनवा प्रगट अनेक नाम निष्टैते जैसे सुवर्ण अपणा स्वभाव गुणादिक अपणे आपमे लीयेहुये अचलानष्टहै ताहीमे कडा मुंदडा असरफी आदि आभूषणादिक अनेक नाम सुवर्णमे तन्मयिहै नामहैसो वी अपेक्षासे है जैसे पिताकी अपेक्षा पुत्रनामहै तैसेही पुत्र अपेक्षा पितानामहै तथा तैसेही जीवकी अपेक्षा अजीव नामहै वहोर अजीवकी अपेक्षा जीवनाम है ऐसेही ज्ञानकी अपेक्षा अज्ञानहै वहोर अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान नामहै हाहाहा धन्यधन्यधन्य सर्वपक्षापक्षरहित ज्ञानगुणसंपन्न स्वस्वरूपस्वा

नुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वभावहोसे जैसाकी तैसी जै-
सीहै तैसीहै ताकूं अंतर दृष्टी वा सम्यक्ज्ञान दृष्टीसे देखियें तो ननामहै न
अनामहै अर्थात् वस्तु अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य ज्ञानस्वभावमें जै-
सीहै तैसीहै नाम कहो अथवा मति कहो नाम और जन्म मरण येह पांच
प्रकारकाशरीरहै ताकाहै पद्मनंदी पचीसीग्रंथमें पद्मनंदिमुनी कहग
ये ॥ ॥दोहा ॥ ॥ नामकर्मकीभावना भावेरकरनिसंभाल ॥ धर्मदास
क्षुल्लक कहै मुक्तिहोय ततकाल ॥ १ ॥ अपणो आपो देखके होय आपको आ
प ॥ होयनिचंतिनिश्चयोरहै किसकाकरणाजाप ॥ २ ॥ नामकर्म कर्तारको
नामनहीरकणसार ॥ जोकदापियोनामहै ताकोकर्ता निर्धार ॥ ३ ॥ ॥
इतिश्रीनामकर्मबिवर्णचित्रसहित समाप्ता ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

गोत्रकर्म

॥अथगोत्रकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥ गोत्रादिकसबकर्मकूं त्याग भयेजिनराज॥धर्मदासक्षुल्लककरै वंदनमकरवकेकाज॥१॥ ॥वचनि का॥ ॥जैसाकुंभार छोटामोटा माटीकाबर्तन कर्ताहै तैसे स्वस्वरू प ज्ञानरहित कोईजीवहै सोनीचगोत्र ऊंचगोत्र कर्मको कर्ताहै याहीतै नीचगोत्र ऊंचगोत्रहै इहां समजणा चाहिये माता पक्षकूं तोजाति कह तहै बहुरि पिता पक्षकूं कुल कहतेहै जातिगोत्र येह दोयभेद कहणे मा त्रहै अभेद वस्तुमे येह दोयभेद जल तरंग वत् तन्मयिहै जैसे आम्रवृ क्षके आम्रही लगताहै बिचारकरो आम्रकीजातिबी आम्रहीहै अरआ म्रका कुलहैसो बी आम्रहीहै जैसे जलकीजाति मिश्री फिटकडी लूण नोसा दर आदिहै क्यूंके इनकूं पाणीमे मिलावोतो येह मिलजातेहै अर्थात् मि लज्यावेसो निश्चय जाति तैसेही नीचगोत्र ऊंच गोत्रकोही नीचऊंचगोत्र है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव

ऐसै लेणो जैसै कुंभार माटीका बर्तन छोटा मोटा विबधि प्रकारका बणावै हे कर्त्ताहै परंतु माटीचक्रदंड छोटा मोटा विवधि प्रकारका बर्तन भांडासै तन्मायि होय नही कर्त्ताहै क्यूंके कुंभकार बिचार चिंतवन नही करे तोबी· कुंभकारके अंतः करणमे अचलनिश्चय येहहै के मै माटीनहीं अरमाटी का छोटामोटा बर्तनादिक कर्महै सोवी मै नाहीं अर दंडचक्रादिक कर्म हैसोबी मै नाहीं अरयेह मेरा सरीर हाडमांस चर्मादिक मयिहै सोवीमै नाहीं अर तनमन धन बचनादिक हैसोभी मैनाहीं इत्यादिक कुंभकारके अंतःकरणमे अचलहै तोइहां निश्चय स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा नस्वभावमे येही भाव भाव मालुम होताहै के जैसै माटीको कार्य घट जै· सैमाटी ताके बाहिर मांहि जल फेन तरंग बुद बुदा ऊपजताहै सो जलसे जू देजुदे नाहीं। ऐसैजो जाकोहै कार्य कारण रूप छा नो नाहि तैसेही। जिसवस्तु को कर्म कारण कार्य कर्त्ता जिसका जोहिहै अर्यात् जैसै व्यवहारदृष्टीमे·

देखिये तो माटीका वर्तन कुंभकार कर्त्ताहै बहुरि निश्चय दृष्टीमें परमा
र्थ सत्यार्थ दृष्टीमें देखिये तो कुंभकारके अर माटीके वर्तन अर माटी च-
क्र दंडादिकके एकमई पणो नाहीं वास्ते माटीका वर्तन कर्मकी करणेवा
ली माटीहीहै तैसेही व्यवहार द्वारा नीचगोत्र ऊंचगोत्र जीव करैहै निश्च-
य स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान दृष्टी द्वारा देखिये तो ज्ञानमयि जीव नीच-
गोत्र ऊंचगोत्र नकरैहै अर्थात् गोत्रकर्म कोकरणेवालो गोत्र कर्मही कर्म
की विधि निषेध कर्मको कर्मही कर्त्ताहै निश्चय सम्यक्ज्ञान दृष्टीमें देख-
णा ज्ञानगुणमई वस्तु अमूर्त्तिहै अर कर्म मूर्त्तिहै कृत्यमहै जैसे सूर्यका
अर अंधराका नतस्वरूप मेल नाहीं तैसेही कर्मको अर केवल ज्ञानको
मेल नाहीं ॥ ॥ इतिश्रीगोत्रकर्म वर्णन चित्रसहित समाप्त ॥ ॥
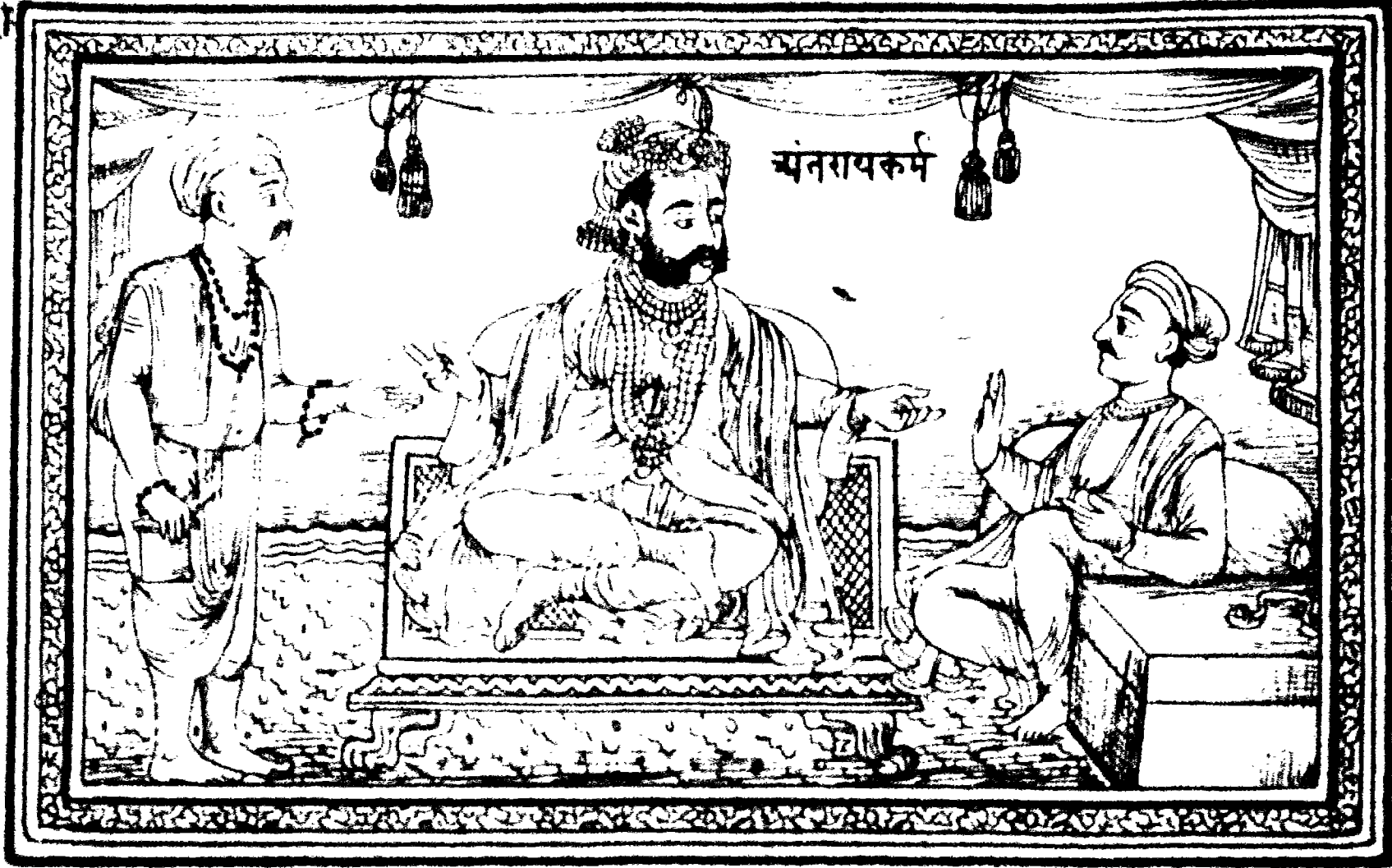
अंतरायकर्म

अथ अंतरायकर्मयंत्रम्	
दान	अंतराय
लाभ	अंतराय
भोग	अंतराय
उपभोग	अंतराय
वीर्य	अंतराय

॥ अथ अंतरायकर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्याग ग्रहणसें भिन्नहै सदा स्वरवी भगवान् ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै स्वानुभवपरमान ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ जैसे राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं एक सहस्त्र १००० रुपीयादे परंतु भंडारीनही देताहै तैसेही भीतर अंतह करणमै मनरायनो हुकम करताहै के सर्व माया ममता छोड देउं परंतु भंडारीवत् अंतरायकर्म नहीं छोडंणे देताहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको स्वानुभव इस प्रमाणसे लेणा मैंकेद्वारा जैसे सूर्यमें अंधारा अलगहै तैसे मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवसम्यक् ज्ञानमयी स्वभावसें येह तनमनधन बचन आदिक पापपुन्य जगत संसार अलगहै नयतो इनकूं मै क्या त्यागूं और क्या ग्रहण करूं यदि जैसै सूर्यसे प्रकाश अलग नाहीं तद्वत् मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य

क ज्ञानमयि स्वभावसें येह तन मन धन वचनादिक पाप पुन्य जगत संसा
र अलग नाहीं तोबी क्या त्यागूं क्या ग्रहण करूं अथवा जैसे सूर्य सूर्य
कूं कैसे ग्रहण करै तथा सूर्य अंधकारकूं कैसा ग्रहण करै अर सूर्य अं
धकारकूं कैसे त्यागै तैसैंही मै मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावकूं कैसे त्यागूं
अरग्रहण कैसे करूं बहुरि मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावसें सर्वथा प्रका
रभिन्नहै वर्जितहै त्याजहीहै उसकूं कैसें त्यागूं अरउसकूं ग्रहणबी कैं
से करूं राजा भंडारीकूं कहताहै के इसकूं १००० सहस्र रुपियादे परंतु
येह नही कहता के मै राजाहूं मेरेहीकूं उठाकरिके इनकूं देदे अर्थात् रा-
जा परवस्तूकूं देणे का हुकुम कर्ताहै परंतु अपणा स्वभाव लक्षण देणे-
का हुकुम नही कर्ताहै तैसेंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि
स्वभाव वस्तु अपणा वस्तुत्वकूं नै किसकूं देताहै अर नै किससें स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयी वस्तुत्व स्वभावकूं लेताहै भावार्थ स्वस्व-

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावमै पुद्गलादिक जड अज्ञानम
यि वस्तुका व्यवहार लेणा देणा नसंभवै जैसै सूर्यमै प्रकाशगुण सूर्यस्व
भावहीसैहै तैसै जिस वस्तूमै देखणै जाणनेकागुण स्वभावहीसैहै
सो वस्तु द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्मकूं केवल जाणैहीहै द्रव्य कर्म भाव क
र्म नोकर्म कूं कर्त्ता नाहीं क्यूंके ज्ञानाज्ञानके परस्पर तम प्रकाशवत् तो अं
तर भेदहै बहुरि ज्ञानाज्ञानके परस्पर जल कमलवत् मेलहै बिचार करो ये
ह द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्महै सो स्वभावहीसै अज्ञान वस्तुका भेदहै नाक
र्त्ता केवल ज्ञानस्वभावमै कोणहै बहुरि येह ज्ञानावर्णि आदि अष्टकर्म
है ते सर्वही पुद्गल द्रव्यके परिणामहै तिनकूं केवल ज्ञानमयि आत्मा ना
हीं करैहै जो जानहै सो जानहीहै निश्चय करि ज्ञानावर्णिरूप परिणामहै सो
जैसे गोरसमैं व्यापक दही दुग्ध मिष्ट खाटा परिणामहै तैसे पुद्गल द्रव्यमैव्या
पपणा करिकै होते संते पुद्गल द्रव्यहीकै परिणामहै तिनकूं जैसे गोरसकेनि

कटषेगपुरुष निस्के परिणामकूं देखैहै जानहै तैसेही आत्मा ज्ञानमयि
है सो तीनिपुद्गलके परिणामनिका ज्ञाता द्रष्टाहै अष्टकर्मादिकका कर्त्ता
नाही तो क्याहै जैसे गोरसकेनिकट वेठापुरुष निस्कूं देखैहै निसदेखन-
रूप अपने परिणामनें व्यामपणैरूप होना संताहै निसकूं व्याप्य करिदे
खैहीहै तैसैही पुद्गल परिणामहै निमित्तजाकूं ऐसा अपना ज्ञान ताकूं आ
पनै व्याप्यपणा करि होता ताकूं व्याप्यकरिजानैहीहै ऐसै ज्ञानी ज्ञानहीका
कर्त्ताहै अर्थात् ज्ञानीहैसो अज्ञानमयि वस्तुसें तन्मयि होय करिके कदाचित्
कोई प्रकारबी द्रव्यकर्म भावकर्मनोकर्म आदि अज्ञानमयि कर्मको कर्त्ता ना-
हीं किंबहुना बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नें एक हुवो नैहै
नै होवैगो ॥ ॥ इति अंतराय कर्म विवर्ण समाप्तम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ भ्रांतिखंडन दृष्टांत द्वादशमस्थल प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वस्वरूप सम भावमें नही भरमको अंस ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहे सुगण चेतन निरवंस ॥ १ ॥ ॥ वचनिका ॥ ॥ दृष्टांत दृढनाके अर्थ हैं स्वभाव सम्यक् ज्ञान दृष्टी रहित जीव हैं सो तो आपकूं अरु भरम भ्रांति संकल्प विकल्पकूं येक ही तन्मयि वन् समजता हैं मानता हैं कहता हैं बहुरि कोई जीव गुरूपदेस पाय करिके स्वभाव सम्यक् ज्ञान दृष्टी हुये पश्चात् विभ्रांति भरममें दुःखी होय करिके येह समजत हैं मानत हैं कहता हैं के तन मन धन वचनसें बहुरि तन मन धन वचनका जेता शुभाशुभ वी व्यवहार क्रिया कर्म हैं तासें अनन् स्वरूप भिन्न कोई परब्रह्म परमात्मा ज्ञानमयि सदा काल जागती ज्योति नही हैं ताका समाधानके अर्थ दृष्टांत जैसे कोहू गुरु शिष्य कूं कही के हे शिष्य येह येक ल्वणको पिंड इस जलका भर्या तसला मैं भगूनामें डालदे तब शिष्य गुरु आज्ञानुसार उस ल्वण पिंडकूं तिस ज-

लपूरित तसलाभ गृनामे डाल दीयो येक तरफ येकांतमै रखदीयो पश्चात् दूजा दिवस फिर गुरू शिष्यकूं कहीके हे शिष्य गये दिवस तूं जलपूरित तसलाभ गृनामे लवण पिंड डाला था सो लावो तब गुरू आज्ञा प्रमाण शिष्य सीघ्रतापूर्वक जाय करिकै तिस जल पूरित तसलाभ गृनामे हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगा बहुत बेर पर्यंत तसलाभ गृनामै तिस जलकूं मथन कीयो तथापि लवणानुभव भाष नही हुवो अर्थात् लवण नही दीख्यो तब शिष्य कहीके हे गुरूजी जलमै लवण नाही गुरू कहीके हे शिष्य कहता है के नही है गुरु कहता है के हे शिष्य तूं कहता है के नही है वहांही है फेर शिष्य कहता है के नहीं है तब गुरू कहीके हे शिष्य तिस तसलामै जल है तामैसो तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जल पीवणे लागो कुछ किंचित पीयो पीतप्रमाण शिष्यकूं लवणानुभव तत्समयही हूवो अर कहीके गुरूजी लवण है तेसेही तनमनधन बचनसे बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसै सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागती ज्योति जहां निषेद है तहांहीहै स्वानुभवमा
त्रगम्यहै १ कोईजीव आपकूं ऐसे मानतहै जाएनहै कहतहै के मै सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांतद्वा
रा गुरु समाधानदेताहै हेशिष्य इसभवनमें तूं उच्चास्वरसे अलाप ऐसें
करिके तूंही तवगुरु आग्या प्रमाण शिष्य उस भवनमे जाय करिकै उच्चास्व
रसे कहीके तूंही तव तिस भवनाका सर्वसे प्रति अवाज ध्वनि ऐसीही आ
ईके तूंही तव शिष्यके अंतःकरणमें अचल निश्चय यह हुईके जिस सिद्धप
रमेष्ठी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ताश्रवण कर्ताथा सोतो स्वानुभव मात्र
गम्य मैहीहूं १ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक ज्ञानमयि स्वभावसे भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका समा

धानकेअर्थ गुरूकहताहै तुमारा तुमारेही समीपहै इहां तीन दृष्टांतद्वा
रा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानको अनुभव देताहूं श्रवणकरो जैसै येकस्त्री आ
पकी नथनी नाकमैसे निकाल करिके आपहीके कंठाभरणमे पहरादः
ई पश्चात् घरकार्ये धंदा करणेमै येकाग्र चित्त हुई दोचार घटिका पश्चा-
त् वाऽस्त्री अपणा नाककों हात लगायो तब भ्रांति उस स्त्रीकों येह हुई-
के मेरी नथनी मेरेसमीप नही हाय मेरी नथ कहांगई इत्यादि भ्रांतिद्वा
रा दुःखित हुई श्रीगुरुके चरण सरण आई अर गुरूसे कही के स्वामी मेरी
नथ मेरे समीप नाहीं नहीजाणुं कहागई तब गुरूकही तेरी तेरेही समी
पहै देख इसदर्पणमे तब वास्त्री दर्पणमै स्वमुख देखणे लगी तत्समय
ही स्वकंठाभरणमे लगीहुई नथ अपणी आपके समीप देखकरिकेस्त्री
गुरूसे कहीकेहे स्वामी मेरी मेरेही समीप नथहै ऐसेही सिद्धपरमेष्टीसें
सिद्धपरमेष्टी भिन्न नाहीं प्रश्न मैंनो सिद्धपरमेष्टीसेभिन्नहु उत्तर

जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तद्वत तूं सिद्धपरमेष्टीसे भिन्नहै तबतो तूंको
ड तप जप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संतेवी क
दाचित् कोई प्रकारवी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहुवो नहोयेगो नहै बहु
रि जैसे सूर्यसे प्रकास येक तन्मयि अभिन्नहै तद्वत् तूं सिद्ध परमेष्टीसे ये
क तन्मयि अभिन्नहै तोवी तूं सिद्ध परमेष्टिसे येक तन्मयि अभिन्न होणे केअ
र्थ कोड जप तप व्रतशील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करने संतेवी
कदाचित कोई प्रकारवी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहोवेगो नहुवोयोन
है १ सिद्ध परमेष्टीसे येकताको अर भिन्नताको येह दोहूही भ्रांति विकल्प
ना स्वभाव सम्यक् ज्ञानमै कदापि नसंभवै १ जैसे कंठमै मोतीकी मालाहै
सो मोतीकी माल मोतीकी मालके समीप तन्मयिहीहै ताकूं भरम भ्रांतिसे
अन्यस्थानमे खोजताहै ताकूं गुरु कहीके अन्यस्थानमे मोतीकी माल ना
हीं तेराही कंठमे मोतीकी मालहै सो मोतीकी मालसै तन्मयिसमीपहै ऐ

सेही सिद्ध परमेष्टी हैसो सिद्ध परमेष्टीसै तन्मापि समीपहै १ जैसे सूर्य
के देखणेसै सूर्यकी निश्चयता सूर्यानुभव होताहै तैसैही सिद्ध परमेष्टी
परमातमा सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकूं देखणेसे सिद्ध परमेष्टी पर
मातमा सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकी निश्चयता स्वानुभव नाहोती
है १ जैसे सुवर्णका कडा मुंदडा कंठी दोरा असरफी आदि सुवर्णसे
निश्चय स्वभाव दृष्टीमे देखियेतो भिन्न नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टी परमातमासे निगोदसे लेकरिके-
मोक्ष पर्यंत जेती जीवराशि येकेंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंतहे सो निश्चय स्व
भाव दृष्टिमे देखियेतो भिन्ननाही १ अपूर्वानुभव देताहूं श्रवण करो
कोईजीव आपकूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्न समजताहै अर आपहीकूं सि
द्ध परमेष्टीसे अभिन्न समजताहै ऐसी येह दोऊ कल्पना जिस जीवके अं
तःकरणमे अचलहै सोजीव मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे लोकीकमे येह कहे-

एणा प्रसिद्ध है के देखोजी तुमसमज करिके काम कार्य कर्म कर्ता तो तुमारे
येह नुकसाण किस वास्ते होने अर्थात् सत् गुरुका उपदेस वचन द्वारा को
ई जीव आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान
मयि स्वभावकूं समजकरिके पूर्वप्रयोगात् शुभ असुभ काम कार्य कर्म
कर्ता है ताका सम्यक् ज्ञान स्वरूपी धनको कदापि नुकसाण होणे को नाहीं
१ जैसै लौकीकमें येह कहणा प्रसिद्ध है के देखोजी रस्ता मार्गमै कंटका
दिक विघ्न बहुत है बचकरिके जाणा तैसेही कोईजीव सत् गुरु उपदेशव
चन द्वारा आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञा
नमयि स्वभावकूं तनमन धन वचनसे वद्धा तन मन धन वचन काजेता
शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मसें बचाय करिके बच करिके फेर तीनसै ते
तालीस राजू प्रमाण येह लोक तामे बचकरिके भ्रमण करै तोबी स्वभा
व सम्यक् ज्ञान है सो संसारमे फसणेको नाही १ जैसे चक्की कापाटकेऊ

पर बैठी मखीहै सो चक्की को पाट चोतरफ गोल फिरताहै ताके ऊपर बै
ठी मखीबी फिरतीहै तैसैही स्वभावसे अचल सम्यक्‌ज्ञानमयि परमात
मा संसार चक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचलको अचलहीहै १ जैसे स
मुद्र स्वभावमें जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके कीनारो ह
द्द प्रमाणहै वास्ते समुद्र बंध्योहै बह्वी समुद्रकूं कोई बंध कर्‍यो नाही वा
स्ते सोही समुद्र मुक्तहै तैसैही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बं
ध मुक्तहै स्वभाव सम्यक्‌ ज्ञानमें स्वानुभव दृष्टीमें देखिये तो बंधमुक्त·
तो दूरही रहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको अंसबी नसंभवे १ जैसे सूर्य
के भीतर अंधकार नाही तैसे येह जगत् संसार स्वानुभव सम्यक्‌ज्ञान·
मयि सूर्यके भीतर नाहीं १ जैसे सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयि
तानाही तैसेही ज्ञानमयि परमातमाका अर जगत संसारका येक तन्म·
यितानाही १ जैसे बकरी मंडलीमे जन्मसमय सेही भरमसे पर वसान्

सिंह रहताहै अरदूजो सिंह जंगलमै स्वाधीन रहताहै दोहूही सिंहकी-
जाति लक्षण स्वरूप नामादिक येकहीहै परंतु परस्पर अभेदमै भेदनि-
श्चयहै तैसेही निगोदसै लेकरिकै मोक्ष वा सम्यक्ज्ञान स्वभाव पर्यंत जी
व राशि नाम जाति लक्षणादिक युक्त येकहीहै परंतु परस्पर अभेद स्वरू
पमै भेदहै येह भेदबुद्धि अरभेद बुद्धीकी कल्पना येह विघ्न दूरव सतगुरू
के चरणकी सरण होणेसैं मिटैगा १ जैसै येक मोटा चोडा लंबा बहुत वि
स्तीर्ण परमाणका स्वच्छ दर्पणमे अनेक प्रकारकी अनेक चलाचल रंग-
बिरंगी वस्तु दीखेहै तैसेही स्वच्छ ज्ञानमयि दर्पणमे येह अनेक विचि
त्र मयि जगत संसार दीखताहै १ जैसै सूर्यका प्रकासमे कोई पापकर्ता
है कोई पुन्य कर्ताहै कोई मर्ताहै कोई जनमताहै इत्यादि नाकाशुभाशु
भ पाप पुन्य जन्म मरणादिक सूर्यकूं लागतानाही सूर्यसे येह जन्म मर
ण पाप पुन्य तन्मयि होतेनाही तैसैही सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावसूर्यका

प्रकासमे पाप पुन्य जन्म मरण कर्मादिक शुभाशुभ होतेहै ताका फल
अर मूलादिकहै सो सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्यकूं पहोंचतेनाही ला
गतेनाही तन्मयि होतेनाही १ जैसै सूर्यके इच्छा सूर्यकूं देखणेकी नसं
भवै तैसेही ज्ञान मयि परमातमा कूं ज्ञान मयि परमातमा देखणेकी इच्छा
नसंभवै १ जैसे धोबी निर्मल नीरका भर्‍या तलावमे कपड़ा धोताहै ता
कूं लागी जल पीणेकी पिपासा सो मूर्ख धोबी बिचार कर्ताहैके येह २ दो
य बस्त्र धोय पश्चात् जल पीऊंगा दोय बस्त्र धोये पश्चात् फेरबी येही बिचा
र कीयाके येह धोय पश्चात् येह धोय पश्चात् ऐसे अनुक्रम संकल्प बिचार
करतो करतो धोबी निर्मल नीरको निर्मल नीरद्रहमै धोबी मरगयो परंतुजल
नही पीयो तैसेही सर्व जीव राशि निर्मल सम्यक् ज्ञानमयि जलका भर्‍यास
मुद्रमै परवस्तुको उजल कर्ताहै येह करे पश्चात् गुरुके उपदेस द्वारा सम्यक्
ज्ञानरूपी नीर पीयकरि सुखी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक् ज्ञानमयि नीर

गुरुपदेसात् पाउगा ऐसें करते करते मरण करिकै कहांके कहां चले जा तेहै १ जैसे धोबी मैला कपडा वस्त्रकूं साबुण क्षार शिलादिक निमनसै धोताहै परंतु धोबी वस्त्रसै साबणसै क्षारसैं शिलादिकसैं तन्मयि होय नही। धोताहै तैसैंही। शुभके लगी अशुभ कालिमाताकूं सम्यक दृष्टी धोताहै परंतु सम्यक्दृष्टी शुभाशुभसैं अर शुभाशुभका जेता व्यवहार क्रियाकर्महै तासैं तन्मयि होयनही धोताहै॥ ॥दोहा॥ ॥ भेदज्ञानसाबणभयो समरसनिर्मलनीर॥ धोबीअंतर आतमा धोवैनिर्मलचीर॥१ जैसे कोरा नवीन पक्का माटीका कलसके ऊपर पवन प्रसंगात् रेणु आय लागैहै तैसैं सम्यक् दृष्टीके कर्म रेणु आयलागतीहै १ जैसे बहुत वर्षसे भर्यो तेलघृतिनचीकणो माटीका कलस ताकेऊपर पवन प्रसंगात् रज रेणु आय लागतीहै तैसैं मिथ्यादृष्टीके कर्म वर्गणा आये लागतीहै १ जैसे कोई मूक पुरुषका मुखमैं मिश्री गुड खांड डालदियां मूक कूं मिष्टानुभव हुवो

परंतु कहनहीसक्ता तैसैही कोई जीवकूं गुरुपदेशात् आपका आपकूं
आपमें आप भयि स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव हुवो परंतु कह नहीसक्ता

१ प्रश्न गुरु स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव कैसे देना होगा उत्तर
गुरुकी गुरुही जाणै तथापि कुछ कहताहूं जैसें कोई चंद्र दर्शणकोइ-
च्छुक गुरुसें बूझीके चंद्र कहांहै तब गुरु कहीके वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके
ऊपर इत्यादिक अनेक प्रकारसें गुरु स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव देताहै
१ जैसें किसी पुरुषकी स्त्री अपणे भरतारसें कहीके तुम इस बालककूं
लडावो गोदमें लेवो तोमें घरकार्य करूं तब वो पुरुष स्वपुत्रकूं अपणी गोद
में लेकरि लडाणे लाग्यो ततसमय बालक रुदन करणे लागो तब पुत्रको
पिता तिस बालककी थिरता रुरवके अर्थ कहताहैके हे पुत्र रुदन मति·
करै यहां अपणी माता बैठीहै इहां विचारणा चाहियेकी माता तो तिस
बालककीहै पुरुषकी नाहीं पुरुषकी तो स्त्रीहै ऽ स्त्रीकूं माता कहणा व्य·

वहार विरुद्ध है तथापि बालककी स्थिरता करवेके अर्थ वो पुरुष व्यवहार-
विरुद्ध बचन बोलताहै तेंमेंही शिष्य मंडलीकेमध्य स्थिरताके अर्थ गुरु
स्यात् अपभ्रंश बचन बोलताहै हेतुगुरुका उत्तमहै १ जैसे अग्नीमें क-
पूर चंदनादिक डालदीजियेंतिसकुंवी अग्नीजलयदेतीहै वहारि चर्म मला
दिक डालदीजिये तिसकुंवी अग्नी जला देतीहै तेंमेंहो सम्यक् ज्ञानाग्नि
विषै येह शुभाशुभ पाप पुन्यादिक जल जातेहै अर्थात् नहीरहताहै १ जै
से येकजात येक लक्षण येक स्वरूप येक तेज येकगुणादिक युक्त रतनरा-
सि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह रतन भिन्न भिन्न तथा जैसे अग्नी
का अंगाराकी रासि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह अंगारा भिन्नभि
न्न तेंमेंही जीव राशि भिन्नभिन्नहै गुण लक्षण जाति नामादिक सर्वका ये-
कहै १ जैसे दधी मथन करिके तिसको माखण निकास करिके पीछाको पी
छो तिस छाच तक्र मह्वामें डालदेतोबी वो माखण छाच तक्रमें मिल करि-

के येक होणेको नाही तैसैही गुरु संसार सागरमैसै जीवकूं निकास क·
रिकै पीछाको पीछो संसार सागरमै डाल देवैतोबी वोजीव संसार साग
रसै अग्नी उष्णतावत् मिल करिकै येक होणेको नाही १ जैसै किसीके
पास सर्पका जहर विष निवारणी वुटी जडी मंत्रसमीपहै वो सर्पसै नही
डरताहै तैसै किसीके पास स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान तन्मयिहै वो संसार-
सर्पसै नही डरताहै १ जैसै कुंभकारका चक्र दंडादिक प्रसंगात् फिरताहै
बहुरि दंडादिक प्रसंगात् भिन्नहुये पश्चात्‌बी वोचक्र कुछ किंचित् काल
पर्यंत फिरवि फिरतारहताहै तैसैही कोईजीवका ४ च्यार घातिया कर्म
भिन्नहुये पश्चात्‌वो पूर्व प्रयोगात् कुछ किंचित् काल पर्यंत संसारमै भ्रम
ताहै १ जैसै रूकी गोवरी छाणा कंडाके येक कणिका माभवी अग्नी लाग
गई तो सो अग्नी तिस रूकी गोवरी छाणा कंडाकूं अनुक्रमसे जलायक
रिकै भस्मकरि दतीहै तैसैही कोईजीवकै गुरुप देशात् येक समय काल

मात्रबी सम्यक् ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावैगी तो अष्ट कर्मादि ना
मकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात जो रहणे जोगहै सो को सोही स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु अखंड अविनासीर
हगा १ जैसे काष्ट पाषाण चित्रामकी स्त्री आकार पूतलीकूं कोई कामी
तीव्र काम राग भावमें देखते देखते ताको वीर्यबंध छूट जाताहै तैसेही
कोई धातु पाषाणकी पद्मासण षड्गासण ध्यानमुद्रायुक्त वैराग सूचक
मूर्तिकूं कोई मुमुक्ष तीव्र अपणा वीतराग भावसहित देखैतो तत्काल ताका
अष्टकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसे व्यभिचारणी स्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती
है परंतु ताके अंतःकरणमें वासना व्यभिचारि पुरुषकी तरफ लगी रहती है तै
सेही सम्यकदृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारीक काम कार्य कर्ताहै परंतु अं
तःकरणमें ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
कीहै अर्थात स्वसम्यक ज्ञानकूं अर आपकूं अग्नि उष्णतावत् येक तन्मयि

समजनाहै माननाहै १ जैसै गुमास्तो दुकान वा कोठीको काम कार्य रा
गद्वेष ममता मोहयुक्त कर्ताहै परंतु ताके अंतः करणमें अचल येह है के
येह धन परिग्रह वहुरि धन परिग्रहका शुभाशुभ फल मेरा नाहीं सेठ
काहे तैसेही सम्यक् द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारका शुभाशुभ व्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेष ममता मोह सहित कर्ताहै परंतु ताके अंतः
करणमें अचल दृढ अवगाढ येह हैके येह संसारका जेता शुभाशुभ व्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेषादिक हैसो वहुरि ताका शुभाशुभ फलहै सो
मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका तन्मयि
नाहीं येह संसारका शुभाशुभ कर्मादिकहै सो सर्व तन मन धन वचन
सैं तन्मयिहै तिसीहीकाहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमें अग्नि वहुरि जलकी
प्रतिछाया दीखतीहै ताकरिके वो दर्पण उष्ण शीतल नहीहोतो तैसे·
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमें संसारका

शुभाशुभ क्रिया कर्मकी प्रतिच्छाया आप होतीहै तोकरिके वो स्वच्छ-
सम्यक् ज्ञानमयि दर्पण राग द्वेषसे तन्मयि होते नाही। १ जैसे आकास-
मे काला पीला लाल मेघ बादल बीजली आदि अनेक विकार होताहै अ-
रबिगडताहै तोकरिके आकाश विकारी नही होताहै तैसेही स्वसम्यक्-
ज्ञान मयि आकाशमे येह क्रोध मान माया लोभादिक होते संतवीसोस्व
सम्यक ज्ञानमयि रागद्वेषादिकसे तन्मयि होते नाही १ जैसे जिस घरमे
अग्नी लागेगी तोघर जलैगा बलैगो परंतु घरके भीतर बाहिर आकाशहैसो
कदाचित् कोई प्रकारवी जलैगा बलैगा नाही तैसेही देह रूपी घर तथा स-
रीर घरमे आधिव्याधिरोगादिक अग्नि लागेगी तो देह सरीर घर जलैगो ब
लैगो परंतु देह सरीरके वा लोका लोकके भीतर बाहिर स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि निर्मल आकाश वनहै सो कदाचित् कोई प्रकारवी जलैगो बलैगो वा
मरैगो जन्मैगोनाही। १ जैसे सूर्की गोवरीके कणिकामात्रवी अग्नी ला-

गजावैतो तिस अग्नी प्रसंगात् सोसूकी गोवरी अनुक्रमसैं जलजानी·
है तैसैही कोहू जीवके सत्गुरु वचनोपदेस द्वारा येक नेत्र टीमकाग·
वा येक समय कालमात्रवी सम्यक् ज्ञानाग्नी तन्मधि लाग जायतो तिस
जीवका द्रव्यकर्म भावकर्मनोकर्म अनुक्रम पूर्वक जल्जाय वल्जाय इ
समैं कदाचित् कोई प्रकार संदेह नाही १ जैसें कोहू स्त्री अपणा स्वभ
र्तारकूं त्यज करिके अन्य पुरुषकी सेवा रमण आदि कर्तीहै सो स्त्री व्य
वचारणी मिथ्यातणीहै तैसैंही कोहू अपणा आपमें आपमांहि स्वस·
म्यक् ज्ञानमयि देवकूं त्यज करिके अज्ञानमयि देवकी सेवा भक्तिमें लीं·
नहै सो मिथ्यातीहै १ जैसैं कोहू मदिरा वारुणी पीवणेका सर्वथा प्र·
कार त्याग करेगा तव मदोन्मत्त पणाका त्याग संभवेगा तैसेंही कोहू जीव
जाति लाभ कुल रूप तप वल विद्या अधिकार येह अष्टमद सर्वथा प्रका
र त्यागेगा तव निश्चय मार्दवजो स्वसम्यक् ज्ञान गुणहै तासें तन्मयि होवे·

गा १ जिसके तिल तुसमात्र परिग्रह नाहीं। अर पंच प्रकारका सरीर न नहीं तासें कदाचित कोई प्रकारयो तन्मयि नाहीं सोही सतगुरु है १ जैसे कोइ मद भंगादिक पीय ताकरिके मदोन्मत्त है ताकू लोकीक जन ऐसें कहते है येह मतवाले है तैसे है। कोई अपूर्व मान मद मदिरा पीय करिके मदोन्मत्त होरह्याहै येह जैन मतवाले वैष्णु मत वाले शिव मतवाले बौद्ध मतवाले इत्यादि बहुरि इनकूं कोइ कहैके तुम कोणहो तबवह स्वमुखवान् अपणा आप कहताहैके हम जैन मत वाले हम वैष्णु मतवाले हम शिव मतवाले हम बौद्ध मतवाले इत्यादि येह मतवाले स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुसें तन्मयि नाहीं २ जैसें सूर्य अपणा स्वभावगुण प्रकास नहीं छांडे तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान अपणा ज्ञान गुणकूं न छांडे १ जैसें कोइ केवल अंगके ऊपर ओट करि मधु छताकूं तोडणे लागे ताके तत् समय सहस्रादिक लगी मधु मक्षिका तथापि वो पुरुष अडंक रह

ताहै तैसेंही कोहूजीव गुरुबचनोपदेशात् स्वसम्यक्ज्ञानानुभव कंब
ल ओढलीनी ताकेपेह संसार माखिकानही लागती १ जैसे कागपक्षी
बोलताहै तैसेंही किसीकुं स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी तन्मयिता परमाव
गाढतानो हुईनही अर बडे बडे वेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पढतेहै सोका
क भाषितमवत्व १ जैसे कस्तूर्‍या मृगके समीपही कस्तुरीहै परंतु क-
स्तुरीकी सुगंध नासिका द्वारा धारण करिकें कस्तुरीकुं इदर उदर जंगल
मे खोजता फिरताहै धावता दौडताहै तैसेंही जीवके समीपही जीवसैं त-
न्मयि स्वसम्यक्ज्ञानमयि परमातमाहै ताकुं जीव आकास पाल लोका
लोकमै खोजताहै अज्ञानी जीवकूं येह खबर नाहीं के जिसकुं मै खोजता
हूं सो बस्तुतो मेरी मेरेही समीपहै मेरा स्वसम्यक्ज्ञानसैं तन्मयिहै वामेंही
स्वसम्यक्ज्ञानमयि परमातमाहूं १ जैसे इंद्रजालका खेल मिथ्याहै तै-
सैंही येह संसारका खेल मिथ्याहै स्वसम्यक्ज्ञानमयि परमातमा सत्यहै

१ जैसे कुभाकी माया कूटीहै तैसेंही संसार की मायाकूटीहै स्वसम्यक्ज्ञा
नमयि परमानमा सत्यहै १ जैसें जहां देह नहीं तैसें तहां जन्म मरण नामा-
दिक नाहीं अर्थात जहां देहहै तहांही तिनसें तन्मयि जन्म मरण नामादिक
है १ जैसे चलती चकीका दोनु पाटके बीच जेता गहूं चीणा मुंग उडद आदिधा
न्य सेपथे तं सर्व पिस जाते है आटो हो जातो है येक कण दाणु बी नही बचता
है परंतु उसी चलती चकीमें कोई कोई बीज लोहाका कीलाके नजीक रहता-
है सो बच जाताहै तैसेंही संसार चक्रके बीच पड्याहै जीव सोतो मरणादि
क होग हो करि नर्क निगोदमें जाय पडतेहै परंतु कोई कोई जीव गुरुबचनो
पदेस द्वारा आपका आपमें आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाके
तन्मयि शरण हो जायहै सो जीव जन्म मरणके दुःखसें बचजातेहै १ जैसेंस
र्पणी १०८ पुत्र जणतीहै जाणिकरिके गोलाकार आपणी देह गोलाकारके
बीच सब पुत्र समुदाय कूं राखि करिके अनुक्रमसे सर्बकूं भक्षण करिजा

नीहै परंतु कोईकोइ गोलाकारमै निकस जातोहै सोबच जातोहै तैसैही उत्सर्पणी अवसर्पणी का गोलाकारमैसै कोइ जीव निकस करिके भिन्नहु वो सोतो बच्यो शेषरहेसो उत्सर्पणीका अवसर्पणीका मुखमैरहै १ जैसे बांऊऽस्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका आदि अंत पूर्वापर सर्व विवर्ण श्रवण करा यो तथापि तिस बाऊऽस्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका कदाचित् कोई प्रकारबी साक्षात अनुभव होते नाही तैसेही कुन मिथ्यादृष्टिकूं स्वसम्यक् ज्ञानोत्पत्तीका पूर्वापरविवर्ण श्रवण करावो तथापि ताकूं सम्यक् ज्ञानोत्पत्ति को साक्षात् अनुभव होते नाही १ जैसे किसीको नाक छिन खंडनहै ताकूं कोई दर्पण दिखावैतो वोनाकछिन अपणादिलमें येह विचार करैके मेरो नाक छिनहै इसी वास्ते यो मेकूं दर्पण बतावैहै तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं स्व सम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा अयोग्य १ जैसे बांऊ स्त्रीकूं पुरुषका संयोग होतेसंतेबी पुत्र फल लाभानुभव नही होताहै तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं

देव गुरु सास्त्र सत पुरुषांको सतसंग होनेसं ने बी स्वसम्यक्ज्ञान फल
लाभानुभव नहीं होताहै १ जैसै हंस दुग्ध पाणी मिले हुयेकूं भिन्नभि
न्न समजताहै तैसै स्वसम्यक् ज्ञानी येह लोकालोक कूं आपका आपमै
आपमधि स्वसम्यक् ज्ञानकूं भिन्न भिन्न समजताहै १ जैसे स्वप्नाअव-
स्यामै घरकुटुंब बेटा बेटी ऽस्त्री मातापिता धनधान्यादिक दिखताहै-
ताकूं जाग्रत समय देखियेतो नहीं दिखताहै अर्थात् स्वप्ना अवस्याका मा
ता पिता स्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते है ताका दुःख हर्ष सोक जाग्रत अव
स्यामै नहीं होते तैसेही जाग्रत अवस्था समयका माता पिता ऽस्त्री पुत्रा
दिक है सो स्वप्नामै नही दीखताहै अर्थात् जाग्रत अवस्था समयका मा-
ता पिता ऽस्त्री पुत्रादिक सर्व मरजानेहै ताका दुःख हर्ष सोक स्वप्नाअव-
स्यामै नहीं होते १ सदाकाल देखना जाणताहै ताके सन्मुख येह स्वप्ना
समयका अर जाग्रत समयका संसार होताहै बिगडताहै १ जैसे स्वप्नास

मय कोई किसी को मस्तग छेदन कियो मारगेस्यो तिस समय आपकूं-
मस्यो समज्यो मान्यू सोही जाग्रत हुवो नब कहणे लाग्यो के मेस्वप्नामे
मरगयोथो तैसैही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाकारवेलहै इस-
खेल का तमासा देखना जाणताहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानहै १ जैसें म नचाला स्वमानाकूं माताही कहताहै परंतु ताकोधि
श्वास क्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणी स्त्री मानलेतो प्रमा
णक्या तैसैही येह मनि मंदिरामे मदोन्मत्त येह जैन मतिवाले बैष्णुमति
वाले शिव मतिवाले वेदांतमतिवाले बौद्ध मतिवाले आदि षट् मतिवा
ले है सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं और
सै और प्रकार मानलेकहु देवेतो प्रमाणक्या १ जैसें माटीका झूटा घोट
कसैं बालक प्रीत कर्ताहै सोबी दुःखीहै बहुरि कोहु सत्य साचा घोटकसे
प्रीत कर्ताहै सोबी दुःखीहै कारण उसका घोटककू कोहु तोडे फोडे अर-

तिसका घोटककूं बी कोई चारो दाणु नदे वा ताडै तैसैही कोहूजो माटी-
की पत्थरकी चित्रामकी काष्टकी झूटी देव मूर्तिसें प्रेम प्रीत कर्ताहै सोबी
दुःखहीको कारणहै बहुरि कोऊ सत्य साचो देवहै तासें बी प्रेमप्रीत कर-
ताहै सोबी दुःखहीको कारणहै अर्थात् स्वसम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसें
भिन्नहोय करिकें परवस्तुमें प्रेम प्रीत करैगा सो दुःखानुभवमें लीनही
रहैगा १ जैसें येक पुरुष पाषाण का देव मूर्तिकूं अर धातुमूर्ति देवकूं
बहुरि काष्टकी देव मूर्तिकूं अर चित्र देव मूर्तिकूं बडे प्रेमभावसें ताकी पू
जा प्रणाम कर्ताथा दैववसात् पाषाणकी मूर्तितो फूटगई तूटगई अर
धातुकी देव मूर्तिकूं चोर तस्कर लेगये बहुरि काष्टकी देवमूर्ति अग्नीमेंज
ल बल करिकें भस्म होगई अर चित्रामकी मेघ पवन वा हस्त स्पर्शात् द्वारा
बिगड गई अर्थात् धातु पाषाणादिककी देवमूर्तिमें नष्टहोणा आदिअने
कदूषण मनक्षानुभव होना देख करिकें अपणो आपमें आपमयि स्वस-

म्यक ज्ञानानुभवगम्य स्वभाव स्वरूप आपहीकूं देव समज करिके चुप
चाप रहे १ जैसें कोइ पुरुष किसी साहूकारकी दुकानको द्रव्य सुवर्ण
रतनादिक दूरसें देख करिके कहीके मेरेकूं येह जेता द्रव्य रतनादिक मे
रेसे दूर अलगही दीखताहै ताका मेरे त्यागहै तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभ
वगम्य सम्यक् केवल ज्ञानहै ताके येह संसार लोकालोकका स्वभावहीसें
त्यागहै १ जैसें कोई द्रव्यार्थि पुरुष राजाकूं जाण करिके ताकी दृढ श्रद्धा
करिके राजाके अनुस्वार चलताहै रहताहै ताकूं राजा द्रव्य देताहै तैसेही
कोइ जीवहै सो प्रथम स्वसम्यक् केवल ज्ञान राजाकूं अपणा स्वभावगु
णसें तन्मयि समजकरिके जाण करिके ताकी दृढ परमावगाढ श्रद्धा करिके
केवल ज्ञान राजाके अनुस्वार चलताहै रहताहै ताकूं केवल ज्ञान राजस्वभा
व सम्यक् ज्ञानमयि मोक्ष देताहै १ जैसें संस्कृत भाषामें मलेंछ नहीं स
मजे तोहोवैतो मलेंछकूं मलेंछी भाषामें समजावणा तैसेही अज्ञानी

कूं अज्ञान भाषामें समजावणा १ जैसें कोईक हैके दोहुराजा परस्पर युद्धकरिरहाहै विचारसें देखियेतो परस्परकी फोज लडनेहै दोहुराजा तो अपणे अपणे स्वस्थानमें निमग्नहै तैसेंही ज्ञान अज्ञान दोहुही अपणो अपणा स्वस्थानमें अपणे अपणे स्वभावमें निमग्नहै अपणे अपणेस्वभावहीमें १ जैसे कोहू कहके राजाइस गांवकूं लूटताहै जलादीयो इसगांवकूं बालदीयो इस गांमकूं बचादीयो इसग्रामकी रक्षाकरी परंतु विचारसेंदेखियेतो लूटणे मारणे बचाणेका जलाणेका इत्यादिक कार्यहै ताकूं फोज सिपाई जमादार फोजदार आदि कर्तेहै राजा नहीकर्ताहै तैसेंही स्वसम्यक् केवलज्ञान राजाहै सोकिंचिन् वी शुभाशुभ क्रिया कर्म नही कर्ताहै १ जैसे सुवर्णका सुवर्णमयि भावकटिकूंडलादिकसुवर्णमयिही होताहै बहुरि लोहाका लोह मयिही होताहै तैसेंही स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानका भाव क्रिया कर्म सम्यक्ज्ञानमयिही होताहै बहुरि तैसेंही

अज्ञानका भाव क्रियाकर्म अज्ञानमयिही होताहै १ जैसै मातंग चांडा
लकी बहुरि उत्तम ब्राह्मणकी क्रिया कर्म भाव येक नाही किंतु भिन्नभि
न्नहै तैसै ही ज्ञानअज्ञानकी क्रियाकर्म भावयेक नाही अर्थात् भिन्न भिन्न
है १ जैसे कोहू पुरुष अहार कीयो सो अहार उदराग्नि प्रसादात मांसरु
धिर मज्जा मल मूत्रादि होयहै तैसै ही जिसके गुरु वचनोपदेस द्वारा साक्षा
त् अंतःकरणमैं सम्यक् ज्ञानाग्नि प्रज्वलित भई ताके सर्व कर्म स्वमेवही अ
पणी अपणी प्रणतीमैं प्रणवहै १ जैसे वैद्यके समीप विष नासनी दवा
है वो वैद मरण होणे जोग विष भक्षण करते संतैवी मरतो नाही तैसै हीस्व
सम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म नियोगात् विषय भोग भोगते संतैवी कर्मसे बंधतो
नाही १ लौकीकमें प्रसिद्ध है जैसे कोहू स्त्री कुं भोगे सो पुरुषहै तैसेही क्रो
ध मान माया लोभ मोह ममता मायाकुं भोगेसो सत्य पुरुषहै बहुरि जिस
की छातीके ऊपर यह क्रोध मान माया लोभ मोह ममता मायाचढरहीहै

सो पुरुष नहीं वो सत्यस्थी है १ जैसें सुवर्ण कर्दमके बीच पड्याहे तोहु सुवर्ण कर्दमसें येक तन्मयि लिन होणेको नाही तैसें ही स्वसम्यक ज्ञानी सम्यक द्रष्टी सर्व कर्मके बीच पड्याहै तोभी सर्व कर्मसें तन्मयि नहीं लपटताहै १ जैसें घटके भीतर बाहिर मध्य आकाश है सो घटोत्पत्ती होते संते तो घट उपजतो नाही बहुरि घटको नास होतेसंते आकासको नास नहीं होते तैसें ही स्वस्वरूप सम्यक ज्ञान मयि परमातमाहे सो देहको बिनसते संतेंनो बिनसतो नाही मरतो नाही बहुरि देहके उपजते संते उपजतो नाही जन्मतो नाही १ सहज स्वभावहीसें आपा परकुं जाणताहे सोही स्वसम्यक ज्ञानहै १ जैसें तुषहे सो तंदुल नाही तैसें ही पंच प्रकार का सरीर देहहे सो स्वसम्यक ज्ञानमयि परमातमा नाही १ जैसे बांससें बांस परस्पर घृष्ट होवेहे तब अग्नी सहज स्वभावहीसे उत्पन्न होतीहे तैसेंही आत्मासे आत्मा तन्मयि मिले तब सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक ज्ञानाग्नि

उत्पन्नहोतीहै १ जैसे सूर्योदय समयस्वमेवही कमल प्रफुल्लित होता
है तैसेही किसीके अंतःकरणमें स्वसम्यक ज्ञानमयि सूर्योदय होनेसं
ते मनस्वरूपी कमल प्रफुल्लित होताहै भावार्थ मनमें वडीकुसी हर्षहो
ताहै के हाहाहाहा जिसके प्रकाशमें येह लोकालोक प्रगटदीखताहै
ऐसा सूर्यका दर्शण लाभहूवा अथवा विशेष हर्ष प्रफुल्लित पणो ऐसो
केजिस सूर्यका प्रकासमें येह लोकालोक जगत संसार जन्म मरण ना
नानाम बंध मोक्षादिकहै सो सूर्य स्वभावहीसे मेंहीहूं १ जैसे फोजतो
है परंतु तामें फोजदार नांही तो वाफोज वृथाहै तैसेही व्रत शीलजप तप
ज्ञान ध्यान दया क्षमा दान पूजादिकतोहैं परंतु तामें स्वसम्यक ज्ञानमयि
गुरू नही तो वह व्रत शीलादिक वृथाहै १ जैसें कोइ ऽस्त्री को भर्तार परदे
समें जाय करिके तत्रस्थलही मरगयो अब वास्त्री तिस भर्तारकी आसाध
रण करिके भोगादिक उत्पत्तीका सिणगार काजल टीकी मेंदी नथनी आदि

सिणगार करनीहै सो वृथाहै तैसैही मोक्षमै गये स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानसै
तन्मयि होगये निर्ग्रंथगुरु सोतो अब पलट करिकै पीछा आते नाही जैसैल
वणकी फूतली क्षार समुद्रमै गई सो पलट करिकै आती नाही तदवत्‌ही स
मजणा अब चलेगये निग्रंथ गुरू ताकी आसा धारण करिकै संसारिक शु
भाशुभ भोगादिक उत्पत्तीका शुभाशुभ क्रिया कर्मादिक करणा वृथाहै १ जै
सै कोहू जन्मसमयसै लगाय अद्यपर्यंत गुड शर्करा रवाईनाही अरगुड स
र्कराकी वार्ता विवर्ण कर्ताहै सो वृथाहै तैसैही कोहू कदाचित् काहू प्रकार
बी स्वस्वरूप स्वयंसिद्ध सम्यक् ज्ञानमयि परमानमासै तो तन्मयि हुये नाहीं
अर उनका गीत वेद पुराण सास्त्र सूत्र स्वमुरवान् पढताहै बोलताहै कहताहै
सो सूकपक्षीवत वृथाहै १ जैसै सीलवंतीस्त्री स्वघर त्याग कोई काल पर
घर प्रतिबी जावै आवै तोबी फिकर नाही तैसैही स्वसम्यक्‌द्रष्टी पूर्वकर्मप्रि
योगात् कुछकाल संसारमैभी भ्रमण करै तथापि फिकर नाही १ जैसे सूर्यो

दी-

दय होते प्रमाण तत्काल तत्समयही अंधकार उपसम होजातेहै तेसेंही किसीके अंतः करणमै स्वसम्यक्ज्ञान सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल तत् समयही मोहांधकार उपसम हो जातेहै १ जैसें व्यभचारणी स्त्री अपणा स्वघर त्यागकरिके परघर नही जाती आतीहै तथापि ताकी वासना व्यवचारी पुरुषकी तरफलगी रहतीहै तेसेंही जिसकूं स्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता अवगाढ परमावगाढता नाही ऐसा मिथ्यादृष्टीकी वासना भाव शुभाशुभ संसारकी तरफलगी रहतीहै १ जैसें जिस कोठी वा दुकानकी कामकार्य सेठ कर्ताहै ममता माया मोह सहित तेसेंही गुमास्तो ममता माया मोह सहित कर्ताहै परंतु भीतर परिणाम भेद भिन्न भिन्नहै तेसेंही किसी कूं गुरु वचनोपदेशात स्वसम्यकज्ञानानुभव होणे जोग होचुके थकतो ऐसो बहुरि दूजा ऐसोके संसारकूं वा लोकालोककूं बहुरि अपणा स्वभाव सम्यकज्ञानकूं एक सूर्य प्रकासवत निश्चय समजतो

है मानताहै दूजोंऐसा तेदोहूही संसारका कार्य कर्म कर्ताहै तामें येक दोषी
दूजो निर्दोस १ जैसें मूकपक्षी स्वमुखात् रामरामराम बोलताहै परंतु स्वस्व
रूप सम्यक्ज्ञानमें तन्मयि बीज वृक्षवत् तथा जल कल्लोलवत् रमैं सोरामहै
ऐसा रामकूंतो जाणतोनाहीं। फिरवो मूक पक्षी स्वमुखात् रामराम बोलता
है सो वृथाहै तैसेंही मिथ्याद्रष्टी स्वयंसिद्ध स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि सि
द्धकूं तोजाणतोनाहीं अर स्वमुखात णमोसिद्धाणं ऐसे बोलताहै सो वृ
थाहै इहां विधि निषेधमें स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तन्म
यिनसमजणा १ जैसें दीपज्योतिके भीतर कालो काजल कलंकहै तैसेंही
स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान दीपज्योतिके प्रकासमें कर्मरूपे तन्मयि कर्म कलंकहै
इहां कोई मिथ्याद्रष्टी दृष्टांतमें तर्कस्थापन करै के स्वसम्यक्ज्ञानानुभवतो
नहीं ग्रहण करैगो अर सून्यदोष ग्रहण करैगो क्याके दीपज्योतिमें कालो
कलंक काजलहै परंतु दीपज्योतिके बुजगये पश्चात् काजल वी कहांहै अर

दीपज्योनिवी कहांहै ऐसी नर्क द्वारा शून्यदोष ग्रहण कर्नाहै सो जरूर स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभवसे सून्यहै मिथ्यादर्ष्टीहै १ पंचेंद्रियकूं बहुरि पंचेंद्रियका जेना शुभाशुभ विषय वा भोगोपभोगादिककूं सहज स्वभावहीसे जाणनाहै देखताहै सोही केवल ज्ञानहै ऐसे नहीं समजणा मानणा कहणाके घ्राणेंद्रियका विषय भोगकूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान ओरहै जिव्हा इंद्रियका विषय भोगाकूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान ओरहै ऐसेही कर्णेंद्रियका स्पर्श इंद्रियका विषय भोगादिककूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान ओरहै बहुरि तनमनधन बचनादिककूं बहुरि तनमन धन बचनादिकका जेना शुभाशुभ क्रिया कर्म कूं आर ताका फलकूं जाणताहै सो कुछ ज्ञान ओरहै ऐसी भेदाभेदकी कल्पना कदाचितकोई प्रकारवी स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्मयि नसंभवे १ जेसे सूर्यका प्रकासमे पडी रस्सी रात्रिसमय सर्प भास होतीहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञा-

नानुभव विना ज्ञानहैसो जगत संसारवत् भाषहोताहै १ जैसे सीपमें चांदी भाष होतीहै तथा मृग तृष्णामें नीर भाष होताहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमें तन्मयिवत् यह संसार जगत भाष होताहै १ जैसे अंधसमूह कूं खेंच तनयन पर्वाण तैसें आतम ज्ञानविना होय मोहमें लीन १ जैसें आकाशके धूलि मेघादिक नही लागते तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञानके पापपुन्ये बहुरि पाप पुन्यका फल नही लागते १ यह लोकालोक जगत संसार कूं स्वसम्यक् ज्ञानहैसो सहज स्वभावहीसें जाणताहै ताकी विधि निषेद कोण प्रकार १ जैसे सूरवीर नरेश मलेच्छादिक देसकूं जीत करिके मलेच्छादिक देसहीमें रहताहै तैसेही स्वसम्यक ज्ञानी क्रोध मान माया लोभ वा विषय भोगादिककूं जीत करिके तिसही विषय भोगादिकमें रहताहै १ तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके नहीरहताहै १ जैसे घटके भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटकूं कैसे त्यागे अरग्रहणवी कैसेक

रे तैसैही येह जगत संसारके भीतर बाहिर मध्य स्वसम्यक् ज्ञानहै सो
क्या त्यागे अर क्याग्रहण करै १ जैसै समुद्रकेउपर कलोलउपजतीहै
विनसतीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि समुद्रमै यह स्वमा समयको·
जगत उपजतोहै वहुरि जाग्रत समयको जगत विनसताहै बहुरिजा
ग्रत समयकोजगत उत्पन्न होताहै अर स्वप्न समय कोजगत विनसता
है १ जैसे जन्मांध रतन स्रुवर्णादिकका आभूषण पहरनाहै सो वृथा
है तैसेही स्वसम्यक् भाव सम्यक् ज्ञानानुभवकी परमाव गाढविना व्र·
त शील तपजप नेमादिक संपूर्ण वृथाहै १ जैसे कोऊ पुरुष वृक्ष कुंप
कंडिकरिके स्वमुखवात् कहके मे बंध मोक्षसे कब भिन्न होउगा तैसेही बंध
मोक्षसे भिन्न होणेकी इच्छा करनाहिं सो स्वस्वभाव सम्यकज्ञान रहित मू
र्ख मिथ्या द्रष्टीहै १ भावाभाव विकारहै सो आपणे अपणे स्वभावहीतै
है १ जैसै तोलमै गुंजा और स्रुवर्ण बराबरहै परंतु मूल स्वभावमै बरो·

बरनाहीं तैसैंही जगतश्चोरजगदीस येह दोन्यूंही बरोबरहै परंतु मूलस्व
रूप सम्यक्‌ज्ञान स्वभावमैं दोन्यूं बरोबरनाही १ जैसैंबिन घूमकी अग्नि
सोभायमानहै तैसैंही भ्रमरूपी धूम्र करिकेरहित स्वसम्यक्‌ज्ञान मयिस्व
भाव वस्तु सोभायमान भाषतीहै १ जैसेज्वरके अंतसमय अन्नप्रिय ला-
गताहै तैसेही शुभाशुभ संसारके अंत स्वस्वरूप सम्यक्‌ज्ञानानुभव प्रि
यलागताहै १ जैसे कुकर्दम राजा स्वयर्गकूं त्याग करि पर वर्गसूं मिश्रि-
तहोय मर्णादिक दुःखकूं प्राप्त हुवो तैसेही कोहू स्वस्वभाव सम्यक्‌ज्ञान-
कूं छोडकरिकै परस्वभाव परवर्गसे आपकूं तन्मयि वत् समझताहै मान-
ताहै सो जन्म मरणादिक संसारका दुःख भोगताहै १ जैसे मही मंडलमैन
दीको प्रभाव एकताहीमै अनेक भांत नीरकी झरनहै पत्थरको जोर तहां-
धारकी मरोड होय कंकरकी रवानी तहां झागकी झरनहै पवनकी झकोर तहां
चंचल तरंग उठै भूमिकी निंचान तहां भवरकी पडितहै तैसैही एक स्वस्वरूप

सम्यक्ज्ञानमई आत्माहै बहुरि अनंतरसमयी पुद्गलहै तिनदोऊका पुष्प-
सुगंधवत् तथा घट आकाशवत् संयोग होने संते बिभावकी भरपूरताहै
१ स्वसम्यक्ज्ञानानुभव हुये पश्चात्‌बी कुछ काल पर्यंत पूर्वकर्म प्रयोगा
त् सम्यक्दृष्टि संसारमें भ्रमण कर्ताहै कैसे जैसे कुंभकारको चक्रदंडकुं
भकार आदि प्रसंगात् परिभ्रमण करैहै परंतु दंड कुंभकार आदिक काप्र
संगसे भिन्न हुये पश्चात् बी कुछ काल पर्यंत परिभ्रमण करैहै तैसे १ जैसे
परजो तन मन धन बचनादिककूं अर इन का शुभाशुभ व्यवहार किया क
र्मफलकूं जाणताहै तैसेही पलट करिके आपकूं ऐसे जाणैके येह तन म
न धन बचनादिककूं बहुरि इन तन मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ
व्यवहार किया कर्म फलहै ताकूं मेंके द्वारा मैंजाणताहूं येह मेरा स्वस्वभा
व सम्यक्ज्ञानकूं जाणते नाहीं ऐसे आपकूं जाणै सोही कहीहै आपस
मजकारघरनही जाणै दूजाकूं क्या समजावे भ्रमण करे संसारजगतमैं

हृदय हानमैनहीआवै १ तथा जबतक है अज्ञान तबीलक कुटंम कबीलाभा
ईहै ज्ञान हुवानो आनमा आपमै आप समाहीहै १ जैसैजैसी प्रीत प्रेम
घर कुटुंब बेटा बेटीसे है तैसेही स्वसम्यक ज्ञान मयि परमानमासे तन्मयि
प्रेम प्रीत अचल होय तो सहज बिना यतन बिना परिश्रम नही संसार क्रभारक्र
मसै प्रेमराग दृढजाय १ जैसै सूर्यके सहजही अंधकारका त्यागहे तैसै
ही स्वसम्यक ज्ञान सूर्यके सहज स्वभावहीसे यह भ्रमजाल संसारहे ताका
त्यागहे १ जैसे कोहू पुरुष स्त्रीकूं भोगताहे परंतु आप स्त्रीसे बहुरि ता-
का भाव क्रिया कर्म फलसे तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके स्त्रीकूं नही भो-
गताहै तैसे ही स्वसम्यक ज्ञानमयि परम ब्रह्म परमानमा पुराण पुरुषोत्तम
पुरुषहे सो सर्व संसार भ्रम जाल मायास्त्रीकूं भोगताहे परंतु संसार भ्र-
मजाल मायासे जैसै अंधकारसे सूर्य भिन्नहै तदवत् संसार भ्रमजालमा
यासे भिन्न होकारे भोगताहै अर्थात् संसार भ्रमजाल मायास्त्रीसे आरता

का भाव किया कर्म फलसे तन्मयि नत्स्वरूप होय कारिके नही भोगताहै १ जैसे स्त्रीबी पुरुषकूं भोग देतीहै सो पुरुषसे तन्मयि होय कारिके नाही देनीहै तैसेही संसार भ्रमजाल मायास्त्रीहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानमयि पुराण पुरुषोत्तमकूं भोग देतीहै सो पुरुषसे अलग होय कारिकै देतीहै तन्मयि होय कारिकै भोग नही देतीहै १ जैसा काजलसे कालो कलंक तन्मयिहै तैसेही तन मन धन बचनादिकसे बहार जेता तनमन धन बचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै तासे अज्ञान् तनमईहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमे कृष्ण वस्त्रकी प्रतिछाया काली तन्मयिवत्सीदीखती है सोतिस दर्पणकी नाही कृष्ण वस्त्रकीहै सो कृष्ण वस्त्रसे तन्मयिहै तैसेही स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव दर्पणमे येह द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्ममयि संसारकी प्रतिछाया कर्म कलंकमयि तन्मयि वत्सी दीखतीहै सो स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणकी नाहीं द्रव्य कर्म भावकर्म नोकर्ममयि संसा

रहै ताकीहै सोनासै तन्मयिहै १ जैसै स्वच्छ दर्पणमै अग्नीकी प्रतिछाया
तन्मयिवत्सी दीखतीहै तासैतो वो दर्पण तोगरम उष्ण नहीहोते बहुरि-
तिसही स्वच्छदर्पणमै जल नीरकी प्रतिछाया दीखती है तन्मयि वत्सी
तासै तो दर्पण शीतल नही होते तैसैही स्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि दर्पणमै
काम कुशीलादिक रागमयिकी छाया भाव भाष होते संते तोरागमयि हो-
तेनाही बहुरि शील व्रतादिक वैरागमयिकी छाया भावभाष होते संते वै
रागमयि होते नाही ऐसै स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे येह राग द्वेष-
तन्मयि नाही १ जैसै जलमे चंद्र प्रतिबिंबहै सो पकडवामै हस्तमे नही आ
वै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्ठी द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्मादि
क बंधमै नहीआते १ जैसै गोमटनाम पर्वत केऊपर बाहुबली राजसंपदा छो
डकरिकै धनधान्य रूपवर्ण रतनादि वस्त्र पर्यंत बाह्य परिग्रह छोड करिके
नग्नदिगंबर होय करिकै खडे रहे ध्यानमै ऐसा लीन रहेजो वज्र पानादिक-

स्वशरीरपै गिरे तोबी चलायमान नही हुये सर्वांगमै अिनके सर्प ओर वृ-
क्ष लता लपटगई मौनचलरहित इत्यादि अवस्था पर्यंत पहोंचगयेयेक-
वर्ष पर्यंतखडेरहे तथापि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानानुभवकी
परमावगाढतासे तन्मयि नही भये कारण ताके अंतः करणमै सूक्ष्म अनि
र्वचनीय येह बासनारहीकि मै भरतकी पृथ्वीके ऊपर खडाहूं पूर्वोक्त दि
शा अवस्थासे सर्वथा प्रकार भिन्नहूये तब स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी परमा
वगाढतासे तन्मयि सूर्य प्रकाशवत् मिले १ गुरु भ्रमजाल संसारसे सह
जही भिन्न करदेताहै १ जैसे जलकुंडमै जलकेऊपर तेलबिंदू तरतीहै तैसै
ही लोकालोकजगत संसारकेऊपर वा पंच भूत वा पुद्गल पिंड भाव राग द्वेष
केउपर तथा काम क्रोध कुशील आदिक जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया क
र्म है अरताका जैसा तैसा फलहै ताके सर्वकेऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप परमब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी तरता

है सोके सो इस भ्रमजालसंसारमें डूबेगा वा कैसे गुप्त होवेगा १ जैसेज्यौं
घटकहिये घीवको घटकोरूपनघीव नैसैत्यौंवर्णादिकनामसे जडनाल-
हनजीव १ जैसोरवांडोकहियकनको कनकम्यानसंजोग ॥ न्यारोनि
रखनदेखिये लोहकहसबलोक ॥ २ ॥ जैसैकोहू अग्नीसे जलताहुवा-
घरमेंसे निकस करिके बाहिर सडक वा मारग चोगानमे खडोरहकरि पुका
रतोहैके यावस्तुजलतीहे अमुकीवस्तबलतीहे तासै कोहु कहके तूं तो
नहीजल्यो नही वल्यो तूं तो नही जलताहे नही बलताहे तबवो कहके मैं-
तो नही जलताहूं नही बलताहूं मैंनो नही जल्यो नही बल्यो येह घरजलता
हे बलताहे अर घरके भीतर अमुक अमुक वस्तू जलती बलतीहे तैसेही
कोहु मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजाल संसारसे अलग होय करिके ऐ
से पुकारताहे केवो मर्यो वो मरताहे मैंतो नहीमर्यो नमरताहूं इत्यादि-
कोहु मुमुक्षनो ऐसा बोलताहे बहुरि जैसे बलता जलताहुवा घरमेंसेको

हुनिकस करिके बाहिर सड्क चोगानमै दिलकादिलमै येह विचार कर
ताहै के घरजलगयो बलगयो अर घरके भीतर शुभाशुभ अमुकी अमु
की वस्तुथी सोबी जलगई बलगई अब किसकूं क्या कहूं यदि कहूं तो
क्या वह वस्तु अब अमुकी शुभाशुभ लाभ होणेकी नाही वास्ते बोल
णा वृथाहैं तैसेही कोहु मुमुक्षु गुरूपदेशात् भ्रमजाल संसारसे अल
गहुये पश्चात् विचार द्वारा देखताहै के पुद्गल धर्माधर्माकाश काल इन
पांचमै ज्ञानगुण स्वभावहीसै नाही अर मेरा स्वरूप स्वभावहै सो अब
गुरु कृपाद्वारा ज्ञानसे तन्मयिहै वास्तै बोलणा वृथाहै ऐसे कोहु मुमु-
क्षु नबोलताहै १ जैसै ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचिजाय तैसैही मोह
कर्मसे अपणा स्वभाव सम्यक ज्ञानकूं येक तन्मयि समजताहै मानता
है कहताहै ऐसा मिथ्या दृष्टीकूं स्वस्वरूप सम्यक ज्ञानानुभव सूचक उ
पदेस मियनही लागताहै १ जैसे सूर्यका प्रकाशमै अनेक प्रकारकी शु

भाशुभ वस्तु काली पीली धोली हरित रतन दीप चमक दमक पाप अप
राध देणा लेणा दान पूजा भोग जोगादिककूं देखताहै अर सूर्यका प्र
कासकूं अर सूर्य कूं नही देखताहै सो मूरखहै तैसैही स्वस्वरूप सम्य
क ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमे येह लोकालोक जगत संसार का
म कुशील क्रोध मान माया लोभादिक दीखताहै ताकूं तू मिथ्या दृष्टी दे
खतोहै अर पलटवा उलट हो करिके स्वस्वरूप सम्यकज्ञानमयि स्वभा
व सूर्य परमातमाहै ताकूं नही देखतोहै सोही मिथ्यादृष्टीहै १ स्वभा
व सम्यकज्ञानहै तासे कोई वस्तु तन्मयि नाही उसी वस्तु का स्वभाव स
म्यक ज्ञानके त्यागहै १ मरजावै जलजावै गलजावै चलजावै इत्यादि
अनेक प्रकारका शुभाशुभ कष्ट करते संतेबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स
म्यक ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीका प्रतक्ष्यानुभवकी
परमावगाढता अचलताका अखंड लाभ नही होवै सतगुरु महाराज स

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संते ही सदा काल ज्ञान मयिजा
गती ज्योतिका तन्मयि मेल करादेताहै धन्यहै गुरू १ वेदकहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महामुनीका बचन जिनसेभी सो स्वस्व-
रूप सम्यक् ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म मनस्यानुभव
नही जाणवामे आवै वहुरि वो सम्यक् ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्यो
ति परमातमाहै सो पांचयंद्री षष्ठम मनसैभी मन स्वानुभव नही जाण-
वामै आवै बहुरि मनगुरु सहज स्वभावहीसैविना परिश्रमही सदा
कालजागतीज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि-
ता कर देताहै गुरु धन्यहै १ मनकूं बडे आश्चर्य होनाहै क्याके पांचइंद्री
षष्ठम मनसै अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे वहुरि वेद पुराण सास्त्र सूत्र प
ढणे वाचणे सैतो वो सम्यक् ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति नहीं-
जाण वामे आवै फेरगुरू कैसे दीखाते होगे कैसे जनादेते होगे क्या कह

तेहोगे अरशिष्यबी कैसै समजता होगा हाहा हाहा गुरु धन्य है हाय खेद गुरु नही होते तो मैं इस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसै होता १ जैसै येकके अंकबिना बिंदु प्रमाणभूत नाही तैसै येक गुरु विना त्यागीपणो पंडितपणो जोगी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूत नाहीं १ जैसे बीज राखि स्करव भोगवे जो किसाण जगमांहि तैसे स्वस्वरूपी सम्यक् ज्ञान मयि सम्यक् दृष्टी है सो अपणा आपमें आपमयि स्वभाव धर्म कूं आपका आपमें आपमयि समज करिके पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय-भोगादिकका स्करव भोग नाहे १ जैसे सुपेद् काष्ट अग्नीकी संगतीसे क्षण काला होजाता है कोयला हो जाता है फेर कारण पाय पलट करिके अग्नीकी संगती करै तो कोयला जल बल करिके सुपेद् रवाक होजाते है तैसेही कोइ जीव विषय भोगादिककी संगती पायकरिके अशुद्ध होजाते है फेर पलट करिके गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिक कूं अपणा स्व-

भाव सम्यक् ज्ञानसें भिन्न समज करिकें पश्चात् विषय भोगादिकसें अ
नन्मयि होय करिकें विषय भोगाकी संगति करै सोजीव परम पवित्र शुद्ध
होजातोहै १ वस्तु स्वभावमें येह शुद्धाशुद्ध है सो स्यात् कथंचित् प्रका
र १ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तूसें तूं मैं ये
ह यह च्यारशब्द तन्मयीनाही १ जैसें काहू सूर्यंका प्रकाशमेंसे येक अ
णुरेणु उठाय करिकें अंधकारमें क्षेपदे तासैं तो सूर्योदय कुछ कमती हो
तेनाही बहुरि कोइ अंधकारमेंसे येक अणुरेणु उठाय करिकें सूर्यका प्रका
शमें क्षेपदे तासैं सो सूर्योदय वडा होते नाही तैसेंही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक् ज्ञान सूर्योदयमेंसे येह अनंत संसार निकस करिकें कहू क
हांजानेरहनासैं तो सो सम्यक् ज्ञान सूर्योदय शून्य कमती होते नाही ब
हुरि कहू कहांसें येह संसारहै तैमाही अार अनंत संसार स्वस्वरूपसम्य
क् ज्ञान सूर्योदयमें आय पडै तासैं सो सम्यक् ज्ञान सूर्योदयकी वृद्धी हो

ने नाही १ जैसें येकदीपकके बुज जाएगेसै सर्ब पूर्ण अनंतदीपकनहीं बूजते तैसैही येक जीवके मर जाएगेसै सर्व पूर्ण अनंत जीवसै तन्मयि जिनेंद्र मरते नाही १ सर्व भाव पदार्थ वा द्रव्यक्षेत्र कालभव भाव भोगजोग पाप पुन्यादिक संसारहै तासें स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तन्मयि नाहीं वास्ते स्वस्वरूप ज्ञानहै सो सर्व संसार पाप पुन्य भाव पदार्थादिक जेता शुभाशुभ व्यवहारहै ताको निश्चय स्वभावही सैं त्यागीहै स्वसम्यक ज्ञानहै ताके परवस्तुका सहज स्वभावहीसै त्याग है कैसै जैसें यथानामकोपि पुरुषः परद्रव्यमिदमितिज्ञात्वात्यजति तथासर्वान् परभावान् ज्ञात्वा विमुंचतिज्ञानी १ जैसे नाटिककी रंगभूमि मै कोउ स्वांगधारण करिकें नाचताहे ताकूं कोहू ज्ञाता जाणलेके तूं तो-अमुकाहे तबवो स्वांगधारक पुरुष नाटिककी रंगभूमि मैसे निकस करिके यथावत् जैसाको तैसो होय करिकै रहताहै तैसैही येह लोकालोकरं

गभूमिमैजीवाजीवपुष्पगंधवत् येक होय करिकै चोरासीलक्ष योनी
मै नाचनाहै ताकूं सतगुरु ज्ञाता कहीके तूं तो जिस्मै ज्ञानगुण तन्मयिहै
सोही तूं है येह मनुष देव तिर्यंच नारकी या स्त्री पुरुष नपुंसकादिकस्वां
गहै तूं स्वांग नाही बहुरि स्वांगका अर तेरा सूर्य प्रकाश वत् येक तन्मयिता
नाही तूं इस स्वांगकूं जाणनाहै येह स्वांग तेरे कूं जाणने नाही तूं ज्ञान वस्तु
है बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांग है सो अज्ञान वस्तु है जैसे सूर्यांधकारका
मेल नाही तैसे येह मनुष्यादिक स्वांग है ताका अर तेरा येक मेल नाही जै
सै सूर्य प्रकास इस पृथ्वीके ऊपर है ताका अर पृथ्वीका मेल है तैसै हे ज्ञा-
नसूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांग है ताका मेल है हे ज्ञान देख तूं
सर्व मायाजाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्न है श्रवण करि समज मै क
हनाहूं अंतमै दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूं ही स्वानुभव लेणा कु
मति ज्ञान १ कुश्रुति ज्ञान १ कुअवधि ज्ञान १ मति ज्ञान १ श्रुतिज्ञान

१ अवधिज्ञान १ मनपर्यंयज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसैं है ज्ञान तूं सर्वसं
सार स्वांगसै स्वभावहीसैं भिन्न है तूं मनुषनाही तूं देवनाही तूं तिर्यंच नाही।
तूं नारकीनाही तूं स्त्रीपुरुषनपूंसक नाही बहुरि मनुष्यादिक अर स्त्रीपु
रुषनपूंसकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै सो बी तूं ना
ही तूं तो येक निर्मल निर्दोष निराबाध शुद्ध परम पवित्र ज्ञानहै जैसैं का
चकी हांडीमै दीपकहै ताका प्रकाश काचकी हांडीके भीतर बाहिर दोहु
तरफहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान दीपिकाको प्रकाश लोकालोकके भीत
रबाहिर दोहु तरफ येकसो होहै १ जैसै सुवर्णकी छूरीसै बी कलेजा-
फट जातेहै अर लोहाकी छूरीसै बी कलेजा फटजातेहै तैसैही ज्ञान म-
यि जीवका पापसैबी भला नाही होते अर पुन्यसै बी भला नाही होते १
॥ ॥प्रश्न॥ ॥ पापपुन्यकरणाके नाही करणा उत्तर पापपुन्य
सै अग्नी उष्णतावत् येक तन्मयि होय करिकै पाप पुन्य कर्त्ताहै सो मूर्खमि

थ्या दृष्टीहै बहुरि जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै नदवत् कोई पापपुन्य
सै भिन्नहोय करिकै पश्चात् पापपुन्य पूर्व कर्म प्रियोगात् कर्ताहै सोज्ञा
नी सम्यक्ज्ञान दृष्टीहै १ जैसे ज्येष्ठ वैशाख मासमै मध्यान्हसमयसू
र्यका प्रकाशमै मरुस्थल भूमिमै मृगमरीचकाजल दीखताहै नदवत्
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि सूर्यका प्रकाशमै येहलो
कालोक दीखताहै ज्ञानकूं १ अभेदमै अनेकभेद अभेदसे तन्मयि जे
सै वृक्ष अभेद नाहीसे तन्मयि अनेकभेद मूल साखा लघुसाखा फल॰
पत्र फलमै अनेक फल अनेक फलमै अनेक वृक्ष येकयेक वृक्षमै अने
क लघु दीर्घ साखादिक अनंत भेदहै तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य॰
सम्यक्ज्ञानमयि जिनेंद्र मूलमै अनंत जीव राशी भेदहै सो जिनेंद्रसे त॰
न्मयि अभेदहै १ जैसे गंगायमुनादिक नदी समुद्रसे मिलीहै तैसैही गु
रूपदेस पाय करिकै सम्यक् दृष्टी जीव जिनेंद्रसे तन्मयि मिलेहै १ जैसे॰

येक स्रुवर्णसें अनेक नाम कडा मूंदडा कंठी दोरा असरफी कांचन कन
क हेम आदिहै सो तन्मयिवत्है तेसेंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु मे येह जिनेंद्र शिव शंकर ब्रह्मा ब्रह्म विष्णु
नारायण हरि हर महेश्वर परमेश्वर ईश्वर जगन्नाथ महादेव आदि अनं
त नाम तन्मयिवत्है १ जैसे कोई पुरुष ऽस्त्रीका कपडा वस्त्र आभूषणा
दिक धारण करिकें अर्थात् स्रुंदर देवांगनावत् बणाकरिकें नाटिककी
रंगभूमिमे नाचणे लग्यो तत् समय नाटिक् देखणे वाले पुरुष मंडलीक
हताहै के होहोहो क्या स्रुंदर स्त्रीहै ऐसा वचन सभा मंडलीका श्रवण
करिकें सोस्त्री स्वांग पुरुष आप अपणे दिलमें जाणताहे मानताहे के
मेंऽस्त्री मूलहीसें नाही येह सभामंडलीके पुरुष मेरा निजस्वभावगुण
लक्षणतोजाणते नाही बिना समजसें येह मेरेकूं ऽस्त्री कहताहे मान
ताहे जाणताहे सो वृथाहै तैसेंही स्वस्वभाव सम्यक ज्ञानमयि सम्यक्-

दृष्टी आपअपणा अंतःकरणमै येह निश्चय समजताहै मानताहै के ये
ह बहिर दृष्टिवान् मेरेकूं स्त्री पुरुष नपूंसकादिक मानतेहै कहताहैजा
नताहै सो वृथाहै मेरो स्वभाव सम्यक्ज्ञानहै सोतो नःस्त्रीहै नपुरुषहै
न नपूंसकादि कोई बी किंचित्मात्र स्वांग मेरा स्वरूप सम्यक्ज्ञानसे त-
न्मयिनाही १ जैसै येक पुरुषतो निर्मल नीरका भस्या तलावके किनारे
तिष्ठेहुये इच्छाप्रमाण निर्मल नीर प्रतिदिवस पीय करिके सुखीहै बहु
रि जो कोई पुरुष तलावसे लक्षयोजन भिन्न येकक्षीरोदधि समुद्र निर्म
ल नीरको भस्योहै ताके किनारे तिष्टेहुयो इच्छाप्रमाण निर्मलनीर पीय
करिके सुखीहै तैसेही संसारमै पूर्वकर्म प्रयोगात् कुछ किंचित् संख्या
प्रमाण लालपर्यंत रहणेवाले सम्यक् दृष्टीका बहुरि संसारसे भिन्नमो
क्षहै तामै रहणेवाले स्वसम्यक्ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टीका अर्थात्
दोहूका सुख सम समानहै २ जैसे दुग्धका भस्या कलसमै येक नील·

मणी रत्न डालदीजिये तब दुग्धका अर नील मणी रत्नकारंग अर दुग्ध-
कारंग येकसाही नीलमणी रतन तेजवत् समान भाष होताहै तैसेंही-
ज्ञान ज्ञेय येकसा भाप होताहै परंतु ज्ञान अज्ञान कदाचित् कोई प्रकार-
बी येक तन्मयि होते नाही १ जैसे माटीका घटमें घृत भर्‍यो होय तिसकार
ण तिस घटकूं घृत घट कहतेहै कहो भला परंतु घट माटीको माटीमयिहै-
माटीका घटके अर घृतके अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयिता हुई नहोवैगी न-
है तैसैंही ज्ञानमयि जीवके अर अजीवज्यो तन मन धन वचनादिकके अर
जेता तन मन धन वचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै ताके पर
स्पर सूर्य प्रकासवत् नयेक तन्मयिता हुई अर नहै नहोवैगी १ जैसे ला-
ल लाखके ऊपर लग्यो लाल रतन तार तनमैं लाखकी लाली अर रतनकी-
लाली दोहु लालीयेकसी तन्मयिवत् दीखतीहै परंतुहै वह दोहु लाली
भिन्नभिन्न ताकूं असल जहोरी होताहै सो दोहू लालीकूं भिन्नभिन्नसम

जनाहै माननाहै कहनाहै तैसैंही आकास अमूर्ति निराकार अजीव म-
यिहै ताका बहुरि स्वसम्यक ज्ञानमयि अमूर्ति नीराकारजीव मयि है
ताका परस्पर अमूर्ति अमूर्तिपणा बहुरि निराकार नीराकार पणा-
येक तन्मयिवत् मिथ्या दृष्टीकूं भाष होताहै परंतु सूक्षम दृष्टिवान्
जो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानी सम्यक दृष्टी दोहु अमूर्ति
कूं बहुरि दोहु नीराकार कूं भिन्नभिन्न समजनाहै माननाहै कहनाहै
१ परमातमा स्वसम्यक ज्ञान मयि हैसो आदि अंत पूर्ण स्वभाव सं
युक्तहै येह परसंजोग पररूप कल्पना रहित मुक्तहै ॥ प्रश्न कैसें
है उत्तर श्रवणकरो जैसै प्रथम आदिमें पूर्णचिन्ह विंदुहै सोकी
सोही अंतमेंबी पूर्णचिन्ह विंदुहै देखो स्वानुभव दृष्टीके द्वारा आदि
०१२३४५६७८९१० अंत १ बहुरि जैसै सूर्य प्रात काल आदि
है सोही सूर्य सायंकाल अंतहै तो क्या मध्यान्ह काल नहीहै अर्थात् है

तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य सदा कालहै १ " जैसैजैसोपी वैपाणी तैसै तैसी बोल वाणी " तैसेही जिमकूं गुरूपदेस द्वारा आप का आपमैं आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी थामकी प्राप्ती अचल हुई सो स्वमुखवान् ऐसैं बोलताहै के स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सोही सोहं प्रश्न ऐसैंतो बहुतनसें बाल गोपाल बोलताहे उत्तर जैसें रात्रीसमय येकस्वान प्रत्यक्ष चोरकूं देख करिके भूक भूक बोल ताहै ताका शब्द श्रवण करिके सहरमे बहुतसे श्वान तदवत्ही भुक् भूक बोलताहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानानुभव ज्ञानीका स्वमुखवान् शब्द श्रवण करिके सम्यक् ज्ञानानुभव रहित मिथ्या दृष्टीबी ऐसैहीबो लताहै केहमही परमातमाहै मिथ्यादृष्टीकूं येह निश्चय नाहीके शब्दके अर सम्यक् ज्ञानीके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद है १ बहुरि " जैसैजैसोखावै अन्न ताकै तैसो होवैमन्न " तैसैही किसीमुमु

ष्टकूं गुरुपदेस द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी
प्रापकी प्राप्ति ताकी अचल अवगाढताहुई ताको मन ऐसोहो जातोहै॰
के ऊपरतो व्यवहार करै पण भीतर स्वप्नसमानजूं भाषै तथा ताको मन
ऐसो हो जातोहैके मेरो मनहै परंतु मैं मननाही बहुरि मनका जेता शु॰
भाशुभ व्यवहार है सोबी मैं नाही अर जेता शुभाशुभ व्यवहारका सु॰
ख दुःख फलहै सोबी मैं नाही बहुरि मैंहै सो येक येह शब्दहै यातै मैं
शब्दकूं अर मनादिककूं जाणताहूं सोही सोहं अत्र स्थल पर्यंत मनहो
जाताहै॰ १ जैसे मैला मल मूत्रमे रतन पड्योहै ताकूं लेणा जोगहै म
ल मूत्रकी मैलाई दुर्गंध तासै अपणा हेस गिलान भाव धारण करिकै॰
रतनकूं नही ग्रहण कर्ताहै सो मूर्खहै तैसेही तन मन धन वचनादिक॰
मै पड्योहै स्वसम्यक् ज्ञान रतन ताकूं कोई तन मन धनादिकका शु॰
भाशुभ विकार देख करिकै ताकी गिलान धारण करिकै स्वसम्यक् ज्ञान

रतनकूं तन्मयी धारण नहीं करताहै सो मूरख मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे कोई कहींके सूर्य कहां रहताहै ताको उत्तर एसोहैके सूर्य सूर्यके भीतर तन्मयी रहताहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान सूर्यहै सो स्वसम्यक् ज्ञान सूर्यही मे रहताहै निश्चयनयात् १ जैसे पुष्पमे सुगंधहै तथा जैसे तिलमैतैलहै वा जैसे दुग्धमे घृतहै तैसेही यह लोकालोकहै तामे तथा तन मन धन वचनहै तामे बहुरि तन मन धन वचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै तामे अतन्मयि सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक् ज्ञानहै १ हे मुमुक्षु मंडली हो स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयि होय करिके देखो कोबि धिको निषेध १ जैसे दर्पणमे काला पीला लाल हरित आदि अनेक रंग विरंग बिकार दीखताहै सो दर्पणका तन्मयि नाही तैसेही स्वच्छ स्वसम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमे यह राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ काम कुशीलादिकका बिकार तन्मयि सो दीखताहै सो स्वच्छ सम्यक् ज्ञा

नमयि परमातमाका नाही १ जैसै नवका रंगरंगीलीहै सोबी पार उता
र देनीहै बहुरि रंगरंगीली नवका नहीहै सोबी पार उतार देनीहै तैसैही
स्वानुभव ज्ञानमयि कोहु गुरुहै सो न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य
छंदादिक युक्तहै सोबी संसार सागरसै पार उतार देनाहै बहुरि कोहु गु
रुहै सो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवि परंतु न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार का
व्य छंदादिकरहितहै सोबी संसार सागरसै पार उतार देनाहै १ जैसैगो
रस अपणे दुग्ध दही घृत माखण आदि पर्यायसै भिन्न नाही बहुरि
दुग्ध दही घृत माखण आदिकहै सो गोरससै भिन्न नाही तैसैही स्वस
म्यक् ज्ञानमयि परमातमासै स्वरव स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिक भि·
न्न नाही बहुरि स्वरव स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिकहै सो स्वसम्यक्·
ज्ञानमयि परमातमा भिन्न नाही १ जैसै नार्‍यो धूलीकूं धोवणेवालो
स्वर्णकी कणिकाकूं नही जाणनाहै तो इच्छा आवै जेता कष्ट करो धू

ली धोवणे का उनकूं कदाचित्‌बी स्वर्ण लाभ होते नाही तैसैही कोई मुनी साधु सन्यासी भोगी जोगी ग्रहस्ती आदिकोई स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाकूं तो जाणते नाही। अर व्रत जप तप ध्यान दान पूजादिक-का बहुप्रकार कष्ट करते है तो करो उनकूं कदाचित्‌बी स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा का लाभ होते नाही १ जिस जती व्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस वा भोगी ग्रहस्ती आदि भेषमै स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अचल हुवा सो जती व्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस भोगी ग्रहस्ती धन्य है धन्य है धन्य है सहस्त्र वेर धन्य है १ जैसै अग्नि द्रव्य है तामे उष्णताका गुण है जो इस अग्नि उष्णगुणविषे भिन्न भई तो इंधनकूं जलाय न शकै जो कदाचित् अग्नीसै उष्ण गुण भिन्न होय तो काहे करि जलावे अग्नी भिन्न हुई तो उष्णगुण किसके आश्रय रहै निराश्रय हुवा वहबी जलावणेकी क्रिया तै रहित होय गुण गुणी आपसमै जुदे हुये कार्यका

रणको असमर्थहै जो दोहूकी येकना हुई तो जलावणेकी क्रिया विषै
समर्थ होय तैसैही सतगुरु उपदेसात् केवल ज्ञान गुणीका अर ता·
कागुण देखणा जाणनेका अर्थात् दोहूकी येकता तन्मायिता होय त·
ब सहज स्वभावहीसे अष्टकर्म काष्टकूं जलावणेकी क्रिया विषे सम·
र्थ होय १ जैसें सूर्य मेघपटल करिकै आच्छादित हुवा प्रभारहित क
हियेहै परंतु सो सूर्य आपणे स्वभावतें तिस प्रभासे त्रैकाल भिन्न होय
नाही तैसेंही स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्यके करम भरम वा द्रव्य कर्म
भावकर्म नोकर्म स्वरूपी बादल पटल करि आच्छादित हुवा ताकूं ज्ञान
प्रभारहित कहियेहै परंतु सो स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्य आपणा
आपमैं आपमयि आपकागुण स्वभाव ज्ञान प्रकाशसे त्रैकाल कोई प्र·
कार बी भिन्न होय नाही १ जैसें पाचक हांतासीजती हांडीमेसें येक चा
वल देखिये तोसीजगयो तोसीजनाहुवा सर्व चावलाकोनिश्चयानुभवहो

जाताहै के सर्व चावल सीजगये तैसे ही अनंत गुण मयी स्वसम्यक्ज्ञा
न परमातमा ताकायेकबी गुण को किसी कूं गुरुपदेसद्वारा अचला
नुभव हुवो तो निश्चय समजणा के जेता परमातमाका गुण है ते तास
वे गुणाका ताकूं अचलानुभव हो चुक्या १ जैसे घटके प्रथम कुंभ-
कारहै तैसे तनमन धन वचनके बहुरि जेता तन मन धन वचनका शु
भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म के प्रथम आदिनाथ स्वसम्यक् ज्ञानम
यि परमातमाहै १ जैसे कुंभकार घटचक्रादिकसे तन्मयि होय करि-
के घटकर्म कूं नही कर्ताहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै
सो तन मन धन वचनादिकमें तन्मयि होय करिके शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्म नही कर्ताहै १ जैसे नय दोयहै येक द्रव्यार्थिक येक पर्या
यार्थ जैसे सुवर्ण सुवर्णत्व करिके नउपजैहै नाविनसैहै बहुरि ति
सहीसे तन्मयि कटिकाटि कादिक पर्याय बिनसैहै उपजैहै सोवीक

थंचित् प्रकार तैसैंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि प
रमातमा स्वस्वभावमैं नउपजैहै नविनसैहै बहुरि तिसहीसैं तन्मयि
जीव चेतनादिक पर्याय है सो उपजैहै विनसैहै सोंभी कथंचित् प्र
कार १ जैसैं समुद्र अपणे जलसमूहकरि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं ना
हीं प्राप्त होता अपणे स्वरूपकरि स्थिर रहैहै परंतु च्यारही दिशा
नकी पवन करिकै कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै तोभी सदा नित्य टं
कोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै तैसैंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नार्णव केवलज्ञानमयि समुद्र अपणे स्वगुण स्वभाव समरस नीरस
मूहकरि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं नाहीं प्राप्त होता अपणे स्वरूपक
रि स्थिर रहैहै परंतु मनुष देव तिर्यंच नारकी येही च्यार दिशानकी पव
न करिकै संकल्प विकल्प राग द्वेषादिक कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै
तोभी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै १ जैसैं स्वर्णकार आभूषण

दिक कर्मको कर्ताहै परंतु आभूषणादिक कर्मसे तन्मयि तत् स्वरूप-
होयकरिकै नाही कर्ताहै तैसैही आभूषणादिक कर्मका फलकू त-
त्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै तैसैही स्वसम्यक स्वानु
भव ज्ञानी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु तन्मयि तत्स्वरू
प होय करिकै नाही कर्ताहै तैसैही संसार का शुभाशुभ कर्म का फल
से तत्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै १ अधुनाचेन् १
वस्तु का स्वभाव वचनमै तन्मयि नाही अर्थात वचन गम्य नाही लोका
लोककूं वहुरि जेता लोकालोकमै अपणे अपणे गुण पर्याय सहित
द्रव्य अचल अनादिसे जैसाहै तैसा ताकूं येकही समयमै सहजही नि
राबाधि पूर्वक जाणताहै देखताहै सोही सर्वज्ञदेवहै ऐसा सर्वज्ञ देव
से तन्मयि होयकरि तिसही का स्वस्वानुभव ज्ञानमे लीनहै सो संदेहसं
का उपजावने नाही १ जैसे चंदन वृक्षके जहर विषमयि सर्प लपटार

हताहै तोबी चंदन अपणा गुणस्वभाव सुगंधपणा शीतलपणा कूं-
छोड करिकै जहर विषमयि विषवत् होते नाही तैसैही स्वसम्यक्दृ
ष्टीके पूर्वकर्म संयोगात् शुभाशुभकर्म लाग रहाहै तिसकरिकै तिस
सैं तन्मयि होते नाही १ जैसैं सूर्यके भीतर सूर्यसैं अंधकार तन्मयि
नाही तैसैही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके भी
तर अज्ञान तन्मयिनाही १ जैसे जिस नगरमें अज्ञानी राजाहै ताके
ऊपर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जहां केवलज्ञानही राजाहै
ताके ऊपर कोईबी अधिष्ठाता नसंभवे अर्थात तैसैही स्वस्वरूपी-
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि त्रैलोक्यनाथ परमातमाके ऊपर ता
सै अधिक कोई नहु नहोवैगा नकोई हुवो १ जहां भरम होताहै तहां
ही भरम नाहीहै जैसे सरल मार्गमै सायंकाल समयको हूरस्सी कूं
पडी देख करिकै संकावान हुवो के हाय सर्पहै तबकोहू गुरुकेहीके है॰

वत्स भय मति करै येह तो रस्सीहै सर्प नाही १ तन मन धन बचनसे बहुरि तन मन धन बचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है तासे तत्वरूप तन्मयि होएगेकी जिसके स्वभावसे ही इच्छा नाही सो नर-ज्ञानीहै १ कर्तासे होवै तिसको नाम कर्महै दान पूजा व्रत जप तप सामायिक स्वाध्याय ध्यानादिक शुभकर्म है पाप अपराध चौरी हिंसा कुशीलादिक अशुभ कर्म है अर्थ येहके शुभाशुभ कर्मको कर्ताहै सो शुभाशुभ कर्मसे अग्नी उष्णतावत् येक आपकूं तन्मयि समज करिके मानकरिके कर्ताहै सो तो मिथ्यादृष्टीहै बहुरि शुभाशुभ कर्मसे आपकूं सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके फेर शुभाशुभ पूर्व प्रयोगात् कर्मकर्ताहै सो स्वसम्यक्दृष्टीहै १ जैसे सूर्यके भीतर प्रकास तन्मयिहै तैसे जिसवस्तुमे देखणे जाणने का गुण तन्मयिहै सोही वस्तु दर्शणहै और वस्तकूं दर्शण मानताहै समजताहै कहताहै सो मूर्ख मिथ्यादृष्टीहै १ जहां तलक

घरमें अंधकारहै तहांही प्रकाशहै क्यूंके प्रकाशनही होतेतो अंधकार
की खबर कैसे होती कैसै जाणते जिसका प्रकासमें सूर्यदीखताहै
अर अंधकार आदि दीखताहै सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्-
ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीहै १ जैसें जहां प्रथीकेऊप
र कूप खोदैगा तहांही पाणी नीर निकलताहै तैसैही तन मन धन वच
नादिकके भीतर बहार तन मन धन वचनादिकका जेता शुभाशुभव्य
वहार क्रियाकर्महै ताके भीतर आकाशवत् व्यापक स्वसम्यक् ज्ञानमयि
अस्मकूं कोई खोजेगा तो प्रगट प्रसिद्ध होताहै १ शरीर पिंडसें स्वसम्य
क् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होते तो कदाचित् कोई प्रकारबी कोइबी
नही मरते तथा येह लोकालोक जगत संसार दीखताहै तासें सो स्वस
म्यक् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होते तो हरकिसीकूं दीखतो हो हो-
हो ऐसा अपूर्व विचारकी पूर्णता श्रीमद्गुरूके चरणकी शरण बिना नही

होगा १ जैसे जहांलग पक्षी के दोय पक्ष तन्मयि है तहांपर्यंत पक्षी इ
दर उदर भ्रमताहै उडताबैठताहै बहुरि जिस समय तिस पक्षीकी दो
हुपक्ष खंडन निर्मूल होजाय तब सो पक्षी इदर उदर भ्रमण करिरहित
होय जहांकोतहां स्थिर अचल रहताहै तैसेंही जहां पर्यंत जीवके निश्च
य व्यवहार की तन्मयिताहै अवगाढताहै तहा पर्यंत च्यारगती चवरासी
लक्षयोनिमे भ्रमण कर्ताहै बहुरि जिस समय जिस जीवके काल लब्धी
पाचक द्वारा तथा सतगुरूके उपदेस द्वारा निश्चय व्यवहारकी पक्षखंड
न निर्मूल होवैगी तत्समयही च्यारगति चवरासी लक्ष योनीमे भ्रमण
कर्ने रहित होय जहांके तहां अचल स्थिर रहताहै १ जैसे उडद मुंगकी
दोय दाल हुये पश्चात् मिलते नाही अर बोवैतो उगते नाही तैसैही जीवा
जीवकी जहां सर्वथा प्रकार भिन्नताहै गुरुप्रसादात् तहां जीवाजीवकी
तन्मयिता येकताना नाही दोहूकी येकतासे संसार उत्पन्न होतेथे सो अब

होएणेको नाहीं १ जैसै अंधाके स्कंधाके ऊपर बैठे पांगुलो इहां विचार
करो देखो अंधोतो चलताहै अर पांगुलो देखताहै तैसैही अंधवत् ये
ह संसार चक्र ताके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान सो पांगु
लावत् संसार चक्रके उपर बैठेहुवो केवल देखता जाणताहै १ देखणा
जाणना येह निज धर्म केवल ज्ञानकाहै १ प्रश्न संसारकूं चक्र सं-
ज्ञा कैसैहै उत्तर जाग्रतमै येह संसार दीखताहै सोही पलट करि
के स्वप्नामै दीखताहै बहुरि जो संसार स्वप्नामै दीखताहै सोही पलट
करिके जाग्रतमै दीखताहै ऐसे येह संसार चक्र फिरताहै प्रश्न येह
संसारचक्र किस भूमिका केऊपर फिरताहै उत्तर अलोकाकाशमै
अणुरेणुवत् येह संसार चक्र आप आपहीके आधार जल कल्लोलवत्
फिरताहै प्रश्न सुसप्ति और तुर्या समय संसारचक्र कहां रहताहै क-
हां फिरताहै उत्तर येक पुरुष सुलोचन अर्थात् ताके नेत्र तोहै परंतु ता

के तनमंन धन वचनादिक मूलहीसें नाही ताके आगें येह संसार चक्रभ
मणयुक्त नाचताहै स्वलोचन पुरुष देखताहै परंतु कहता नाही १ जै
सें कमती ज्यादा भोजन जीमणेसें बेमारी दुःख होताहै तैसेंही कोइ
संसारका विषय भोग कमती ज्यादा भोक्ताहै कर्त्ताहै सोही दुःखी बे
मार होताहै अर्थात जहां बराबरका व्यवहार क्रिया कर्म है तहां विरो
ध भावनसंभवै १ शब्दातीतका शब्द सूचहै १ जो वस्तु निरंतर है तामें
विधि निषेधको अवकाश कदापि तासें तन्मयि नसंभवै १ जैसें वैद्य पु
रसहैसो विषकूं उपभोगता संता मरणकूं नही प्राप्त होताहै कारण ति
स वैद्यके समीप दूसरी विष नासनी दवाई है तैसेंही जिसके समीपस्व
सम्यक्ज्ञान तन्मयिहै सो कर्मजनित पूर्व प्रयोगात् विषय उपभोगभो
गतेसंतेभी मरते नाही १ जैसें सुवर्ण अग्नीसें तप्त होतेसंतेवी अपणा
सुवर्ण पणा आदिगुण स्वभाव छोडते नाही तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञान-

दृष्टी पूर्व कर्मप्रियोगात् कर्म वेदना दुःखरूपी अग्नीमें तप्तायमान होते संतेबी अपणा स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानादिगुण छोडते नाही १ जैसे जलतीहुई तेलकी कढाईमें अपूपायत् सूर्यका प्रतिबिंबजलताहै बलता है तोबी आकाशमें सूर्यहै सो नजलता नमरता तैसैही संसारमै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा मरताहै जनमताहै तोबी स्वस्वभावे कदाचित् काई प्रकारबी नमरता नजन्मता १ जिसकी गुरूपदेसात् स्वभाव दृष्टी अचल हुई सो सहस्त्र वेर धन्य वाद योग्यहै १ जैसे मदिराके तीव्र अतिभावकूं जाण करिके तिस मदिराकूं कमतीबी नही पीताहै अरज्यादाबी नही पीताहै इस प्रमाण मदिरा पीवते संतेबी मदोन्मत्त नही होते तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी मोह मदिराके तीव्र अतिभावकूं जाण करिके तिस मोह मदिराकूं कमतीबी नही ग्रहण कर्ताहै बहुरि अधिकबिशेषबी नही ग्रहण कर्ताहै इस प्रमाण मोह मदिराकूं स्व

सम्यक् दृष्टी ग्रहण कर्ते संतनेवी स्वसम्यक ज्ञान स्वभावकूं छोड करिकें मो
ह मदिरासें अर्थात् उष्णतावन येक तन्मयि होते नाहीं १ जैसैं वृक्षके ल
गेहुये फल येकवेर परिपक्क होय परि जायतो वो फल फेर पलट करिकें
उस वृक्षके नाही लागतो तैसेंही कोई जीव काल पाय करिकें गुरुपदेस
द्वारा अपणा आपमें आप मयि स्वसम्यक ज्ञानानुभव अचल परिपक्क
पूर्णानुभव होय करिकें येकवेर संसार जगतसें भिन्नहुये पश्चात् फिर प-
लट करिकें संसार जगतसें तन्मयि होते नाहीं १ ओरवी तीन दृष्टांत-
द्वारा स्वसम्यक ज्ञानानुभव लेणा जैसैं दहीमेंसें माखण घृत भिन्नहुये
पश्चात् पलट करिकें दहीमें मिलतो नाही १ वृक्षकी जड उपडे पश्चात् कु
छ काल पर्यंत फल फूल पत्ता हरि न रहताहे परंतु दस पांच दिवसमेंस्व
यमेंवहि सुष्क सूक जाताहे १ चणीक चीणा भूजदिये पश्चात् बोवें-
तो उगते नाही अर खावें तो स्वाद लागते १ तिलमेंसें तेल निकसे पश्चा

न् पलट करिके नहीं मिलते १ इत्यादि० जैसै समुद्र है सो बहुतसे रतन आदि अनेक वस्तुसै भरया होय है सो येक जल करि भरयाहै तोहू तामै निर्मल छोटी वडी अनेक लहरी कल्लोल उठे है ते सर्व येक जलरूप ही है तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान मयि समुद्र है सो रतन त्रय सम्यक् दर्शण सम्यक्ज्ञान सम्यक् चारित्र ये ही तीन रतन आदि अनेक शुभाशुभ शब्दादिक वस्तुसै भरया होय है सो येक समरस जल करि भरयाहै तो-हू तामै निर्मल कुमतिज्ञान कुश्रुतिज्ञान कुअवधिज्ञान बहुरि मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान केवलज्ञान आदि ये ही छोटी बडी तामै अनेक लहरी कल्लोल उठे है ते सर्व येक स्वसम्यक् ज्ञानमयि-स्वसमरस जल नीर ही है १ जैसै लोद फिटकडी का पुट बिना मजीठ रंगमै वस्त्र भीजो रहै चिरकाल तोहु वस्त्र सर्वथा नही होवै लाल तैसैही जीव संसारमै है चिरकालसै है सो सर्वथा प्रकार कदाचित् कोई प्रकार वीआ

पणा जीव स्वभाव छोड करिकै अजीवसै येक तन्मयि होते नाही। १ जैसै निश्चय करि स्वर्णहै सो कर्दमकेबीच पड्याहै तोहु कर्दम करिके तन्मयि लिप्त होते नाही स्वर्णके तन्मयि काई लागती नाही। तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी निश्चय करि संसार कर्दमके बीच पड्याहै तोहु ताके रागद्वेष रूपमै लाई तन्मयि लिप्त होता नाही। २ जैसे शंख श्वेत स्वभावहै सो शंख सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनकूं भक्षण करै है तोहु ताका श्वेत भावहै सो कृष्ण करणेकूं समर्थ नाही हूजियेहै तैसैही स्वसम्यक् दृष्टीका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभावहै सो सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनका भोग उपभोगकूं भोगता संताबी तोहु ताका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभावहै सो अजीव अचेतन अज्ञानमयि भाव करणेकूं समर्थ नाही हूजियेहै १ जैसे सहस्रमण कांच खंडमै येक असल रतन पड्योहै तोबी सो असल रतन अपणा रतन-

स्वभाव गुण लक्षणादिककूं छोड करिके तिस काच खंड वत् होते नाही तैसैही स्वसम्यक् दृष्टि अनंत अज्ञान मधि संसारमै पड्योहै तोभी अपणा स्वसम्यक् ज्ञान स्वभावकूं छोडकरिकै संसार अज्ञानमधिसै तन्मयि तत्स्वरूप होतेनाही १ जैसै दुग्ध जलमिले हुयेकूं हंस जल छोडकरिके दुग्धकौ ग्रहण कर्ताहै तैसैही क्षीर नीर वत् मिले येह संसार अर स्वसम्यक् ज्ञान ताकूं स्वसम्यक् दृष्टी हंस अज्ञान मयि संसारकूं छोड करिकै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावकूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसै हस्तीका मस्तगमै मांस अर मोती मिलेहै ता मै काग पक्षीहै सोतो मोती छोड करिके मांस ग्रहण कर्ताहै बहुरि हंस पक्षी हैसो मांस छोड करिके मोती ग्रहण कर्ताहै तैसैही मिथ्या दृष्टीतो स्वसम्यक् ज्ञान गुण छोड करिके अज्ञानकूं ग्रहण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी अज्ञान भोगगुणकूं छोड करिके स्वसम्यक् ज्ञानगुण

कूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसै परवस्तकूं परवस्तसै तन्मयि होय करिकै परवस्तकूं ग्रहण कर्ताहै सो निश्चय तस्कर चोरहै सोई दर उदर शंका सहित भ्रमण करैहै बहुरि अपणा आपमै आपमयि आपही काध न ग्रहण कर्ताहै सो साचो सत्य निश्चय साहुकार है सो इदर उदर निःशंकासहित भ्रमण कर्ताहै वेफिकर तैसैही मिथ्यादृष्टीहै सो तो तस्कर चोरवत शंकासहित संसार चारगति चौरासी लक्षयोनी मे भ्रमण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक दृष्टीहै सो जैसै कुंभकार का चक्रके ऊपर अचल बैठी हुई मखी परिभ्रमण करैहै तैसैही सत्य साहुकार वत् स्वसम्यक दृष्टी है सो निःशंक वेफिकर संसार च्यारगति चोरासी लक्ष योनीमे भ्रमण करैहै १ जैसै येक पुरुष नदीके तटपर खडो हुवो तीव्र वेगसे वहताहुवा नीरकूं एकाग्रह ध्यान करिकै देखैया तिस कारणसै उसकूं येह भ्रांति हुई के हम भी बहेजाते है पुकारता था

दुःखीथा ताकूं दयालमूर्तिसद्गुरू कहताहै के तूं दुःखी मति होतूं नही बहताहै येह तो नदीकोनीर बहताहै अबतू इसदुःखसैं सर्वथा प्रकार भिन्न होणेके अर्थ सर्वथा प्रकार बहताहुवा नदीकानीर कूंमति देखै तूं तेरी तरफ देख तब गुरू आज्ञा प्रमाण भ्रांतिमे बहता पुरुष बहताहुवा नदीकानीरकूं देखणा छोड करिके अपणा आपही तरफ देख करिकें आपकूं अचल नही बहतासमज करिके बहुत खुसी आनंदहुवो अर गुरुके चरणमै नमोस्तु करिकें कहीके हेगुरूजी मै बहेजातोथो सो आपमोकूं बचादियो तैसेंही गुरु संसारमे बहते हुयेकूं बचादेताहै १ सारांस हे मुमुक्षु जनहो बहताहुवा भरमजाल ससारसे बचणेकी तुमारेकों इच्छा है तो इस भ्रमजाल संसारकूं देखणेके अर्थ तो तुम जन्मांध वत होजावो बहुरि तुमारा तुमसे तन्मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावहे ताकूं देखणे

केअर्थ तुमसद्दश्य सूर्यवत् अचलहोजावो १ जैसै रसोई पाकसस्थान
मै आटो दाल चावल घृत सर्करा गुड लवण मिरच भांडा बासण लक
डी इंधन आदि भोजनकी सामग्री अर भोजन बणावणे वालो आदिस
र्वहै परंतु अग्नी बिना तांदुलादिक सर्व सामग्री कचीहै तैसेही सिद्धप
रमेष्टी कास्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानाग्नि विना येह मुनी पणा त्यागी ब्रती क्षु
ल्लक ब्रह्मचारी पणा दान पुन्य पूजा पाठ सास्त्राध्ययन ध्यान धारणा
उपदेस दणा लेणा आदि तीर्थ यात्रा जप तप शुभाशुभ व्यवहार बहुरि
शुभाशुभ व्यवहारका किया कर्म अर ताका शुभाशुभ फल आदिस
र्व कचाहै अर्थात् मिथ्या है यदिस्यात् पूर्वोक्त का फलहै तो स्वर्ग नरकहै
बहुरि स्वर्ग नरकहैसो अरहट घटियंत्रवतहै १ ज्ञान संसार सागर-
के भीतर बाहिरहै परंतु जैसा येह संसारहै तैसो ज्ञान नाही १ जैसेच
कमक पत्थरीमें अग्नीहै सो दीखतानाही तोबी अग्नीहै तैसे संसारज

गनमै स्वसम्यक ज्ञान प्रसिद्ध है सो दीखतो नाही तोबी स्वसम्यक्ज्ञा

नप्रसिद्धहै १ जैसै मूर्ख लोक कोई नयन्याय द्वारा कहताहै के अग्नी

जलतीहै बलतीहै परंतु पूर्ण दृष्टीसे देखियेतो अग्नी स्वभावमै अग्नी

नजलती नबलती तैसैही असत्य व्यवहार द्वारा देखियेतो स्वयंज्ञा·

नमयि जीव मरताहै जन्मताहै निश्चय सत्यजीवत्व स्वभावमै देखिये·

तो नजीव मरताहै नजीव जन्मताहै १ जैसै हम खूब चोकस ठिक निश्च

य करचूके सूर्यके सन्मुख अंधकार नाही तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानमयि

सूर्यकेसन्मुख अज्ञान रूपी अंधकार नाही १ जैसै सूर्यके अर अंध

कारके येक तन्मयि मेल नाही तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान मयि सूर्यके अ

र अज्ञानमयि अंधकारके परस्पर येक तन्मयि मेल नाही १ जोजिस

सै भिन्नहै वो उससै भिन्नहै इतिन्यायम् १ जैसै सूर्य प्रसिद्धहै ताही

का प्रकाशमै घट पट मठ आदि प्रसिद्धहै तैसैही स्वयंसम्यक् ज्ञानम

यि सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमें येह लोकालोक जगत संसार प्र-
सिद्ध है १ येह तन मन धन बचनादिक है सो बहुरि तन मन धन बचना-
दिकका जेता शुभाशुभ भावकर्म क्रियादिक अर इनका फल येह स-
र्व स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानकूं जाणत नाहीं १ स्वसम्यक् ज्ञानका अरये-
ह लोकालोक जगत संसारका मेलतो असाहै जैसा फूल सुगंधका-
सा दुग्ध घृतवत् तिलतैलवत् बहुरि येह लोकालोक जगत संसार है
ताका अर स्वयं सम्यक ज्ञान है ताका परस्पर अंतर भेद है तो ऐसा है
जैसा सूर्य अंधकारका परस्पर अंतर भेद है तैसा १ जैसे जहां पर्यंत
समुद्र है तहां पर्यंत कल्लोल लहरी चलती है तैसे ही जहां पर्यंत स्वस
म्यक् ज्ञानार्णव है तहां पर्यंत दान पुन्य पूजा ब्रत शील जप तप ध्या
नादिक की बहुरि काम कुशील चोरी धनपरिग्रह भोगविलासकी इ-
च्छा वांच्छा रूप लहरी कल्लोल चलती है १ जैसे कमल जलहीमें उ-

त्पन्न हुवो बहुरि जलहीमै रहताहै परंतु जलसै लिप्त तन्मयि नाहीहो
ते तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी येह लोकालोकजगतसं
सारमै उत्पन्न हुये ग्रर इसी ही संसार जगत लोकालोक मै रहताहै प
रंतु येह संसार जगत लोकालोकसैं लिप्त तन्मयि नाहीहोते १ जैसैन
दी समुद्रसै भिन्न नाही तैसैही जिस वस्तुमै ज्ञानगुणहै सोजीवजिनें
द्रसै भिन्न नाही १ जैसे सुवर्णकी वस्तु सुवर्णमयीहीहै बहुरि लोहाकीवस्तु लोह
मयीहीहै तैसैही स्वयंज्ञानमयिजीवकीवस्तुस्वयंज्ञानमइहै बहुरि ग्रज्ञानमयी ग्र
जीवहै ताकी वस्तु ग्रज्ञान मयिहीहै १ जैसैं मृग मरीच का जल दीखता
है सोनही दीखते प्रमाणवत मिथ्याहै तैसैही येह जगत संसार दीख
ताहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानसै तन्मयि होयकरि स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानकी तरफ देखते संते मिथ्याहै १ जैसैं मृग जलमैं किसीकी तृषा
उपसम होती नाही वरूग्रगीलाहोते नाही तैसैही तीव्र स्वयं स्वसम्यक्

ज्ञानमयि सूर्यका भलाबुरा येह मृगमरीचका जलसै भऱ्या संसारजगत है तासै होतेनाही १ जैसै जहांको वासी तहांको मरमजाणे तैसैही स्वसम्य क्ज्ञानमै तन्मयि होय करि रहताहै सो स्वसम्यक् ज्ञानको मरमजाणताहै १ जैसै जिस हांडीमै खाणेकूं मिले ताकूं फोडणा तोडणा बिगाडणा जोग्य नही तैसैही येह लोकालोक जगत संसारमै जिसकूं स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानकी प्रापकी प्राप्ति भई ऐसा संसारकूं बिगाडणा जोग्य नही १ जैसै पूर्णजलसै भऱ्योघट शब्दनाहीकर्ताहै तैसैही परिपूर्ण स्वस्वभाव समरसनीरसै तन्मयि स्वयं स्वसम्यक् ज्ञानहै सो शब्दसै तन्मयि होय करिकै नही बोलताहै १ जैसै जहां पर्यंत मंडपहै तहां पर्यंत बेलि बिस्तीर्ण होय रहीहै ऐसै नहीसमजणा के बेलडीमै बिस्तीर्ण होणेकी सक्ती नहीहै तैसैही उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमाकोज्ञान लोकालोक पर्यंत बिस्तीर्ण होयरह्योहै ऐसै नही समजणा के उस-

ज्ञानमयि परमातमामैं येतावन्मात्रही ज्ञानहै अर्यात् जैसा येह लोका
लोकहै ऐसाही और सहस्र लक्ष लोकालोकबी होयतो यो स्वसम्यक्
ज्ञानमयि परमातमा येकही समयमात्र कालमैं निराबाध पूर्वक जाणै
परंतु येह लोकालोक शिवाय दूसरो ज्ञेयकोई हैही नाही भावार्थ जा॰
णै किसकूं जाणताही है सो क्या जाणै येहलोकालोकतो तिस स्वसम्यक्
ज्ञानमयि परमातमा का ज्ञानप्रकाशके भीतर अणुरेणुवत् नही-
जाणै किदर कहां पडे है १ जैसे स्वमाकी मायाकूं छोडणा क्या अर ग्रह॰
णा कैसे करणा तैसैही वो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सो इस अ
ज्ञान मयि लोकालोक जगत संसारकूं छोड करिके कहां पटके कहांडा
लै बहुरि ग्रहण करिके कहां राखै कहां धरै १ जैसे कांचकी हांडीमे दी
पक भीतर बाहिर प्रकास रूपहै तैसेही किसी जीवकूं गुरुपदेस द्वारा॰
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान सरीरके भीतर बाहिर प्रसिद्ध होवै सोजीव

सहस्त्रवेर धन्यवाद योग्यहै १ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म पर
मातमाको अचलानुभव कैसे होय उत्तर हेशिष्य इस भवनमें तूं उच्चा
स्वरसै अलाप ऐसें करिके तूंही तबशिष्य गुरुआज्ञा प्रमाण तिस भवनमं
दिरमै उच्चा स्वरसें कहीके तूंही तबनतसमयही पलट करिके तिस शिष्य
के कर्णद्वारा होकरि अंतःकरणमे प्रतिध्वनि सोकीसोही पहोंचीके तूं
ही तबशिष्य प्रतिध्वनी श्रवण द्वारा निश्चय धारण करिके स्वसम्यक्ज्ञा-
नमयि परब्रह्म परमातमाहै सोही सोहं १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव श्रव-
ण करो जैसें कोइ पुरुष नीरसे भरया घटमै सूर्यको प्रतिबिंब देख करिके
संतुष्टथो ताकूं निश्चय सूर्य कूं जाणतो पुरुष कहीके तूं ऊपर आकाश
मै सूर्यहै ताकूं देख तब वो पुरुष घटमै सूर्यकूं देखणा छोड करिके ऊप
र आकाशमे देखणे लागे तब निश्चय सूर्यकूं देख करिके अपणा अंतः
करणमे बिचार कियाके जैसो ऊपर आकाशमै सूर्य दीखताहै तैसोही

घटमैं सूर्य दीखनाहै जैसोइहां तैसोउहां तैसोउहां जैसोइहां नइहां·
नउहां अर्थात् जैसोहै तैसोजहांको तहां तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानमयि
सूर्यहै सो तोजैसोहै तैसो जहांको तहां स्वानुभवगम्यहै सोहै यहनय·
न्याय शब्दसें तन्मयि बणरह्याहै पंडितसो स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
यि परब्रह्म परमानमाकूं अनेक प्रकारसें कल्पहै सो व्यथाहै १ जैसे येक
किसीको प्रियपुत्र द्वादश वर्ष पश्चात् परदेसमेंसे आयो आनें प्रमाण मा·
ता भ्राता सज्जनादिकसें मिले ताको आनंद हुवो सोफेरवो आनंद रहनाना
ही आनंदको हेतु परदेसमेंसे आयो सो पुत्रविद्यमानहै परंतु प्रथमभमि
लापसमय प्रथमानंद हुवाथा तैसा आनंद अबहैनाही इहां प्रथमानंद
संभवैहै इसी आनंदसें सर्वानंदरूपहै तैसैही प्रथम स्वयंसिद्ध स्वस·
म्यक्ज्ञानमयि परमानमा परमानंदमयि प्रथमहै उसीसे भोगानंद जो
गानंद धर्मानंद विषयानंद हिंसानंद दयानंद आदिजेता आनंदशब्द·

है सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंद का सूचक है १ जैसे अंध
कुटीमै बैठै हूवो पुरुष जिस कुटीके द्वारा होकरिकै बाहिर मनुष्य पशू प-
क्षी वृषभ घोटकादिक परहै ताकूं जाणतहै बहुरि स्वयं आपकूंबी जाण-
तहै तैसैंही स्वसम्यक ज्ञान मयि सम्यक् दृष्टी स्वयंदेह अंधकुटीमे बैठ
करिकै आपापरकूं जाणतहै १ जैसा बीज ताका तैसा फल १ जैसे नेत्र
सै देखताहै बहुरि नेत्रकूं नही देखताहै सो अंधवत् स्यात् तैसैही ज्ञान-
सै जाणताहै बहुरि ज्ञानकूं नही जाणताहै सो अज्ञानवत् स्यात् १ जैसै
नट नाना प्रकार का स्वांग धारेहै परंतु आप अपणा दिलमे जाणताहै मा
नताहै के येह जैसा स्वांगहै तैसा मैनाही तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि स-
म्यक् दृष्टीहै सो अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयि है-
ताकूं तो स्वांग न मानतहै न समजतहै परंतु स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानसे त-
न्मयी नाही जिस सर्वहीकूं स्वांग जाणताहै मानताहै १ जैसे घरके अ-

मी लागै ताके प्रथम कूपरयो दणा जोग्यहै तैसै हीयेह देह कुटीके काला
मिलागै ताके प्रथम सद्गुरु वचनोपदेस द्वारा देह कुटीके भीतर बाहिर म
ध्य निरंतर स्वसम्यक् स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयिस्वभाव वस्तूहै
ताकूं तन्मयि समज लेणा मान लेणा योग्यहै १ जैसै चकवा चकवी सा
यंकाल रात्री समय अलग अलग होजानेहै सो कोण उनकूं द्वेष भाव·
से अलग अलग कर्त्ताहै वहुरि प्रात काल सूर्योदय समय वह चकवा च·
कवी परस्पर मिलतेहै ताकूं कोण प्रीतराग भावसे मिलातेहै तैसैही
जीव अजीवकूं कोणनो प्रीतराग भावसे मिलायाहै वहुरि कोण द्वेषभा
वसै अलग अलग करताहै १ जैसै स्रुवर्णका अनेक भेद अलंकारहै अ
नेक भेद अलंकारकूं गलादेवनो येक केवल स्रुवर्णहीहै तैसैही येक स्व·
यंसिद्ध स्वसंम्यक ज्ञानहै ताका भेद कुमतिज्ञान कुश्रुति ज्ञान कुअवधि-
ज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्ययज्ञान केवलज्ञान इत्या

दि भेदहै ताकूं गालदेइ चांदे तो यक केवल स्वयं सिद्ध स्वसम्यक ज्ञानही
है १ जैसें सूर्यका प्रकासमें अंधकार कहांहै सूर्य निकासलीयोतो प्र-
तिबिंब कहांहै आत्मज्ञानीकूं जगत संसार मृगजल वनहै सूर्य नहोय-
तो मृगजल कहांहै ऐसे गुरूपदेस द्वारा आपकूं आपमें आपमपि आप
हीमें आपकूं रवचलियेसें आकार कहांहै ऐसें जगत संसार है सो भरम
है भरम उडगये तो जगत संसार कहांहै १ जैसें जल अग्नीको संयोग पा
य करिकें गरमहै परंतु गरमहै नही क्यूंके उसी गरम जलकूं अग्नीके ऊ
पर डालदे पटकदे तो अग्नी उपसम होजाती है बूज जाती है तैसेंही स्व
सम्यक ज्ञानहै सो क्रोधादिक अग्नीको संयोगपाय करिकें संतप्त होजा
तेहै परंतु संतप्त होते नाहीं क्यूंके उसी स्वसम्यक ज्ञानकूं क्रोधादिक अ
ग्नीके ऊपर वा संसार जगतके ऊपर डालदे पटक देतो क्रोधादिक अग्नी व
हार संसार जगत उपसम होजाते है १ जैसें सूर्यको प्रकास तथा आका

श सर्वत्रहै तैसैंही स्वसम्यक्ज्ञान सर्वक्षेत्र काल भव भावादिकहै तहां
है निश्चयनयात् १ स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावमें रात्री दिवसका भेद नसंभ-
वै इसी वास्तै स्वसम्यक्ज्ञानको नाम सदोदय सूर्यहै १ जैसैं बालक ल
डका लडकी बाल्य अवस्थामें गुदागुदी बनाय करिकें मैथुनादिक भोगो
पभोग आभाषमात्र कर्त्ताहै परंतु योवन अवस्था समय साक्षात् मैथु
नादिक भोगोपभोग उसींही लडका लडकीकूं निश्चय प्राप्त होजावैहै
तब पूर्वकृत्य गुदागुदीकूं असत्य जाणकरिकें येक ठिकाणें समेट क॰
रिकें राख देताहै तैसैंही किसीकूं गुरुपदेश द्वारा काल लब्धी पाककद्वा
रा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानस्वभावकी अचलता परमावगा
ढता होणेजोग्य होचुकी सो धातु पाषाण काष्टादिककी मूर्त्ति जहांकीत
हां दूसरे बालवतके अर्थ राख देताहै १ जैसैं समुद्रका जल खाराहै परंतु उ
सी समुद्रके तट कूप खोदै तो जल मिष्ट निकलताहै तैसैंही गुरुपदेस पाय

करिके कोहू संसार क्षारसमुद्रके तट खोजे गातो स्वसम्यक् ज्ञान मिष्ट जलका लाभ होवेगा १ जैसें दोहा बीजराखफरव भोगये ज्यू की साएजगमांहि ॥ त्यूंचक्रीनृपफखकरें धर्मबिसारनांहि ॥१॥ तैसेंही-कोहू स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभावबीजकूं आपका आपमें आपमयि आपहीके पास आपही राख करिके पश्चात् संसारका शुभाशुभ फल भोगताहै ताको स्वभावधर्म कदाचित् कोहूप्रकारबी नष्ट होनेनाही १ जैसें वृक्षकी जड मूलमें इच्छाप्रमाण जलडालो परंतु समयपाय फल लागेगा-तैसें ही मिथ्यादृष्टीकूं इच्छा प्रमाण स्वसम्यक् ज्ञानोपदेस देवो तथा साक्षात् सूचक वचन कहोके तूही जिनेंद्र शिव स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव-सूर्यहे ऐसा सूचक वचन कहते संतेबी मिथ्या दृष्टीके स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता काललब्धी पाचकहुये विना होतीनाही १ जैसें सूर्य प्रकाश कर्ताहै अंधो नही देखनो तो सूर्यकूं क्या दोष तैसें स

नगुरु सम्यक ज्ञानोपदेस कर्ता हैं मिथ्यादृष्टी स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी
परमावगाढता नही धारण कर्ता हैं ताको सनगुरु कूं क्यादोष १ जैसे
दीपकतो अन्य घट पटादिक वस्तू कूं प्रगट नाही कर्ता क्यूं के वह वस्तु
दीपककूं ऐसे कहती नाही प्रेरणा करती नाही के हे दीपक तुम हमकूं
प्रगट करो तैसे ही दीपक उस घटपटादिक वस्तूकूं कहता नाही प्रेर·
णा कर्ता नाही के हे घट पटादिक वस्तू हो तुम मोकूं प्रगट करो तैसे ही-
स्वसम्यक ज्ञानदीपक हैसो तो अन्य संसार वा तनमन धन वचनादिक व
स्तूकूं वहुरि तन मनधन वचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया
कर्म हैं ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल हैं ताकूं प्रगट नाही कर्ता क्यूंके
यह संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु है सो वहुरि इनका शुभाशुभ·
व्यवहार क्रिया कर्म है सो अर इनका शुभाशुभ फल है सो स्वसम्यक
ज्ञानदीपककूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा कर्ते नाही के हे स्वसम्यक ज्ञान

दीपक तुमहमकूं प्रगट करो तेंमेंही स्वसम्यक्ज्ञान दीपकहेंसो इस
संसार तन मन धन वचनादिक वस्तुकूं अर इनका जेता शुभाशुभव्य
वहार क्रिया कर्महे ताकूं अर इनका शुभाशुभ फलहे ताकूं ऐसें कह
तोनाही प्रेरणा कर्नो नाहीके हे संसार तनमन धन वचनादिक वस्तु
हो अर तन मन धन वचनादिक वस्तके जेता शुभाशुभ व्यवहार कि
या कर्महो अर इनके शुभाशुभफलहो तुम मोकूं प्रगट करो १ जैसें
बाजीगिर अनेक प्रकारका तमासा चेष्टा कर्ताहे परंतु आप अपणादि
लमे जाण ताहेके येह जेसा मे तमासा चेष्टा कर्ताहूं तेसोमे मूल स्वभा
वहीसे नाहीहूं तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानमयि सम्यक्दृष्टी सर्व संसारका
शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ताहे परंतु आप अपणादिलमे निश्चय जाण
ताहेके जेसामे संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ताहूं तेसा तन्मयि क
दाचित् कोई प्रकारवी नाहीहूं जैसा कर्म चेष्टा कर्ताहूं तैसोमे मूलस्व

भावहीसै नाहीहूं १ जैसै बाजीगिर मिथ्या मृगजलवत् आम्रवृक्ष ल-
गातोहै ताकूं देख करिके किसी पुत्रको कहीके हे पुत्र यहो बाजीगिर
आम्र वृक्षलगायो सो मिथ्याहै परंतु पुत्रको पिता बाजीगिरकूं मिथ्या
नही जाणतोहै तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मकूं मि
थ्या जाणतोहै परंतु जोकर्मसे अनन्मयि होय कर्मको कर्ताहै ताकूं मि
थ्या नहीं जाणताहै नमानताहै नकहताहै १ जैसे खंडी पांडु आपस्व
मे यही श्वेतहै अर परजो भीत आदिककूं स्वेत करैहै परंतु आप भीत-
आदिकसे तन्मयि होती नाही तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान है सो सर्व संसार
आदिककूं चेतन वत् करि राखेहै परंतु आपसंसार आदिकसे तन्मयि
होते नाही १ जैसे जेलखानामे बेडीसे बंध तस्करादिकवीहै अरति
सही जेल खानामै निर्बंध शिपाई जमादार फोजदारवीहै तैसेही सं-
सार कारागारमै मिथ्यादृष्टी तो कर्मबंधयुक्त है बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी

कर्मबंधरहितहै १ दृष्टांतमें तर्ककर्ताहै जिसकूं स्वभावसम्यक्ज्ञा
नको लाभनही होताहै १ जैसै सर्बतमें मिश्री एलायची दुग्ध काली
मिरच बिदाम बीज केशर जलमिश्रित बहुत द्रव्यहै सो अपणे अप-
णे स्वभावगुण लक्षणमें मग्नहै तथापि येक सर्वत नामहै तैसैही-
जीव पुद्गल धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकासद्रव्य कालद्रव्य येह षट्मयी
संसारहै तामै ज्ञानगुण जीवमैंहै और पांचद्रव्यमे नाही १ जैसै समुद्र
मे अनेक नदी नालाको जल जावैहै तहां येहबी भाग नाहीहै के योज
लतो अमुकीनदीकोहै बहुरि यो जल अमुकी नदीकोहै तैसैही स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव समुद्रमे येह बिभाग नही
है के योज्ञानतो जैनकोहै अर यो ज्ञान बैष्णुकोहै अर योज्ञान शिवकोहै
यो बोधका योनयायिक चार्वाक् पातांजली सांख्यकोहै इत्यादि कबी
भाग बिधि निषेध स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानार्णवमे नसंभवे १ जैसै कोहू-

पुरुष सन्निपात युक्ति अपणा स्वघर मै सूतोहै अर भरम भ्रांतियुक्त क
हताहैके मै मेरा घरमैजाऊं तैसैही स्वयं ज्ञानमयि जीव अपणा ज्ञानम
यि स्वभाव मोक्षसे भिन्ननाही तथापि भरम भ्रांतिसे मोक्षमै जाणेकी
इच्छा कर्ताहै १ आगै फकत केवल दृष्टांत द्वारा अपणा आपमै आप
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका अनुला
नुभवलेणा इति अथ केवल दृष्टांत संग्रह प्रारंभ दोहा नमौज्ञा
नसिद्धांतकूं नमौज्ञानशिवरूप ॥ धर्मदासवंदनकरै देवअनमाभूप
॥१॥ प्रश्न स्वसम्यक्ज्ञानमयि आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये ता
को उत्तर दृष्टांत द्वारा कहतेहै यह आत्मा स्वसम्यक्ज्ञानमयि चैतनस्व
रूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव्यहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी गम्यहै अ
नंत नयहै सो सब श्रुति ज्ञानहै तिस श्रुतज्ञानप्रमाणकरि आत्मा अ-
नंत धर्मात्मक जानियेहै इसवास्ते नय निकरि स्वभाव सम्यक्ज्ञान वस्तु

दिखाइयहै सोही आत्मा द्रव्यार्थक नय करि विन्याभहै दृष्टांत जैसे व-
स्त्र येकहै तैसै स्वभाव सम्यक् ज्ञानमयि आत्मा येकहै १ जैसे वस्त्र-
सूत तंतु आदि करि अनेकहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा दर्शन-
ज्ञान चारित्र सुख सत्ता चेतन जीवत्वादि करि अनेकहै १ जैसे लोह मयिबा
ण अपणा द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव करि अस्तिहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि आत्मा अपणी आपमै आपमयि आप द्रव्य आपहीमै आप रहता
है वास्तै आपही क्षेत्र आपहीमै आप वर्तनाहै वास्तै आपही काल आप
ही आपकास्वभावहै मैंहै वास्तै आपही भवभावकरि अस्तिहै १ जैसे लो
हमयि बाणपर द्रव्य क्षेत्र काल भव भावादि करि नास्ति तैसैही स्वसम्यक्
ज्ञानमयि आत्मा परद्रव क्षेत्र काल भव भावादि करि नास्ति १ जैसे दर्पण
मै स्वमुख नहीं देखो तोबी स्वमुखहै बहुरि दर्पणमै स्वमुख देखो तोबी स्व
मुखहै तैसैही हे स्वसम्यक् ज्ञान तूं नरेकूं संसार जगत जन्म मरण नामा

नाम बंध मोक्ष स्वर्ग नर्कादिकमें नहीं देखै तोबी तूं अनादि अनंत निरं
तर सम्यक्‌ज्ञानहीहै बहुरि हे स्वसम्यक्‌ज्ञान तूं तेरेकूं सूर्यप्रकासवत् ये
क तन्मयि तेरा तेरेही भीतर तूंही तेरेकूं देखै तोबी तूं सोको सोही अना
दि अनंत निरंतर स्वसम्यक्‌ज्ञानहीहै १ जैसे कोहू स्वहस्तसे आपही·
का स्वस्थानमें आपहीकी स्वसिंदूकमें तिजोरीमें रतनराखे राख करिके
और वर्तिमें लागजावे तब तिस रतनकूं भूलबी जावैहै परंतु जब यादक
रै तबही सोरतन अनुभवमें आवैहै तैसेंही कोहू शिष्यकूं सतगुरुके वच
नोपदेस द्वारा तथा काललब्धि पाचक द्वारा स्वस्वरूप स्वसम्यक्‌ज्ञानानु
भव होणे जोग थोसो होगये परंतु पूर्व कर्म वसात् और वर्तिमें लागजावै
तब तिस स्वसम्यक्‌ज्ञानानुभवकूं भूलिबी जावैहै परंतु जब याद करै तब·
साक्षातपणे स्वानुभवमें आवैहै १ इसीके अर्थ तीनदृष्टांत जैसे येकवेर·
चंद्रकूं देखलीयें चंद्रानुभव नहीं जाने १ जैसे येकबेर गुडकूं खाये पश्चात्

गुड़ानुभव नही जातें जैसें येकबेर भोग भोगे पश्चात् भोगानुभव नही जाते १ जैसें काहू दर्पणकूं सदा काल स्वहस्त मे लियेरहताहे ताकी प छोयर बेर देरवतहे निरस करिके स्वमुरव दीरवते नाही दर्पणकी पछीकूं प लट करिकें स्वच्छ दर्पणमे स्वमुरव देरवंनो स्वमुरव दीरवे तैसेंही मिथ्या दृष्टी इस संसार तन मन धन वचनकी तरफ बहुरि तन मन धन वचनादि कका जेता शुभाशुभ व्यवहार किया कर्म श्रर इनका शुभाशुभ फ- लकी तरफ देरवताहे वास्ते स्वसम्यक ज्ञान नहीं दीरवतो नहीं स्वानुभव- मे श्रानो बहुरि इन संसार तन मन धन वचनादिककी तरफ देरवणा छो- डकीरकें स्वसम्यक ज्ञानकी तरफ निश्चय देरवंनो स्वसम्यक ज्ञानही दीरवे- स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होवे १ लोकालोक कूं जाणवाकी बहुरि नही जाणवाकी येह दोहु कल्पनाकूं सहज स्वभा- वहोसै जाणताहे सोही स्वसम्यक ज्ञानहे १ जैसे हरित रंगकी मेंदीमें

लालरंगहै परंतु दीखतोनाही पत्थरीमै अग्नीहै परंतु दीखतीनाही
दुग्धमै घृतहै परंतु दीखतोनाही तिलमै तैलहै परंतु दीखतोनाही
पुष्पमै सुगंधहै परंतु दीखतीनाही तैसैही जगतमै स्वसम्यक्ज्ञान
मयि जगदीश्वरहै परंतु चरमनेत्र द्वारा दीखतोनाही किसीकूं सतगुरु
वचनोपदेस द्वारा काललब्धि पाचक द्वारा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्म·
यिस्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभव मै अचलदीखताहै १ जैसे व्यभिचार·
णीस्त्रीस्वघर कार्य कर्तीहै परंतु ताको चित्त मन व्यभिचारि पुरुषकी तर
फ लागरत्योहै तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक का
म कार्य कर्ताहै परंतु ताको चित्त मन स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमात्माकी
तरफ लागरहतोहै १ जैसै जिसस्त्रीका शिरकेऊपर भरतारहै स्यात् सो
स्त्री पर पुरुषका निमित्तसे गर्भबीधारण करै तो ताकूं दोष लागतेनाही
तैसैही किसी पुरुषका मस्तगसे तन्मयि मस्तगकेऊपर स्वसम्यक् ज्ञान

मयि परब्रह्म परमातमाहैं स्यात् सो पुरुष परकर्म बसात् दोषबी धारण करैतो तापुरुषकूं दोष लागनेनाही बडेका सरणा लेणेका येही फल है १ जैसे मूका पुरुषका मुखमै गुडखंडदेकरि पश्चात् मूकासै बूजीके कहो मूका गुडकेसा मिष्टहै इहां मूकाकूं गुडका मिष्टानुभवहै परंतु कहनहीसक्तो तैसैही किसीकूं गुरु बचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होणेजोगथी सो होचुकी परंतु कहनहीसक्तो १ जैसे हस्तीका दंत बाहिर दीखणेका औरहै बहुरि भीतरचावणे खाणेका औरहै तैसैही जैन वैष्णु आदिक कारुषी मुनी आचार्यका रचेहुये वेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पुराणादिकहै सोतो हस्तीका बाहिरका दंतवत् समजणा बहुरि भीतरका आसय असल जिसकाजो ही जाणै १ बंधको बिलास डालदीजे पुद्गलपे तथा देहीका विकार तुम देहाशिर दीजिये १ स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानहै सोतो तनमन धन बचनादि

कसे तन्मयि नत्स्वरूप कदापि नाही फिर गुरू स्वसम्यक ज्ञानानुभव-
की अचलता अवगाढता निश्चयता करदेताहै धन्यहै गुरू सहत्मवेर
धन्यहै १ जैसे जैन वैष्णु बौद्ध शिवादिक कोऊ ही हो जो चौरी करैगो-
सो बंधमें पड़ैगो तैसेही कोऊ ही हो जो कोऊ गुरु वचनोपदेस द्वारा वा
काललब्धि पाचक द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वसम्यक ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता धारण करैगो सोही संसार भरम जा-
लसे भिन्न होयके सदाकाल स्वानुभवमें मगनरहैगो १ भम ॥
आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये ताका उत्तर दृष्टांत द्वारा कहतेहै येह आ
त्मा चैतनस्वरूप अनंतधर्मात्मक येकद्रवहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी
गम्यहै अनंतनय सब श्रुतज्ञानहै जिसश्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा-
अनंतधर्मात्मक जानियेहै इसवास्ते नयनिकरि वस्तु दीषाइयेहै सोही
आत्मा द्रव्यार्थिक नयकरि चिन्मात्रहै दृष्टांत जैसे वस्त्र येकहै अरसो-

ही आत्मा पर्यायार्थिक नयकरि ज्ञान दर्शनादिक रूपकरि अनेक है जैसै सोही घरूा सृतक तंतु वनि करि अनेकहै अस्तित्वनयकरि सो-ही आत्मा स्वद्रव्यक्षेत्र काल भावनिकरि अस्तित्व रूपहै जैसै लोहम-यीबाण अपणे चतुष्टय अस्तित्व रूपहै लोहातो द्रव्यहै धनुष अरगु णके बीचरहैहै तातै यह बाणका क्षेत्रहै जो साधनेका समय है सोका लहै निसाणेके सम्मुखी है सो भावहै इसभांति अपणे चतुष्टय करि-लोह मयि बाण अस्तित्व रूपहै और नास्तित्व नय करि सोही आत्मा परद्रव्य षेत्र काल भावकरि नास्तित्व रूपहै जैसै लोह मयी बाण सोही लोहाके बाण नाही। और धनुषगुण बाचि नाही। और साध्या नाही। औ र निसाणेके सन्मुष नाही ऐसै सोही। लोह मयी बाण पर चतुष्टय करि नास्तित्व रूपहै और अस्ति नास्ति नयकरि स्वचतुष्टय पर चतुष्टय करि क्रमसों सोही आत्मा अस्ति रूपहै जैसै सोही बाण स्वचतुष्टय परचतु-

ष्टय क्रम विवक्ष्याकरि अस्ति नास्ति रूप होय है अर अव्यक्त नयकरि सो
ही आत्मा येकही बार स्वचतुष्टय परचतुष्टय करि अव्यक्त है जैसे सोही
बाण स्वपर चतुष्टय करि अव्यक्तव्य सधै है और अस्ति अव्यक्तव्य नय
करि सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और येकही बार स्वपर चतुष्टयकरि-
अस्तिरूप अवक्तव्य बाणके दृष्टांतकरि जानना और नास्ति अव्यक्त
व्य नयकरि सोई आत्मा परचतुष्टय करि और येकही बार स्वपर चतुष्ट
यकरि नास्तिरूप अव्यक्त व्य बाणके दृष्टांत करिजानना और अस्ति-
नास्ति अव्यक्तव्य नयकरि यसोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और परचतुष्ट
यकरि और येकही बार स्वपर चतुष्टय करि अस्तिनास्ति रूप अव्यक्तव्य
बाणके दृष्टांत करिजानना सविकल्पनयकरि सोही आत्मा भेदलीये
है जैसै येक पुरुष कुमार बालक जुवान वृद्ध भेदनिकरि सविकल्पहो
है और अविकल्पनयकरि सोही आत्मा अभेद है जैसे येक पुरुष पुरु

षत्व करि अभेदरूपहै नामनय करि सोही आत्मा शब्द ब्रह्मकरि नामले करि कह्या जावहै स्थापना नयकरि सोही आत्मा पुद्गलका अवलंबन करि थापियेहै जैसें मूर्तिकपदार्थ थापियेहै द्रव्य नयकरि सोही आत्मा अतीत अनागत पर्याय करि कहियेहै जैसें श्रेणिक महाराजा तीर्थंकरका दलधाराहै भावनयकरि सोही आत्मा जिस भाव परिणाममैंहै तिस परिणामसें तन्मयी होहै जैसें पुरुषाधीनस्त्री विपरीति संभोगविषै प्रवर्त्ती तिस पर्याय रूपहोहै सामान्य नयकरि सोही आत्मा अपने समस्त पर्यायनिविषै व्यापीहै जैसें हार सूत सर्व मुक्ताफलनिविषै व्यापीहै विशेष नयकरि सोही आत्मा येक पर्याय करि कहियेहै जैसें तिस हारका येक मुक्ताफल सब हार विषै अव्यापीहै नित्यनयकरि सोही आत्मा ध्रुवरूपहै जैसें नट अनेक यद्यपि स्वांग धरैहै तथापि सोही नट कहै अनित्य नय करि सोही आत्मा अवस्थांतर करि अनवस्थितहै जैसें सोही नट राम राव-

णादिकके स्वांग करि औरका और होहै सर्वगत नयकरि सकलपदार्थ
वर्तिहै जैसै धुली आंष समस्त घट पटादिविषै पदार्थविषै प्रवर्तै है अ
र सर्वगत नय करि आपही विषै प्रवर्ते है जैसे मुंद्या हुवा नेत्र आपही
विषै है सून्यनयकरि केवल येकही सोभायमान है जैसे सूना घर येक
होहै असून्य नय करि अनेक करि मिल्याहुवा सोभै है जैसे अनेक लो॰
कनिकरि भरी नांव सोभै है ज्ञान ज्ञेयके अभेद कथनरूप नयकरि येक
है जैसे अनेक इंधनाकार परिणया हुवा अग्नि येक है ज्ञान ज्ञेयके भेद
करि कथन करि अनेक है जैसे अनेक घट पदादि पदार्थनिके प्रतिबिंब॰
निकरि मानैं ड अनेक रूप होहै नियतिनयकरि अपने निश्चित स्वभाव॰
कौंलिये होहै जैसे पाणी अपणे सहजीक स्वभाव करि सीतलता लिये
होहै अनियतिनयकरि अनिश्चित स्वभाव होवै जैसे पाणी अग्नीके संबं
धसौं उष्ण होहै स्वभाव नयकरि काहू करि समारया नाहीं होना जैसे स्वभा

वकरि कांटाबी नाही घडे धडयासा तीषा होवैहै कालनय करि काल
के आधीन सिद्धत्वहै जैसे ग्रीष्म कालके अनुसार सहज डालका आंब
पकैहै अकाल नयकरि कालके आधीन सिद्ध नाही जैसे कृतम घासकी
उपमा करि पालके आंब पकैहै पुरुषाकार नयकरि जतनसे सिद्ध होवै
है जैसे सहित उपजायवेके वास्ते जतन करैहै काष्टके मादल विषे एक
मक्षिका राखियेहै तिस मधुमक्षिकाके शब्दसों और सहतकी मक्षिका
आय आय मधुच्छता करैहै ऐसें जतन सोभी सहतको सिद्धि होवैहै
तैसे जतनसोंभी सिद्धहै दैवनयकरि यतन बिनाही साध्यकी सिद्धि-
होवै जैसे जतन कीयाथा सहतके वास्ते मादलविषे मधुमक्षिकाका
और तिस मधुछता विषे दैवसंजोगते माणिक पाइयेहै तैसे यतन-
बिनाभी सिद्धि होवै इश्वर नयकरि पराधीन हुवा भोगवैहै जैसे बाल
कधायके आधीन हुवा खानपान क्रिया करैहै गुणिनयकरि गुणाकूं

ग्रहण करणे वाले है जैसे उपाध्याय करि सिखायाहुवा कुमार गुण ग्राही होवै अगुणि नयकरि केवल साक्षीभूत है गुणग्राही नाही॰ जैसे उपाध्याय करि सिखाइये जो है कुमार तिसकारषवाला पुरुषगुणग्राही नाही होता कर्तानयकरि रागादि परिणामनिनका कर्ता है जैसे रंगरेज रंगका करणेवाला होवै अकर्तानयकरि रागादि परिणामनिका कर्ता नाही साक्षीभूत है जैसे रंगरेज अनेकरंग करै है और कोहून मासगीर तमासा देषै है कर्ता नाही होता भोक्ता नयकरि सुष दुषका॰ भोक्ता होवै जैसे हित अहित पथ्यकूं लेतारोगी सुष दुष कूं भोगवै है अभोक्ता नयकरि सुष दुषका भोक्ता नाही केवल साक्षी भूत है जैसे हित अहितका पथ्यका जो भोक्ता है रोगी ताका तमासगीर धनवंतर वैदका चाकर साक्षीभूत है क्रिया नयकरि क्रियाकी प्रधानता करि सिद्धि होवै जैसे काहू अंधने महा दुखनेका हु पाषाणके थंवकूं णाय

अपना माथा फोडे तहां तिस अंधके मस्तग विषै ज्योरुधिर विकार था
सो दूर भया तातै ताके द्रष्टी हुई और तिसही जागै उनकूं निधान पाया
तैसै क्रिया कष्टकर भी वस्तुकी प्राप्ती होवै ज्ञान नयकरि विवेकहीका
प्रधानता करि वस्तुकी सिद्धि होवै जैसै काहू रतन परिक्षक पुरुष था
तिनने काहू अजाणदीन पुरुषके हात चिंतामणि रत्नदेख्या तब तिस
दीन पुरुषकूं बुलाय अपणे घरके कूणामै जायकरि येकचीणाकी मू
ठीके बदलै चिंतामणि रतन लीना जैसै क्रिया कष्ट नाही ज्ञानकरि व-
स्तुकी सिद्धि होवै व्यवहार नय करि येह आत्माकूं बंध मोक्ष अवस्था
की द्विविधा विषै प्रवर्तै है जैसै परमाणु स्नूं बंधै छूटै है तैसै येह आत्मा
बंध मोक्ष अवस्थाकों पुद्गल स्नूं धरै है निश्चय नय करि परद्रव्यसों बं
ध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधाकूं नाही धरै है केवल अपणेही परिणा
मनिसों बंधमोक्ष अवस्थाकौं धरै है जैसै येकला परमाणु बंधमोक्ष

अवस्थाकौं जोग अपणे स्निग्ध रुक्ष गुण परिणामकौं धरतासंता बं
ध मोक्ष अवस्थाकौं धरैहै असद्भूत नय करि यह आत्मा औपाधिक-
भेदस्वभावलियेहै जैसें येक मृत्तिका घट सरावा आदि अनेक भेदलि
यहोहै सद्भूत नय करि निरुपाधि अभेद स्वभाव रूपहै जैसैं भेद भाव
रहित केवल मृत्तिकाहोयै इत्यादि अनंतनयनिकरि वस्तुकी सिद्धि
होवै वस्तु अनेक प्रकार वचन विलास करि दिखाइयेहै जेता वचन है
तेताही नयहै जेती नयहै तेताही मिथ्या वादहै श्लोक सएव-
मुक्तानयपक्षपातं स्वरूपगुप्तानिवसंतिनित्यम्॥ विकल्पजालच्युत
शांतचित्ता सएवसाक्षात्दमृतंपिबंति १ येकस्यबद्धोनतथापरस्य
चितिद्वौद्वाव्यतिपक्षपातौ॥ येतस्तवंदीच्युतपक्षपातस्तस्यास्तिनि-
त्यंखलुचिन्चिदेव॥२॥ इत्यादि० जानैंयेक नय कौं सर्वथा मानिय-
नो मिथ्या वादहोय अरज्यो कथंचितमानियेतो जथार्थ अनेकांतरूप-

सर्वज्ञवचन होय तातैं येकांतना निषेधहै येक ही वस्तु अनेक नय करि साधियेहै येह आत्मा नय करि और प्रमाण करि जानियेहै जैसै येक समुद्र जब जुदे जुदे नदीनके जलनि करि साधिये तब गंगा जमुनादिकके स्वेत नीलादि जलनिके भेदकरि येक येक स्वभावकौं धरैहै तैसै येह आत्मा नयनिकी अपेक्षा येक स्वरूपकौं धरैहै और जैसै सोही समुद्र अनेक नदीनिके जलनिकरि येक समुद्रहीहै भेद नाही अनेकांतरूप येक वस्तुहै तैसै येह आत्मा प्रमाण विवक्षाकरि अनंत स्वभावमयि येक द्रव्यहै इस प्रकार येक अनेक स्वरूप नय प्रमाण करि साधियेहै नयनिकरि येक स्वरूप दिखाइयेहै प्रमाण करि अनेक स्वरूप दिखाइयेहै इस प्रकार स्यात् पदकी सोभा करि गर्भित नयनिके स्वरूपकरि और अनेकांतरूप प्रमाण करि अनंत धर्म संयुक्त है शुद्धचिन्मात्र वस्तु ताकौ जे पुरुष अवधारैहै ते पुरुष साक्षात् आत्मस्वरूपके

अनुभवी होवै येह आत्मा द्रव्यका स्वरूप जानना अब तिस आत्मा·
की प्राप्तिका प्रकार दिषाइये है येह आत्मा अनादि कालतै लेकरि पुद्ग
लीक कर्मके निमित्ततैं मोह मदिराके पान करि गमन हुवा घूमहै समु
द्रकीसी नाईं आपहीविषै विकल्प तरंगनिकरि महाक्षोभितहै क्र·
मकरि प्रवर्त्तै है जो अनंत इंद्रिय ज्ञानके भेद तिनकरि सदाकाल पलट
वेकौं प्राप्त होवै येक रूपनाही अज्ञान भाव करि पररूप बाह्य पदार्थ
निविषै आत्म बुद्धी करि मैत्री भाव करै है आत्म विवेक की सिथिलता
करि सर्वथा बाहरमुख हुवाहै बारबार पुद्गलीककर्मके उपजावनहारे·
जोहै राग द्वेष भाव तिनकी द्वैतताविषै प्रवर्त्तै है ऐसे आत्माकूं शुद्ध स
चिदानंद परमातमाकी प्राप्ती काहेसे होय कहांसे होय और येही आ
त्माजो अषंड ज्ञानके अभ्याससे अनादि पुदगलीक कर्म करि उपजाया
जोथा येह मिथ्या मोहताकों अपना घातक जान भेदविज्ञान करि आ

पसे जुदा करि केवल आत्म स्वरूपकी भावनाते निश्चल थिर होय तो आ
पने स्वरूप विषै निस्तरंग समुद्रकीसी नाईं निःकंप हुवा तिष्टै है येकही
बार तृप्त भयाजो है अनंत ज्ञानकी सक्तिके भेद तिनकरि पलटता नाही
आपणी ज्ञानकी सक्तीनि करि बाह्य पररूप ज्ञेयपदार्थनि विषै मैत्री-
भाव नाही करै है निश्चल आत्मज्ञानकी विवेक करि अत्यंत स्वरूप सौं
सन्मुष हुवा है पुद्गलीक कर्म बंधके कारण जो है राग द्वेष भाव तिनकी
द्विविधाते दूर रहै है ऐसा जो परमातमाका आराधक पुरुष है सो भग
वंत आत्मा पूर्वही न अनुभयाया अर ज्ञानानंद स्वभाव है परमब्रह्म
है ताकौं प्राप्त होवै है आपही साधक है अवस्थाके भेदतै साध्य साध
क भेद है येह समस्तही जो है जगतजीव सो भी ज्ञानानंद स्वरूप जो है
परमात्मज्ञान तिसकूं प्राप्त होहु अर आनंदरूप ज्यो है अमृतजल ति
सके प्रभाव करि परिपूर्ण वहै जो है वह केवलज्ञान रूपणी नदी तिस

विषेज्यो आत्म तत्व मग्न होइ रत्याहै ओरजो तत्व समस्तही लोकालो
क देषवेकूं समर्थहे अरजो तत्व ज्ञान करि प्रधानहे अर ओ तत्व अमोल
ष श्रेष्ठ महा रतन कीसीनाई अति शोभायमानहे अर वो तत्व लोका-
लोकसें अलगहे जैसा लोकालोकहे तैसो वो तत्व नहीहे अरजैसो वो
तत्वहे तैसा लोक अलोक नाही सूर्ज अंधारा कासा अंतरहे लोकालो
कके अर उसतत्वके अर वो तत्व लोका लोक कूं देषवे जाणवेकूं समर्थ
हे अर लोकाल्लोकउसतत्व कूं देषणे जाणणेकूं समर्थ नहीहे उस तत्व-
कूं श्याद्वाद रूप जिनेश्वरके मत कूं आंगिकार करिये जगत जन आंगिका
र करिये जगत जन आंगिकार करो जातें परमानंद सुषकों प्राप्ति होय १
जैसैं दीपकके ज्योतिके भीतर कालिमा कज्जलहे तैसें ही केवल ज्ञान
ज्योति परमातमाके भीतर येह जगत जुगत जोग तूं मै येह वह हूं हूं वि
धि निषेध बंध मोक्षादिकहै येक दीपगसें हजार दीपग जोये परंतु वोम

थ दीपज्योतितो जैसाको तैसो भिन्नहै सोहीहै कलस हांडा वास-
ण होताहै अर बिगड जाताहै परंतु माटीतो नहोवै अर नबिगडै सु-
वर्णका कडा मुंदडा हो जाताहै अर विगड जाताहै परंतु सुवर्णतो न
होवै अर नबिगडै लाघू मण गहूं चीणा मूंग मोठ होताहै अर षरच हो
जाताहै अर फेर वही लाघूमण गहूं चीणा मूंग मोठ जैसाका तैसा उत्पन्न
होताहै अर्थात् बीजका नास कदाचित् बी नाही समुद्रमैसे हजार कलस
पाणीका भरिकरिकें बाहीर नीकास देतो समुद्रतो जैसाको तैसा है सो
हीहै अरउसीसमुद्रमैं हजार कलस पाणीका अन्यस्थानसै भरिकरिकें
लाय समुद्रमे डारदे तौभी समुद्र जैसाको तैसो है सोहीहै अरत्री रंडा
पद स्त्रीकूं प्राप्ति होवै अर फकत काजल टीकी नथ येह नही पहरै अर
ओर सर्व आभूषण पहर रहै तोषी उसकूं रंडाही कहणा जोगहै मो-
ती समुद्रके पाणीमै होताहै अर उस मोतीकूं सोघरस लगबी पाणीमै-

पटक्यो राषे तौबी वो मोती गलता नही अर वो मोती हंसके मुष मे॰
जातै प्रमाण गलजातोहै सूर्य है सो सूर्य कूं वृथाही ढूंढताहै अर अं॰
धा है सो अंधारासैं अलग होणेकी वृथाही इच्छा करतो है सास्त्र मे॰
लिषतेहैके मुनी २२ बाईस परिस्या सहताहै १३ तेरा प्रकारको चारि
त्र पालताहै १० दस लक्षण धर्म पालताहै १२ भावनाहै १२ बाराप्रका
रको तप कर्ताहै इत्यादिक मुनी कर्ताहै तो इहां ऐसा विचार आताहै मु॰
नीतो येक अर परिस्या २२ चारित्र १३ प्रकारको दसलक्षणधर्म वा येक
धर्मका दस लक्षण १२ बारा तप १२ भावना इत्यादि बहुत भूमि कुछ आे
रहे अर बाइस परिस्या कुछ ओरहै बाइस परिस्याको अर मुनीका अग्नी
उष्णतावन तथा सूर्य प्रकाशवत मेलनहीं ऐसैंही तेरा प्रकार का चारित्र॰
का अर मुनीका मेल अग्नी उष्णता वा सूर्य प्रकासवत मेल नाहीं वा ऐसे
ही दसलक्षणधर्म बारा तप बारा भावनाका अर मुनीका मेल अग्नी उष्ण॰

तावत् सूर्यप्रकाससवन मेल नाहीं। आकासमै सूर्यहै ताको प्रतिबिंव घृ
ततैल की तप्त कडाहीमे अवटनहै तोभी उस सूर्यका प्रतिबिंवको नास
होता नाहीं कांचका महलमे स्वान अपणाही प्रतिबिंबकूं देषकरिकै भु
क् भुक् करिकै मरताहै फटककी भीतमे हस्ती अपणी प्रतिछाया देष
करिके आप उस भीतमे भड भेटलेकर आपका आप दांत तोडिकरिके
दुःखी हुवो वानर मूकट वडे वृक्षके ऊपर रात्रीसमय वैठ्योथो वृक्षके नी
चेयकसीहै आयो चंद्रमाकी चांदणीमे उस वानरकी छाया सिंघकूं दी
षी देषकरिके वोसिंघ उस छायाकूं साचो वानरजाण करिकै गर्जनाकरि
के उस वानरकी छायाकीपंजाकेदीनो तव वृक्षके ऊपरि वैठोहुवो वानर
भयवानहोयनीचे आयपड्यो एकसिंघ कूपमे अपणी छाया देष करि
कै आप अपणा दिलमै जाणीके यो दूसरो सिंघहै तवगर्जनाकरि तो
कूवामैसैं अवाज सिंघ शब्द साहश आई तव वोसिंघ उछलकरिकै कूप

मै गीर पडयो· येक गऊ चरावणे वालो गवालके तुरतको जन्म्यो सिंघ को·
बच्चो हात लगगयो तब वो गुवाल उस सिंघके बच्चाकूं ले आयो त्याय क
रिकै बकरी बकराके सामील राष दीयो वो सिंघको बच्चो बकरीको दूधपी
व अर आपणो आपो भूल बकरा बकरीकूं अपणा संगाती जाण करि
कै रहताहै ललनीको रूवो अपणा पंजासे पकड वानरो चीणाकी मू·
ठी बांधीसो छोडनो नाही छद्रव्यहै ताका नसात होव नपांच होव निश्च
यहै अंधकारयुक्त येक मोटा स्थानमे दस बीस पचास मनुष होवे सो प·
रसपर शब्द वचन श्रवण करिके वो उसका निश्चय कर्ताहै २ अर शब्द·
श्रवण करिके देषणे जाणणेकी इच्छा कर्ताहै मेघ वादलमे सूर्यहै ता·
कूं कोई कालो धामेघ वादलसा दृश्यमान तोहै सो मिथ्या दृष्टीहै औरसू
र्जकूं आडा मेघ वादल आय जावै तब सूर्ज आपका सूर्जपणाकूं छोड·
करिके कह विचारके मैतो सूर्ज नही मेघवादल हूं ऐसो सूर्ज आपकूं स·

मजैतो वो सूर्जबी मिथ्यादृष्टीहीहै मार्गमै पंक्ती बंध वृक्षहै ताकी छाया
बी पंक्ती बंधहै येक पुरस उस छाया पंक्तीके बराबर चल्योजावैहै तहां
पल छाया जावैहै येक आवैहै तप्त लोहाके गोलामें अग्नी भीतर बा.
हिरहै परंतु अग्नी लोहा अलग अलगहै चंद्रमा बादलमै छुप रह्याहै
परंतु चंद्र और बादल अलग अलगहै ध्वजा पवनके संजोगसे खमे
वही उलजतीहै अर सुलजतीहै चूरण कहणेमात्र येकहै परंतु सूं
ठ मिरच पीपलहरडे आदि सर्व देख अलग अलगहै येक बूंदडीमैं
अनेक बुंदहै येक कोटमै अनेक कांगराहै येक समुद्रमै अनेक लह-
री कलोलहै येक सुवर्णमै अनेक आभूषणहै येक माटीमै अनेक
हांडा बासणहै येक पृथीमै अनेक मठमकानहै तैसैही येक परमा
तमाका केवलज्ञानमै अनेक जगत झलक रह्याहै कृष्णरंगकीगौ ४
भलाइहो परंतु उसको दुग्ध मीठोही होनाहै लोहाके पिंजरामै बैठ्यो

हुयो पोपट राम राम कहता है केवल राम राम कहणेसै लोहा का बंध
नहीं छूट्या तो ऐसा राम राम कहणेसैं जमका फंद कैसे छूटैगा येक
पुरुष पराई स्त्री लंपट्यो ताको आयो रूमो वो पुरुष कुनासमय
परस्त्री भोगणे लाग्यो तासमय येक प्रतिपक्षी सत्रु आयो आयक
रिकै ताके तरवारकी दीन्ही तासैं उसबी बिचारी कोहान कटगयो ता·
को विषरयो लोही अर उसी समय उसको वीर्य स्खलित होगयो अरपी
छैजाग्यो तब वार्यसैंतो अधोवस्त्र लिप्त प्रत्यक्ष देख्यो अर रुधिरसैं
वस्त्रादिक लिप्त नहीं देख्या येक बालक झूठा मट्टीका बलदसैं प्रीति·
करता है अर येक कुसीकर्मोको बालक साचा बलदसैं प्रीत कर्ता है प
रंतु झूठा साचासैं प्रीत करणे वालो दोन्यूंही दुषी है क्यूंके उसका वल
दाकूं कोई जोतै पकडै अन्यथा करै तब दोन्यूंही दुःखी होता है येक
किसकूं कीचमै रत्न जुहारातकी भरी वटलोई मिली तब वो उस वटलोई

कूं षावडीमै धोवणेकै लेगयो धोता धोतावढलोई वावडीमै गिरगई तव रोणे लाग्यो सुपेद लकडीको कोयलो कालोहुवो अग्नीके संगती करि जिमसें अववो कोयलो किसीही उपायसें सुपेद होणेको नही परन्तु पीछाकी पीछी अग्नीकी संगती करैतो वो कोयलो सुपेद हो जावै. येक माटीका कलसमें जहांलग जलहै तहां लग उसका अनेक नामहै अर कलस फुटजावै तो फेर नाम जलको अर कलसको कहाहै मयुर नाचताहै श्रेष्ठ परंतु पिछाडी ओंधो गांड उघाड करिके नाचताहै गुरुबिना ऐसेहै। क्रिया व्यर्थहै कच्चा आटासेंवी पेट भरजाताहै परंतु उसी आटाकी रोटी वणाय करिके पकावै अर षावतो स्वाद लागतीहै तसवीर-सै तसवीर उतर सक्तीहै वडकाबीजमै अनेक वड अर अनेक बडमे-अनंतानंतबीज येक सन्निपात युक्त पुरुष अपणा घरमे सूताहै तोवी कहै मै मेराघरमें जाऊ येक सेप्र सलीकी पागडी अपणा सिरकै ऊपरसै

जमीके ऊपर गीर पडी तिसकूं वो सेष सली उठाय कहै येह येक पगडी-
हमकूं पाईहै वांसते वांस घृष्टहोय तब अग्नी उत्पन्न होतीहै सो अग्नी
उस वांसकूं भस्म करिके आपभी उपसम होजाताहै संख श्वेनहै सोका
ली पीली लाल मट्टी भक्षण कर्ताहै तोबी संख आप स्वेनको स्वेत रह-
ताहै दोय बजाजकी दुकान सामील्थी तब कोई कारण पाय करिकेउ
न दोन्यूं बजाजकै परस्पर राग पडगई तब दोन्यूं बजाज परस्पर भागकर
णे लाग्या आधाआधा वस्त्र फाडकरिके तब कोई सम्यक ज्ञाना कही
तुम ऐसे परस्पर भाग करतेहो तुम तुमारे सो रुपया का वस्त्रका पचासरु
पया उपजेगा वडी हाणी होवेगी तब वह दोन्यूं हाणी नुकसान जाणि
करिके मीलेहीरहे पुन्यूंका चंद्रमाके अर अमावास्याका सूर्जके भांति
सैं अंतर दीषताहै येक साहुकार अपणा पुत्रकूं परदेसमे भेज्यो केता-
क दिवस पीछे बेटाकी वहू बोलीके मैं तो रंडा होगई तब वो सेठ अप-

णा पुत्रके नांव पत्र भेज्यो उसमे ऐसो लिषदीके हे बेटा तेरी वहू तो रंडाहो गई तब वोसेठको पुत्र पत्र वांच करिके सोक करवा लाग्यो तब कोई पूछी तुम क्यों सोक करतेहो तब वो कही हमारी स्त्री रंडाभई तब सुण करिके बोलै तुम तो प्रत्यक्ष जीवता मोजूदहो अर तेरी स्त्री रंडा केसे भई तब वोसे ठको पुत्र बोल्यो तुम कहो सो तो सत्य है परंतु मेरा दादाजी की लिषी आई ताकूं झूठी केसी मानूं दोय स्वानुभवत्तानी परस्पर वार्ता करणे लागे कहोजी-सूर्ज मरजावे तो फेर क्या होवे उत्तर चंद्रमा है के नही प्रश्न चंद्रमा वी मर जावे तो फेर क्या होवै उत्तर चीरागदीपग है के नही प्रश्न अरज्यो चीरा-गदीपक मरजावै तो क्या होवे उत्तर शब्द वचन है के नही प्रश्न अरज्यो-शब्द वचन वी मरजावे तो क्या होवै उत्तर अटकल है के नाहीं प्रश्न ठी कहै मे समजलीयो इति दृष्टांत संपूर्ण स्पेद वस्त्र के ऊपर रंग श्रेष्ट लागता है कच्ची हांडी मे जल मूर्ष होय सो भरे दीपग मे तेल रुई की बत्ती श्रेष्ठ होय

तो प्रकास कर्ता सीघ्र जोनि प्रकास मान कर देताहै येक येकांत वादी भ्र-
पणे शिष्यकूं बोल्योके सर्व ब्रह्मही ब्रह्म है तवतो शिष्य श्रवण करिके बा
जारमै गयोथो नहां हस्तीको मावत हस्तीकूं लेकरिके आवेथो ऋार ह-
स्ती आरूढ हुवो थको पुकार करतोथो के मेरा हस्ती दिवानु है अलग हो
जावो तव वो येकांत वादीको शिष्य अपणे दिलमै विचारीके योहस्ती-
ब्रह्म है ऋार मैबी ब्रह्महूं तव स्याद्वादि नुनकूं कही वो मावनक्या ब्रह्मन-
हीहै स्यात् क्षीरोदधि समुद्रमै कोई एक जहरकी बिंदु पटक देवै तो क्या-
समुद्र जहर मई होवैगा अर्थात् नहीं होवैगा १ उलटा कलसके ऊपर स्वा
वजैतो जल पटको जल कलसके भीतर जाणेंको नाही १ एक जोजन-
ओरस चौरस मकाननमै येक सरस्यूं पडीहै सो जाणें किदर कूं पडी है
१ येक दरपणमै मयूरकी प्रतिछाया दीषतीहै रंगवीरंगकी सो निश्चय
मयूरसे भिन्न नही ऋार दर्पण दर्पणसे भिन्न नही १ येक धूली धोणेवाले

हस्तां-

१

१०५

नारस्याकूं धूलीमे पंचरत्न पंचलक्ष रुपीयाका मिलगीया तब कोई उसना
रयाकूं कह्या तूं अबनो धूलीधोवणा छोडदे तबवो नारयो बोल्यो छोडूं कैसो
मोकोंनो इस धूलीमें रतन मिल्याहै दीपकके उजालामें मन वांछित रत्न
मिलगयो अब दीपक राषांतो क्या अर छोडांतोक्या १ अचेतन मूर्त्तिके
ऊपर पक्षी आय बैठनेहै डरतानहीहै १ किसी अस्त्रीको भरतार परदे
समें जायकरि मरगये अब वा स्त्री उसीकी मूर्त्ति बणाय भर्तारवत आनं
दलीयो चाहैसो मिथ्याहै अथवा सोही अस्त्री परदेसमें मस्या भरतार
को नाममात्र स्मरण करेगी तोक्या उस अस्त्रीकूं प्रतक्ष भर्तारवत् आ
नंद होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ सर्वनामको कहणे वालो ताको नाम
क्या १ सर्वको साक्षीदार ताकोरंगरूपक्या १ येक मूर्ष जिसझाडका
डाहालाकेऊपर बैठ्योहै उसी डाहालाकूं काटतोहै अपणे गिरणेकी नर
फसें उसकूंदेष कारिके ज्ञानीकूं ज्ञान हुवा १ येक कलस गंगाजलको भस्यो

है ओर दूसरो कलस अस्थीसे भर्योहै स्यात् वह दोन्यूं कलस फूटजावे·
तो कहाजाताहै फूटकरिके १ चामचीडी बागल ओर उलूकइनकूं बिल·
कुल सूर्जकी खबर नाही येकदिन चामचीडीकूं ऐसी सुणवामे आई·
के सूर्ज उगैगो तब चामचीडी बागलके पास जायकरिके कहीके सूर्ज उ
गैगो तब बागल बोलीके सूर्ज तो कधी उग्यो नही भलाचलो अपणो मालि
क उलूक है उनसे पूंछोंगा ऐसा बिचार करिके चामचीडी ओर बागलये
हदोन्यूं उलूकके पासगया ओर कहीके सूर्ज उगैगो ऐसी हम सुणी है तब
उलूक बोल्योके येक समयमे स्थानचूक करिके चार प्रहर बैठ्योरह्योथो·
सोही मेरी पांव गरम होगई सोही स्यात् गरमगरम तातो तातो सूर्ज हो
तो होगा १ मानस सरोवरकी खबर कूपका मींडकाकूं नही काई हस·
उस मींडकाकूं मानस सरोवरकी सार्चावी कहै तोभी वो मींडको प्रमा·
णनहीकरतो १ दोहा जातलाभकुलरूपतप बलविद्याअधि

कार ॥ येह आठ् मद है बुरा मनिपीवो दुषकार ॥ २ ॥ जैसे सूर्जसे अंधा
रो अलग है तैसे येह आठमद् उस परमानमासे अलग है सम्यक् दर्शन
सम्यक् ज्ञान सम्यक् चारित्र येह कहणे मात्र तीन हैं निश्चय देषियेतो
एकसाहीहै जैसे अग्नी उष्णता प्रकास येह कहणेका तीन नाम है निश्च
य देषियेतो येकहीहै जिस अवस्थामे मुनि सूताहै ता अवस्थामे जग
त जागतोहै अर जिस अवस्थामे जगत जागतो है ता अवस्थामे मुनीसू
तोहै सूर्जकूं अंधकारकी षवर नहीं अर अंधकारकूं सूर्जको खबर ना-
हीं। कश्चित्त लालवस्त्र पहरसे देहनो नलालहोय॰ सतगुरु कहे भव्य
जीवसै तोडो तुरत मोहकी जल॰ माटीको काज घट जैसे माटी ताके बाहि
र माही॰ पूर्णमासीको चंद्रमा अर अमावस्याको सूर्ज ताके अंतर नहीं
॥ दक्षिणायन अर उत्तरायणकी अर कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्षकी अर ४
च्यार प्रहर रात्रीको पक्ष छोडकरिके देषणा पुन्यू अमावस्याका सूर्ज चंद्र

के क्या अंतरहै दूजको चंद्रमा उग्योहै सो पूर्णगोल होवैगो फिकरन
ही करणा बालकका हातकी मुष्टीमे अमोलष रतनहै अरवो बालकउ
स रतनकूं श्रेष्ठजाण करि छोडनावी नहीहै मूठी दृढ बांधकरि राषीहै
परंतुवो बालक उस रतनकूं बाल भावसें श्रेष्ठजाननाहै सम्यक्ज्ञानभा
वसें नही जाणताहै ज्ञान वर्णादि द्रव्यकर्म अररागादिक भावकर्म अ
र सरीरादिक नोकर्म तासे वो परमातमा अलगहै जैसे सूर्जसें अंधा
रो अलगहै तैसे उस परमातमासै भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म आदि स
र्वकर्म अलगहै जो अनंतज्ञानादिकरूप निजभाव ताकूं कबही नछोडै
अर कामक्रोधादिक रूप परभाव तिनकूं कदाचित् कदेहू नग्रहे जैसे
सूर्ज आपका गुण प्रकास कीरणादिक नछोडै अर परज्यो अंधकारा-
दिक ताकूं कदाचित् कदेही नग्रहण करै तैसेंही वो परमात्मा परकूंग्र
हण नकरै अर आपकूं आपका ज्ञानादिगुणकूं छांडै नहीं वो परमा-

त्मा परम पवित्रहै मैं तूं येह वह सोहं हूं तया हूं हूं इत्यादि शब्दाके वच
नाके आदि अंत मध्यहै सो परमात्माहै वो रूधहै अरयेह मैं तूं येह वह
सोहं हूं हूं है सो अस्तुथहै जैसें सूर्जके सामने सनमुष अंधकार नही तै-
सें उसकेवल ज्ञानरूपी परमात्माके सन्मुषयेह मै तूं येह वह सोहं हूं हूं
हूं येह है सो नही जिसकाल सूर्जका अर अंधाराका मेल होवैगा उसी
काल परमात्माका अरइन मै तूं येह वह सोहं हुं हुं हुं का मेल होवैगा
परमात्मा केवल ज्ञानीहै अरयेह अज्ञानीहै ज्ञान अज्ञानकामेल हू
वाबी नही अर होवैगावीनही अरहैवीनही ऐसो केवल ज्ञानीमे हूंठी
कहै जैसो अनषावै नाकी तैसीही अइकार आवै सूर्जे अंधकारकीइ
च्छावी वृथाही करतोहै अर सूर्ज सूर्जकी वी इच्छा वृथाही करनोहै
हजारूं मण गहूं चीणा षरच होजाताहै अर फेर हजारूं लाषूं मण पैदा
होजाताहै नबीजको नास नफलको नास येषजातके लाल रतनाकोदे

र दूरसै येकसो पुंज अग्नीकोसो दीषतोहै येक परंतु वहरतनराशिका रतनन्यारान्याराहै बहोतही अमृतकोसमुद्र भर्योहै सर्वसमुद्रकोज लकीसीसै पीयोनही जावै अपणी अपणी तृषा प्रमाण जलपीय कारिसंतुष्टरहा ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ धर्मदासक्षुल्लकमोनाम ॥ रच्याज्ञानअनुभवकोधाम ॥ मनमानीसोकरहोवषाण ॥ पूरणकारिसम जोजिसकुजाण ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारीधर्मदासरचित दृष्टांतसंग्रहसंपूर्ण ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ श्रीअरिहंताणंजयति ॥

ॐ नमः सत् परब्रह्म परमात्मने नमः ॥ ॥ अथ आकिंचन भावना लिख्यते ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मेरा मुजसें अलग नही सो परमात्मा देव ॥ ताकूं वंदूं भावसे निसदिन करना सेव ॥ १ ॥ मेरा मुजसें अलग नहि सो स्वरूप है मोय ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै अंतर बाहिर जोय ॥ २ ज्यौं अपणा निज रूप है जानन देषन ज्ञान ॥ इस बिन और अनेक है सो मैं नही स्कुजाण ॥ ३ ॥ अन्य द्रव्य मेरा नही मै मेरो ही सार ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै सो अनुभव सिरदार ॥ ४ ॥ ॥ वार्तिक ॥ ॥ जो मेरो ज्ञान दर्शनमय स्वरूप बिना अन्य किंचित् मात्र बी हमारा नही मैं कोई और द्रव्यको नही मेरा कोई अन्य द्रव्य नही ज्यो मेरेसें अलग है उससे मैं बी अलग हूं ऐसा अनुभवकूं आकिंचन कहते है सोही अनुभव मोकूं है मैं आत्मा हूं सोही मेरेकूं मै समजना हूं हो आत्मन् अपणा आत्माकूं देहसै अलग ज्ञानमई और द्रव्यकी आोपमारहित-

अरस्पर्शरसगंध वर्ण रहित जाणु देह हैसो मैनही अर देहके भीतर बाहिर आकासादिकहै सोबी मैनही देहतो अचेतनजडहै हाडमांस मल मूत्रसैं वणीहै वा तन मनसै वणीहै मै इस देहसैं अवलम्थमहीसे ऐसो अलगहूं जैसे अंधारासैं सूर्ज अलगहै तैसे अर यो ब्राह्मणपणू क्षत्री वैश्य शूद्रादिक जात कुल देह काहै अर स्त्री· पुरुष नपूंसकादि लिंगदेही काहै मेरा नही मोकूं देह ही जाणताहै मानताहै सो वहिर आत्मा मिथ्यादृष्टीहै अर यह गोर पणो सांवला पणो राजापणो रंकपणो स्वामीपणो सेवकपणो पंडितपणो मूरखपणो गुरुपणो चेलापणो इत्यादिरचना देहही कीहै मेरी नही मैजाणताहूं नाम अोर जन्म मरणादिक देहका धर्म है जेता नाम तीनलोक तीनकाल वा लोकालोकमैहै सो मेरा नही अर तीन लोक तीन काल· वा लोकालोकहै सो मेरेसे अलग ऐसा है जैसे सूर्जसे अंधारो अल

गहै तैसै ओरमैं जैनमतवाले वैष्णव मतवाले शिव मतवाले आदी-
कोई मतवालेको चेलो गुरु नहीहूं पर कर्ता कर्म क्रिया संपादान अ-
पादान अधिकरणसै अलगहूं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ येह आकिंचनभा
वना भावैकरतसंभाल ॥ धर्मदाससाचोलिषै मुक्त होय ततकाल ॥
॥ १ ॥ अपणोआपोदेषकै होय आपको आप ॥ होयनिचंतंतिष्योरहै
किसकाकरआजाप ॥ २ ॥ ॥ इतिआकिंचनभावनासमाप्त ॥ ॥
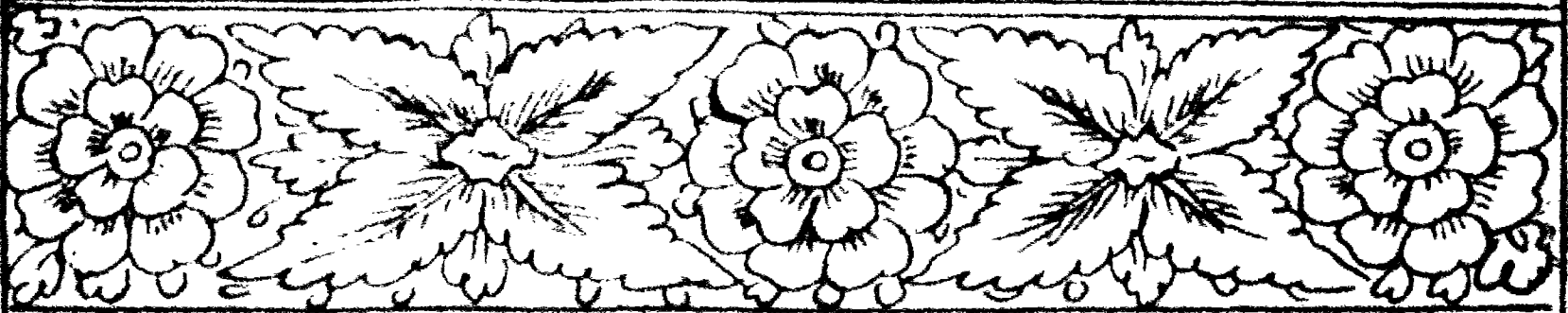
अथ आकिंचनभावनाप्रारंभः

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॥ अथ भेदज्ञानलिख्यते ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
प्रथममहिंभेदज्ञानजोभावै ॥ सोहीशिवसुंदरिपदपावै ॥ तातैभेदज्ञा
नमेंभाऊ ॥ परमानमपदनिश्चयपाऊ ॥ १ ॥ कहुकथधर्मदासअवबो
लै ॥ देषवचनकामैंनिनषोलै ॥ वांचोपढोभावमनल्याई ॥ तातैंमि-
लैमोक्षठकुराई ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेदज्ञानहीज्ञानहै वाकी
बुरोअज्ञान ॥ धर्मदाससाचीलिषै भेमराजतुममान ॥ ३ ॥ अर्थात्
निश्चय करि एक द्रव्यका दूसरा द्रव्य कछु संबंधि नाहीहै जातै द्रव्यहै
सो भिन्न प्रदेसरूपहै तातै एक सताकी अप्राप्तीहै द्रव्य द्रव्यकी सता
न्यारीन्यारीहै बहुरि सतापेक नहोते अन्य द्रव्यके अन्य द्रव्य करि आ
धार आधेय संबंध भी नाहीहैं तातै द्रव्यके अपने स्वरूपही विषै प्रति
ष्ठारूप आधार आधेय संबंध निषैहै तिस कारण करि ज्ञान आधेय
सोतो जाण पणारूप अपणा स्वरूप आधारता विषै प्रतिष्ठितहै जा

ते जानपणेपणाहै सो ज्ञानतै अभिन्नभावहै भिन्नप्रदेसरूप नाही
है तातै जाननक्रियारूप ज्ञानहैसो ज्ञानही विषैहै बहुरि क्रोधादिक
है तै क्रोधरूप क्रिया क्रोधपणा स्वरूप तांहाविषै प्रतिष्ठित है जातै
क्रोधपणारूप क्रिया क्रोधादिकतै अपृथक्भूतहै अभिन्नप्रदेश
है तातै क्रोधरूप क्रिया क्रोधादिविषैही होयहै बहुरि क्रोधादिकवि
षै अथवा कर्मनोकर्मविषै ज्ञान नाहीहै जातै ज्ञानकै अर क्रोधादि
ककै अर कर्मनोकर्मकै परस्पर स्वरूपका अत्यंत विपरीत पणाहैति
नका स्वरूप एक होय नाही तातै परमार्थरूप आधार आधेय संबं
धका शून्यपणाहै बहुरि जैसै ज्ञानका जाननक्रियारूप जाणपणा
रूपहै तैसै क्रोधरूप क्रियापणा स्वरूपनाहीहै बहुरि जैसै क्रोधा
दिकका क्रोधपणा आदिक क्रियापणा स्वरूपहै तैसै जाननक्रि
या रूप स्वरूप नाहीहै कोईही प्रकारकरि ज्ञानकूं क्रोधादिक्रिया

रूप परिणाम स्वरूप ख्याप्यानजायहै तातै जानन क्रियाके अर क्रो
धरूप क्रियाके स्वभावका भेद करि प्रगट प्रतिभासमान पणाहै ब-
हुरि स्वभावके भेदतैंही वस्तुका भेदहै यह नियमहै तातै ज्ञानके-
अर अज्ञानस्वरूप क्रोधादिकके आधार आधेय भावनाहीहै इ-
हां दृष्टांत करि विशेष कहै है जैसै आकास अरु द्रव्य येकहीहै नाही।
अपणी बुद्धि विषै स्थापि अर अवार आधेय भाव कल्पिये तव आ
काश शिवाय अन्यद्रव्य तिनकातो अधिकाररूप आरोपणका नि
रोध भया याहीतै बुद्धिके भिन्न आधारकी अपेक्षातो नहीरही अ
रजब भिन्न आधारकी अपेक्षा नाही रही तब बुद्धिमे यही ठहरी
के जो आकासहै सो येकहीहै सो येक आकासही विषै प्रतिष्ठित-
है आकाशका आधार अन्यद्रव्य नाही आप आपहीके आधारहै
ऐसै भावना करणेवालेके अन्यका अन्यके आधार आधेय भावना

ही भति भासैहै ऐसैही जब एकही ज्ञानकूं आपनी बुद्धि विषैस्या
पि आधार आधेय भाव करिये तब अवशेष अन्य द्रव्यनिका अ
धिरोपकरणेका निरोध भया यातैं बुद्धिके भिन्न आधारकी अपे
क्षा नाही रहैहै अर भिन्न आधारकी अपेक्षाही बुद्धिमे नरही त-
व एक ज्ञानही ज्ञानविषै प्रतिष्ठित ठहरया ऐसै भावना करणे वाले-
के अन्यका अन्यके आधार आधेय भावनाही प्रतिभासहै तातैं ज्ञा
नहीहै सोतो ज्ञानही विषैहै अर क्रोधादिकहीहै ते क्रोधादिक विषै
हीहै ऐसै ज्ञानके अर क्रोधादिकके अर कर्मनो कर्मके भेदका ज्ञान
है सो भले प्रकार सिद्ध भया ॥ ॥ भावार्थ ॥ ॥ उपयोगहै सो तो
चेतनाका परिणमन ज्ञानस्वरूपहै अर क्रोधादिक भावकर्म ज्ञाना
वर्ण आदि द्रव कर्म सरीर आदिकनो कर्म येसर्वही पुद्गल द्रव्यके
परिणामहै ते जडहै इनके अर ज्ञानके प्रदेशभेदहै तातैं अत्यंत-

अथदृष्टांतचित्रमा०

यांपुरमनीमकाझाडकीबाथभीकारिकैंपड्योहैं ओरपुकारतोहैके मेरेकूं छुडावो·

येक दोय तीन चार पांच छह सात आठ नव आरे अपणेंप
ासें दस आयेथे अब नव ही रहगये गणनी करणवाले
पुरस आप कूं गिणनो नाही.
वो पुरस गिण
ती करतो है.
ऐसे आपणी मूरखतासें नदी है तिसका किनारापें दस पुरुष वी भ्रममें भरमरहा है.

बन्नर कुंभमें मृठीबांधिसो छोडतानाहीं जाणताहै के कोई मोकूं पकडलिया॰

गर्भवतीस्त्रीकी पुत्री अपणी मातासे बूजतीहै हे मात तेरोपेट मोटोकैसे है· अब वास्त्री पुत्रीकूं जथा वत्‌ कह देवे तो वी निश्चय उस्कूं होवनाहै। समयपायनिश्चयहोवेवी। अथवा नाही वी होवे·

बड़को
झाड़है

भापषाणांका परिणाम छऊहीकाहै· परंतु येकतो मूलसें झाडकूं कारता
है· येकमोटाडाला कारताहै· येक छोटाडाला कारताहै· येक कचापका
सर्वआम्रतोडताहै· येकपकातोडताहै· येकजमीकेऊपर पडे हुयेही
उठाय खातोहै· उत्तरो त्तरहै·

इसके कंठमें त्न मोतीकी मालाहै यहारि हगकनोहै भंडारमें·

यापुरुषवदनमंदिरमें प्रयाणगामी कर्ता है के तृष्णा उसकी पत्नी
प्रयाणगामी आनंदि के तृष्णा स्वामी समजणा चाहिये·

स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मार्ग स्वभाव वस्तु के न जाने स्वरूपानुभव समझ करिके ·
पर मतावलम्बन बेद जैन शिव विष्णु · को हाथी के पग सदृश परस्पर विवाद
विरोध करते हैं

सिंह आपकी छाया कूपमें देखकरिके आपही। अपना स्वरूप भूलिकरिके
आपही। कूपमें पड़के दुःख अनुभव भोग करता है

कलिग मोहा की मैन गपी जैन को प्रतिमा पै:

साहुकारकी हवेलीमें एक स्वानगयाथा सब चोरकूं पतस देषकरिकें भूकभूक कर्ताहै नहुत नहीं टे
घणे वाना स्वान हवेलीके बाहीरहै सोबी भूकभूक कर्ताहै

येक पुरुष अमावास्याकी मध्य रात्रीका अंधारामें चंद्रमाकूं
ढूंढ राहै ढूंढताहै भ्रात् चंद्रमाकी चानणीमें ढूंढतो
चंद्रराम होबीजावेगा·

इतिदृष्टांतचित्र समाप्त ॥

भेदहै तातैं उपयोगविषैं तौ क्रोधादिक नया कर्मनो कर्म नाहीहै यहु-
रि क्रोधादिक कर्मनो कर्मविषै उपयोग नाहीहै ऐसैं इनकै परमार्थस्व
रूप आधार आधेयभाव नाहीहै अपना अपना आधार आधेयभा
व आप आपविषैंहै ऐसैं इनकै परमार्थसैं परस्पर अत्यंतभेद है ऐ
सैं भेदजाणै सोही भेदविज्ञानहै सो भलेप्रकार सिद्ध होयहै ॥ ॥
दोहा॥ ॥ परमातमअरजगतके बडोभेदक्रणसार॥ धर्मदास
आरुंलिषै वांचकरानिरधार॥१॥ जैसैंसूरजतमविषै नहीनहीक्र
णधार॥ तैसैंहीतमकोविषै सूरजनहीरैथीर॥२॥ प्रकाससूर्ययेकहै
जडचेतननहियेक॥ धर्मदाससाचीलिषै मनमैंधारिविवेक॥३॥स्प
र्श ८ रस ५ वर्ण २ गंध २ आत्मानाही जानैं येह स्पर्शादिक पुद्गल
अचेतन जडहै वास्तै आत्माकै अर अचेतन पुद्गलकै भेदहै और शब्द
बंध सूक्ष्मस्थूल संस्थान भेद तम छाया आतप उद्योत येह आत्मा

नाही जानै येह शब्द बंधादिक पुद्गलकी पर्याय है वास्तै आत्माके अर शब्द बंधादिकके भेदहै तन मन धन वचन येह आत्मा नाही तनता मनता वचनता जड़ताजडसै मेल ॥ लघुता गुरुता गमनता येह अजीवका षल ॥ ॥ अर्थात् ॥ ॥ आत्मा अर अजीव नही वास्ते आत्माके अर इन तनमनादिकके भेदहै भावार्थ जैसै सूर्जके प्रकाशके अर अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधाराके अत्यंत भेदहै तैसैही आत्मा अर अनात्माका भेदहै तन मन धन वचन कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै मन बुद्धि चित्त अहंकार अंतःकरण कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै तूं मैं येह वह हूं हूं सोहं येह कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै जोग जुगत जगत लोक अलोक कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै बंध मोक्ष पाप पुन्य कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै जैन बौध्ध बौध नैय्यायिक मिमांसादिक वेदांती कुछ औरहै अर आत्माकुछ और

है तेरापंथ मेरापंथ उसकापंथ इसकापंथ बीसपंथ गुमानपंथ नानक पंथ दादूपंथ कबीरपंथ इत्यादि पंथ येह सर्व येक पृथ्वीके उपर है सो पृथ्वी कुछ औरहै और आत्मा कुछ औरहै जैन मत वाले वैष्णु मत वाले शिव मतवाले वेदांत मत वाले तेरापंथ मतवाले बीसपंथ मत वाले गुमानपंथ मत वाले येह सर्व मत वाले जिस मदकूं पीकर मत वाले भये है सो मद कुछ औरहै और आत्मा कुछ औरहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

भेदज्ञानमें भ्रमगयो नहीं रही कुछ आस ॥ धर्मदास क्षुल्लक लिखे अबतोड मोहकी पास ॥ १ ॥ जैसे सूर्यके प्रकाशामें दीपकका प्रकासप्रसिद्ध है तैसे स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशामें येह सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक प्रसिद्ध भले भावसे पूर्ण प्रस्तुत हो चुकी है १ जैसे अंध भवनमें रतन गिऱ्यो है सो रतन वांछक पुरुष दीपक हस्तमें लेकरिके तिस अंध भवनमें रतनार्थ जावे बहुरि रतन

ह्नीकूं खोजै तो ता पुरुषकूं निश्चयही रतन लाभहोवै तैसैंही येह भरमांधकार मयि भवन जगत संसार है तामे तासें अनन्मयि रतन- त्रय मयि अमोलख रतन गिरयोहै ताकूं कोहू धन्य पुरुष ताको इच्छ क पुरुष इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक कूं ग्रहण करिकै इस भ्रमांधकार नाम संसार भवनमें तिस स्वभाव सम्यक ज्ञान मयि अर रतनत्रयमयि रतनकूं खोजैगो ताकूं निश्चय आपका आपमें- आपमयि स्वभाव सम्यक ज्ञानानुभवकी परमावगाढता अचलहो वै- गो २ कोहू इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तगसें बहुरि इसका सुंदर अक्षर शब्द पद विचारादिकसें आपका आपमें आपमयि स्वभा- व सम्यक ज्ञानहै ताकूं सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयि समजेगो मानैगो- कहैगो ताकूंतो इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तग पढणे बाचणे से स्वभाव सम्यक ज्ञानानुभवकी परमावगाढताकी अचलता नही हो

वैगी १ हां जैसै द्वारमै होकरिकै किसीकुं सूर्य दर्शनका लाभ होताहै तैसेंही किसी मुमुक्षुकुं इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक के द्वारा निश्चय स्वस्वभाव स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यका दर्शण लाभ होवेगा १ येह सम्यक ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तक हम बणाईहै इसमे मूलहेतु मेरा येह हैके स्वयं ज्ञानमयि जीव जिस स्वभावसे तन्मायि है उसी स्वभावकी स्वभावना जीवसै तन्मयि अचल होकु येही हेतु अंतःकरणमे धारण करिके येह पुस्तक बणाई है ५०० पांचसे पुस्तक छापके द्वारा प्रसिद्ध होणेकी सहायताके अर्थ रुपिया १०० येकसौं नो जिल्हा स्याहावाद मुकाम आरा ठिकाणो मरवन लालजीकी कोठीमे बाबू बिमलदासजी की विधवा हमारी चेली द्रौपती देवीने दिया है अर विशेष खरचकी सहायताके अर्थ जिस जिसकुं मेरा वचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक ज्ञानानुभव होणे जोग होचुके ते स्वभाव सम्यक्

त्तानानुभवमे तन्मयिसदाकाल चिरंजीयरहो ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥
श्रीसिद्धसेनमुनिपादपयोजभक्त्या देवेंद्रकीर्त्तिगुरुवाक्यसुधारसे
न ॥ ज्ञानामनिर्विबुधमंडलमंडनेच्छोः श्रीधर्मदासमहतोमहतीविशुद्धा ॥१॥ ॥ इतिश्रीक्षुल्लकब्रह्मचारी धर्मदासरचितसम्यक्
त्तानदीपिकासंपूर्णम ॥ ॥ श्रीअरिहंताणंनमः ॥ ॥ ॥
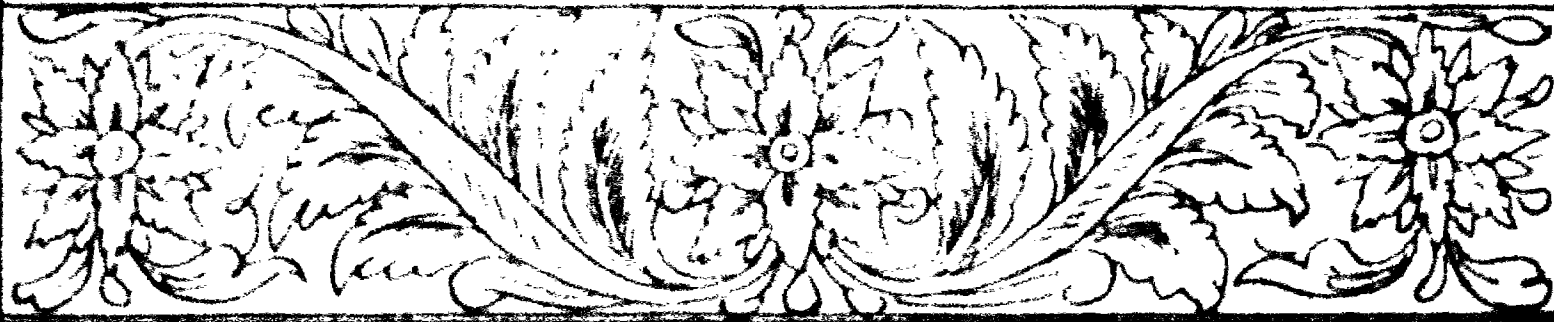
अथब्रह्मरूपीसंवत्सर

अयन २ ऋतु ६ मास १२ पक्ष २४

छप्पै॥ ॥ दोयनयनषट्करणभुजारविसंख्याजाणं॥ पांषानत्तप्रमाणस्याम

वार ७ तिथि १५ नक्षत्र २८ योग २८

अरुश्वेतवषाणं॥ सातसीसदशपंचदशनदोपंक्तीसोहै॥ नरवशिखपंचकईशाक

करण ११ सर्व वर्षकादिन ३६०

रणशिवसंख्यादोहै॥ पंषपंषपतिपंचदशअंबरषट्अनलाचरण॥ श्रीधरताको

देखियेब्रह्मरूपअशरणशरण॥१॥

कुंडलियो॥ ॥ जाकीनिर्मलबुद्धिहै ताकूंसबअनुकूल॥ भूतभविष्यविचारि

येवर्तमानकोमूल॥ वर्तमानकोमूलभूलमेंकबहुनभूलें॥ पदसबशास्त्रपुराणवृथा

हीभ्रममेंफूलै॥ कहतेबलभरामब्रह्महैसाचोसाखी॥ वियासूंसबहोनअगमबुधनिर्मलजाकी

१

यहपुस्तक पंडित श्रीधर शिवलालजीकें ज्ञानसागर छापखानामें क्षुल्लक ब्रह्मचारीधर्मदास
जीनें छपाया· मुंबई· संवत् १९४६ शाके १८११ मिती माघशुक्ल १५ भौमवार·

इति सम्यक्ज्ञानदीपिका समाप्त.